उपन्यास

हार्ट ऑफ डार्कनेस



'हार्ट ऑफ डार्कनेस' के वैचारिक पक्ष में यूरोपी आधुनिकता पर सवाल उठाने के अलावा मानव नियति पर भी गहरा अवलोकन है। सचमुच यह उपन्यास बुनियादी मानव मूल्यों में भले-बुरे, दृश्य-अदृश्य और सही-ग़लत जैसे द्वंद्वों की तलाश का आख्यान है। कोनराड की भाषा में भी अकसर परस्पर विरोधी मूल्यों के द्योतक शब्द इकट्ठे आते हैं। विरोधाभास का अतिरेक अंततः एक खालीपन पैदा करता है। यही साम्राज्यवादी यूरोप के मन में गहरे छाया वह डार्कनेस या अंधकार है, जो दरअसल कई रंगों के साथ पेश आता है। शायद इसी कारण से एलियट ने अपनी कविता की शुरुआत इस उपन्यास से ली गई उक्ति से की है।

उपन्यास में भावनाओं की सबसे अधिक सघनता प्रेम प्रसंगों में दिखती है। इस तरह से इसे एक प्रेम-कथा भी कहा जा सकता है। पर शैली और कथ्य के लिहाज़ से मूलतः यह एक आधुनिक कृति ही है। इसमें आधुनिकता की आलोचना है, पर यह थॉमस हार्डी और दीगर अंग्रेज़ी रोमांटिक उपन्यासकारों से बिलकुल अलग अंदाज़ेबयाँ के नए रूप गढ़ती है। विक्षिप्तता का अनोखा और सोचा-समझा प्रयोग है, जो महज किसी एक व्यक्ति का मनोरोग नहीं, बल्कि अपने समय और समाज की तमाम विकृतियों का प्रतीक है। यह विक्षिप्तता किस अंधकार से जनमती है, वह ख़ुद अंधकार है या अंधकार के प्रति खिंचे जाते इंसान की नियति की वाहक है, ऐसे कई सवाल यह उपन्यास सामने लाता है।



वाग्देवी प्रकाशन
बीकानेर 334003
vagdevibooks@gmail.com
www.vagdeviprakashan.com

₹ 90

9789380441283 00090

अंधकूप ◆ जोसेफ कोनराड ◆ अनुवाद : लाल्टू



अंधकूप

जोसेफ कोनराड



जोसेफ कोनराड
(1857-1924)

वर्तमान उक्रेन में जन्मे पोलिश मूल के जोसेफ कोनराड को बीसवीं सदी के महानतम उपन्यास लेखकों में गिना जाता है। 1886 में उन्हें ब्रिटिश नागरिकता मिली, पर वे खुद को पोलिश ही मानते थे। 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' उनकी सबसे अधिक चर्चित कृति है। अधिकतर उपन्यासों और कहानियों में उन्होंने अपने समुद्री नाविक जीवन के अनुभव का इस्तेमाल किया है। उनके बीस उपन्यासों और इतनी ही कहानियों और कोई दस आलेखों में आधुनिक यूरोपीय सभ्यता और उपनिवेशों के आसन्न संकटों का पूर्वाभास है। कई यूरोपीय भाषाओं में उनकी रचनाओं पर आधारित बीस फिल्में बनी हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' पर आधारित 'एपोकैलिप्स नाऊ' है।

लाल्टू : समकालीन हिंदी साहित्य में चर्चित कवि, कथाकार और चिंतक हैं। पाँच कविता संग्रह, एक कहानी संग्रह के अलावा, बाल साहित्य, नवसाक्षर साहित्य, नाटक, पत्रकारिता, अनुवाद आदि कई क्षेत्रों में सक्रिय हैं। उनका आखिरी कविता संग्रह 'नहा कर नहीं लौटा है बुद्ध' वाग्देवी प्रकाशन से आया है। आई आई आई टी हैदराबाद में विज्ञान के प्रोफेसर हैं।

अनुक्रम

5 भूमिका

13 पहला अध्याय

63 दूसरा अध्याय

105 तीसरा अध्याय

147 कलाकार की बात

अंधकूप

उपन्यास 'हार्ट ऑफ डार्कनेस'

जोसेफ कोनराड

अंग्रेजी से अनुवाद

लाल्टू

वाग्देवी प्रकाशन
विनायक शिखर
पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास
बीकानेर 334003
vagdevibooks@gmail.com
www.vagdeviprakashan.com

प्रथम संस्करण : 2015 ई.
पुनर्मुद्रण : 2017 ई.

आवरण चित्र :
शाना बुल्हान हेडॉक 1990 में चंडीगढ़ में जन्मी अंग्रेज़ी की युवा कवि और चित्रकार हैं। इन दिनों यू एस ए के ऐमहर्स्ट शहर के पास नार्थैम्प्टन इलाके में रहती हैं।

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003 ISBN 978-93-80441-28-3

ANDHKUP (*Novel*) by Joseph Conrad Translated by Laltoo

भूमिका

'मिस्टा' कुर्त्ज़ ही डेड'—टी एस एलियट ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'द हॉलो मेन (खोखले लोग)' की शुरूआत जोसेफ कोनराड के उपन्यास 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' से ली गई इस साधारण सी उक्ति (मिस्टर कुर्त्ज़ गुज़र गया) से की है। कोनराड के अपने शब्दों में— *'यह एक ऐसे पत्रकार के बारे में एक स्वच्छंद कहानी है जो (अफ्रीका के) भीतरी प्रदेश में किसी अड्डे में मैनेजर बन कर जाता है और कबीलाई लोगों का देवता बन जाता है। इस तरह से देखें तो यह ठिठोली सी लगती है, पर ऐसा है नहीं।'** वाकई बीसवीं सदी का श्रेष्ठ कवि उपन्यास के मुख्य चरित्र की मौत की घोषणा को अपनी प्रसिद्ध कविता की प्रस्तावना की तरह कहता है, तो सोचना पड़ता है कि आख़िर उस चरित्र में क्या ऐसी खासियत है।

कोनराड ने कांगो के बेल्जियम के अधीन वाले औपनिवेशिक क्षेत्रों में हो रहे बेइंतहा ज़ुल्म से प्रभावित होकर यह उपन्यास लिखा था। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक तक अफ्रीका महाद्वीप के अंदरूनी इलाक़ों में यूरोपी साम्राज्यों की पैठ बढ़ने लगी थी और हाथीदाँत और दूसरी वन संपदा की बेशुमार लूट हो रही थी। इस लूट के लिए अफ्रीका के मूल निवासियों के साथ जानवरों से भी बदतर सलूक किया जाता था। कोनराड स्वयं एक बेल्जियन स्टीमर के कप्तान रह चुके थे और

* द कलेक्टेड लेटर्स ऑफ जोसेफ कोनराड (द केंब्रिज एडिशन ऑफ द लेटर्स ऑफ जोसेफ कोनराड), केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

उन्होंने समुद्री यात्राओं और नौ-वाहनों के अपने अनुभव का बख़ूबी इस उपन्यास के लिखने में इस्तेमाल किया। इस उपन्यास को पढ़कर यूरोप के उदारवादी हलकों में हलचल मची और उपनिवेशों में बेहतर स्थितियों के पक्ष में सहानुभूति का माहौल बना और कुछ हद तक प्रशासनिक सुधार भी किए गए।

एक भारतीय पाठक के लिए 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' का पहला पाठ उपनिवेशवाद विरोधी होना स्वाभाविक है। अफ्रीकी देशों में भी बीसवीं सदी में यूरोपी साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष भारत के साथ साथ ही चला। अधिकतर अफ्रीकी देश भारत के बाद ही आज़ाद हो पाए, पर साम्राज्यवादी ताक़तों के ख़िलाफ़ यह लड़ाई कई मायनों में साझी थी। अफ्रीकी और एशियाई देशों में आज़ादी की लड़ाई ने परस्पर प्रेरणा ली। आधुनिक यूरोपी साम्राज्य अपने पहले आए साम्राज्यों से कई मायनों में अलग थे, क्योंकि उन्नीसवीं सदी में यूरोप के अधिकतर मुल्कों में औद्योगिक क्रांति का असर दिखने लगा था और पारंपरिक समाज की तुलना में मानव मूल्यों में बड़ी तब्दीलियाँ हो चुकी थीं। पर अफ्रीकी और एशियाई देशों में जीवंत परंपराएँ थीं और इसलिए इन देशों में आज़ादी की लड़ाई को परंपराओं और सभ्यताओं के संघर्ष की तरह भी देखा जाता है। राजनैतिक आज़ादी मिली, पर यूरोप के आधुनिक मूल्यों का वर्चस्व इन देशों में लगातार बढ़ता रहा। आधुनिकता के व्यक्तिवादी और क़ुदरत पर इंसान की जीत के नज़रिए से होने वाले भयंकर दुष्परिणामों को सारी दुनिया के मानववादी चिंतक देख रहे थे। कोनराड उनमें से एक थे।

'हार्ट ऑफ डार्कनेस' के वैचारिक पक्ष में यूरोपी आधुनिकता पर सवाल उठाने के अलावा मानव नियति पर भी गहरा अवलोकन है। सचमुच यह उपन्यास बुनियादी मानव मूल्यों में भले-बुरे, दृश्य-अदृश्य और सही-ग़लत जैसे द्वंद्वों की तलाश का आख्यान है। कोनराड की भाषा में भी अक्सर परस्पर विरोधी मूल्यों के द्योतक शब्द इकट्ठे आते

हैं। विरोधाभास का अतिरेक अंततः एक खालीपन पैदा करता है। यही साम्राज्यवादी यूरोप के मन में गहरे छाया वह डार्कनेस या अंधकार है, जो दरअसल कई रंगों के साथ पेश आता है। शायद इसी कारण से एलियट ने अपनी कविता की शुरूआत इस उपन्यास से ली गई उक्ति से की है।

उपन्यास में भावनाओं की सबसे अधिक सघनता प्रेम प्रसंगों में दिखती है। इस तरह से इसे एक प्रेम कथा भी कहा जा सकता है। पर शैली और कथ्य के लिहाज़ से मूलतः यह एक आधुनिक कृति ही है। इसमें आधुनिकता की आलोचना है, पर यह थॉमस हार्डी और दीगर अंग्रेज़ी रोमांटिक उपन्यासकारों से बिल्कुल अलग अंदाज़ेबयाँ के नए रूप गढ़ती है। विक्षिप्तता का अनोखा और सोचा-समझा प्रयोग है, जो महज किसी एक व्यक्ति का मनोरोग नहीं, बल्कि अपने समय और समाज की तमाम विकृतियों का प्रतीक है। यह विक्षिप्तता किस अंधकार से जनमती है, वह ख़ुद अंधकार है या अंधकार के प्रति खिंचे जाते इंसान की नियति की वाहक है, ऐसे कई सवाल यह उपन्यास सामने लाता है। कुल मिलाकर कोनराड का यह उपन्यास इतने आयामों के साथ बीसवीं सदी की शुरूआत में सामने आया (प्रकाशन 1899 में) कि शायद ही किसी और कृति की तुलना इसके साथ की जा सकती है। संभवतः उपन्यास लेखन में प्रारंभिक आधुनिक कृतियों में इसे सबसे बेहतर माना जाना चाहिए। बाद के साहित्यकारों पर उनका व्यापक प्रभाव पड़ा। बीसवीं सदी के अंग्रेज़ी और दूसरी यूरोपी भाषाओं के सभी बड़े रचनाकारों ने इस बात को स्वीकारा है। इनमें एलियट, लॉरेंस, फित्ज़जेरल्ड, फॉकनर, हेमिंग्वे से लेकर मार्ख़ेज़, नायपॉल और रशदी आदि सभी शामिल हैं। उनकी कृतियों पर आधारित या प्रेरित फिल्में भी काफ़ी प्रसिद्ध हुई हैं। वियतनाम की जंग पर बनी फ्रांसिस फोर्ड कोपोला की प्रसिद्ध फिल्म 'एपोकैलिप्स नाऊ', 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' पर आधारित है। कथानक के स्तर पर उनके लेखन का विषय भले ही यूरोपी साम्राज्य और उपनिवेशों पर केंद्रित और उनके अपने नौ-वाहनों के अनुभवों पर आधारित रहे, उनकी मुख्य और गहरी

चिंता मानव-मन और मूल्यों की गहरी पड़ताल है। उनमें एक ख़ास तरह की दूरदर्शिता थी, जो बाद के समय में और आज भी मानवता और धरती पर छाए घोर संकटों को देखते हुए सार्थक प्रमाणित होती रही है। 1898 में अपने स्कॉट मित्र कनिंघम ग्रेहम को उन्होंने लिखा : 'मानव की त्रासदी उसके क़ुदरत का शिकार होने में नहीं, बल्कि यह है कि हम इस बारे में सचेत हैं। अपनी ग़ुलामी, तकलीफ़ें, आक्रोश, संघर्षों के बारे में जानकारी मिलते ही हमारी त्रासदी शुरू हो जाती है।' पर वह ख़ुद को त्रासदी का लेखक नहीं मानते थे। ऐसे प्रमाण मौजूद हैं कि निजी जीवन में वह अक्सर अवसाद ग्रस्त होते थे। बीस साल की उम्र में क़र्ज़ा न मिटा पाने के गम में ख़ुदकुशी की कोशिश भी की थी।

हिन्दी के पाठकों के लिए 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' का अनुवाद पेश करते हुए हमें ख़ुशी है। कोनराड ने ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया है जो आज या तो उचित नहीं माने जाते या उनके अर्थ बदल गए हैं। गोरों की नज़र में काले लोग हेय थे और 'निगर' शब्द आम प्रचलन में था। हमने इस शब्द को बदला नहीं है। हम 'ब्लैक' के लिए 'अश्वेत' शब्द सही नहीं मानते, क्योंकि इसमें 'श्वेत' को संदर्भ की तरह इस्तेमाल किया जाता है। स्त्रियों के प्रति कोनराड अपने समय के उदारवादियों जैसी ही सीमित समझ दिखलाते हैं। वे हार्डी की परंपरा से एक सीमा तक ही अलग खड़े दिखते हैं। आदर्श स्त्री का मिथ निश्चित रूप से उन पर भी सवार है। किसी भी रचनाकार की तरह कोनराड के अपने पूर्वग्रह हैं और वे उनके लेखन में दिखते हैं। कठिन परिस्थितियों में जीते हुए उनको समझौते भी करने पड़े थे। अपने लेखन में कहीं भी यूरोपी साम्राज्यवाद की आलोचना करते हुए ब्रिटेन की मिसाल नहीं लेते। इसीलिए कुछ आलोचकों ने कोनराड के लेखन पर आपत्ति भी दर्ज़ करवाई। इस अर्थ में 'हार्ट ऑफ डार्कनेस' विवादास्पद भी रहा। 1975 में लिखे अपने आलेख ''ऐन इमेज ऑफ अफ्रीका : रेसिज़्म इन कोनराड'स 'हार्ट ऑफ डार्कनेस'' में प्रसिद्ध नाईजीरियन उपन्यास लेखक चिनुआ आचीबे ने

कोनराड को जन्मजात नस्लवादी कहा। आचीबे का मत है कि यह उपन्यास बड़ी कृति नहीं माना जा सकता, क्योंकि इसमें मानवता के एक हिस्से से उसका व्यक्तित्व छीनकर अमानवीकरण को सराहा गया है। वे कोनराड को प्रतिभाशाली और तड़पता हुआ शख़्स मानते हैं, जो (अपने चरित्र मार्लो के ज़रिए) अफ्रीका के मूल निवासियों को महज 'टाँगें', 'कोण', 'चमकती सफ़ेद आँखों की पुतलियाँ', आदि में संकुचित कर देते हैं। साथ ही वह (डरते हुए) उन मूल निवासियों के साथ अपना एक संबंध भी देख पाते हैं। आचीबे की यह आपत्तियाँ वैसी ही हैं जैसे अक्सर दलित आलोचक प्रेमचंद की रचनाओं में दलित चरित्रों का विवरण आपत्तिजनक मानते हैं। हालाँकि इन आपत्तियों के जवाब आलोचना साहित्य में दिए जाते रहे हैं, इनको हम दरकिनार नहीं कर सकते और इन पर और विवेचन की ज़रूरत रह जाती है। लोकतंत्र के बारे में भी कोनराड का नज़रिया संकीर्ण ही था। इसकी वजह उनका यह मानना था कि मानव के स्वभाव में लालच, धोखेबाज़ी आदि प्रवृत्तियाँ हावी हैं और लोकतंत्र में ऐसे स्वभाव के लोगों के सत्तासीन और ताक़तवर होने की संभावना बढ़ जाती है। पोलैंड और दीगर मुल्कों के बारे में उनके राजनैतिक विचार समय के साथ बदलते रहे, पर उनके मन में आख़िर तक मानव स्वभाव और संगठित राजनैतिक संरचनाओं के बारे में गहरी निराशा भरी समझ बनी रही।

कोनराड जन्म से अंग्रेज़ी भाषा नहीं बोलते थे। वे जन्म से पोलिश भाषी थे। उनका जन्म 1857 में पहले कभी पोलैंड राज्य के अधीन रह चुके, और बाद में रूस के अधीन, आज के यूक्रेन के क्षेत्र में हुआ और शुरूआती परवरिश वहीं हुई। राजनैतिक चेतना उन्हें विरासत में मिली। पिता अपोलो कोर्त्ज़ेनिवोस्की साहित्य और राजनीति में सक्रिय थे।*

* सामान्य जानकारियाँ विकीपीडिया से ली गई हैं (http://en.wikipedia.org/wiki/Joseph_Conrad)

उनके नाम के तीन हिस्सों में से एक 'कोनराड', कवि ऐडम मिकीविक्तज़ की कविताओं के नायकों का नाम है। योसेफ (जोसेफ) नाना का और बीच का नाम त्योडोर दादा का नाम था। रूसी साम्राज्य के ख़िलाफ़ पिता की सक्रियता के कारण परिवार को लगातार एक से दूसरी जगह भागते रहना पड़ा। राजशाही ने उन्हें निष्कासित कर दूर ऐसे इलाक़े में भेज दिया जहाँ मौसम की मार के अलावा ज़मीन भी उपजाऊ न थी। माँ ईवा बॉब्रोव्स्का को बड़ी तकलीफ़ें झेलनी पड़ीं और 1860 में यक्ष्मा से चल बसीं। कोनराड ने भूगोल के अलावा कुछ और पढ़ने-लिखने में रुचि न दिखलाई। उनके मामा ने चिकित्सकों की सलाह पर उन्हें नाविक के काम में लगा दिया ताकि कठिन परिस्थितियों को झेलते हुए अपने त्रासद अतीत और कमज़ोर स्वास्थ्य से उबर सकें। इसके पहले ही कुछ समय फ्रांस में रहकर वे फ्राँसीसी भाषा में पारंगत होने के अलावा थोड़ी बहुत लातिन और ग्रीक भाषाएँ भी सीख चुके थे और औपचारिक शिक्षा में अरुचि के बावजूद भौतिकी, इतिहास और साहित्य में उनकी महारत थी। ऑस्ट्रिया जैसे दीगर मुल्कों में नागरिकता पाने की असफ़ल कोशिश के बाद 1886 में उन्होंने ब्रिटिश नागरिकता प्राप्त की। बीस साल की उम्र के बाद अंग्रेज़ी सीखी। इसलिए उनकी भाषा में अंग्रेज़ों या जन्म से अंग्रेज़ी जानने वालों जैसी स्वाभाविकता नहीं है। पर वे अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने भाषा का ऐसा अनोखा प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है कि उन्नीसवीं सदी के आख़िरी दशक से बीसवीं सदी के आरंभ के अंग्रेज़ी साहित्य में उनकी विशिष्ट पहचान बनी है। बहुभाषी होने के अपने अनुभव को वे उपन्यास के चरित्रों में भाषा के प्रति विविध मनोभावों में प्रकट करते हैं। उनकी शब्दावली विपुल है। हमने अनुवाद में कुछ संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए फुटनोट दिए हैं। आशा है कि इससे पाठकों को सुविधा होगी।

उनके लेखन के बारे में कहते हुए टी ई लॉरेंस लिखते हैं—'गद्य लेखन में उनसे बड़ा तहलका और कोई न था। काश कि मैं जान पाता

कि वे कैसे हर अनुच्छेद में (....वे वाक्य कदाचित ही लिखते, हमेशा अनुच्छेद ही लिखते थे....) लहरों की तरह उमड़ना ले आते हैं, जैसे कोई घंटी बजने के बाद ऊँची ध्वनि तरंगें पैदा कर रही हो। उनका लेखन साधारण गद्य की लय से नहीं, बल्कि उनके दिमाग़ में चल रहे प्रवाह से बनता है; और चूँकि वह कह नहीं पाते कि वह क्या कहना चाहते हैं, इसलिए उनका लिखा हर कुछ एक तरह की भूख में, कुछ न कह पाने या न सोच पाने के संकेत में सिमट जाता है। इसलिए उनकी किताबें अपने वास्तविक आकार से बड़ी दिखती हैं।....' उनके समकालीन आलोचकों ने उनके जटिल और गंभीर आख्यानों और निराशामूलक दृष्टि से पाठकों की विरक्ति की बात कही, पर बाद की पूरी सदी में समूचे विश्व में हुई घटनाओं से उनके लेखन का महत्त्व साफ़ होता गया। इस तरह उन्हें अपने समय के आगे का लेखक भी माना गया है।

आलोचकों का मानना है कि उनकी अंग्रेज़ी पर फ्राँसीसी और पोलिश भाषाओं का गहरा प्रभाव रहा है। स्वयं कोनराड ने अंग्रेज़ी में लिखने को महज सुविधा कह कर दरकिनार किया है। उनका कहना था कि फ्राँसीसी या पोलिश जैसी भाषाओं में लिखने के लिए उन्हें कला और कथ्य दोनों नज़रिए से अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। एक रोचक संदर्भ यह है कि कोनराड के सबसे पहले साहित्यिक अभ्यास उनके ख़तों को माना जाता है जो उन्होंने 1885-86 में भारत में संक्षिप्त आवास के दौरान अपने वरिष्ठ पोलिश साथी योसेफ स्पिरिडियॉन को लिखे थे। इन ख़तों में पोलैंड के बारे में उनकी हताशा और इंग्लैंड में बसने के इरादे की झलक है। उनका एक उपन्यास 'द निगर ऑफ द'नारसिसस'' का कथानक भी मुंबई (बॉम्बे) बंदरगाह से शुरू होता है। इस उपन्यास की भूमिका में साहित्य में कला और प्रतिबद्धता के बारे में उन्होंने लिखा है। हमने इस अनोखे आलेख का अनुवाद भी इस पुस्तक में रखा है। यूरोपी देशों और आधुनिकता के साथ बाद में तीसरी दुनिया कहलाए देशों के

बारे में कोनराड की समझ और दृष्टि भारत पर भी वैसी ही लागू होती है, हालाँकि जिस तरह की क़बीलाई दुनिया से अफ्रीका में उनका रूबरू हुआ था, वैसा भारत में नहीं हुआ था।

कोनराड की मृत्यु 1924 में हुई। उनके जीवन और साहित्यिक काम के बारे में अनगिनत आलेख और किताबें लिखी गई हैं। यूरोप में कई जगह उनकी याद में स्मारक हैं। उनके महत्त्व का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि हाल ही में, 2013 में, रूस के वोलोग्दा शहर में उनकी याद में स्मारक लोकार्पित हुआ—इस शहर में 1862-63 के दौरान उनके परिवार को निष्कासन की सज़ा भुगतते रहना पड़ा था।

अनुवाद की परिकल्पना से लेकर इसे पूरा करने और इसके प्रकाशन में नन्दकिशोर आचार्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। उन्होंने न केवल यह काम सुझाया, साल भर अग्रज की तरह स्नेह और प्रोत्साहन देते रहे और पूरा हो जाने पर दो बार प्रूफ़ पढ़ा और भाषा का परिमार्जन किया। यह अतिशयोक्ति न होगी कि उनके बिना यह काम होना ही नहीं था।

—लाल्टू

हैदराबाद, 2014

पहला अध्याय

समुद्री यात्राओं के लिए बनी, दोनों ओर मस्तूलों से बँधी, हमारी नाव का नाम नेली था। एक झटके से नेली अपने लंगर की ओर मुड़ी और रुक गई। पालों में कोई फड़फड़ाहट नहीं थी। बाढ़ मंद पड़ गई थी और हवा भी तक़रीबन थम गई थी। हमें नदी पर आगे की ओर चलना था, इसलिए अब एक ही विकल्प था कि रुके रहकर ज्वार के उतरने का इंतज़ार किया जाए।

हमारे सामने थेम्स नदी का मुहाना अनंत जलमार्ग-सा फैला हुआ था। सुदूर क्षितिज में समुद्र और आकाश बिना किसी जोड़ के एक-दूसरे में विलीन दिखते थे। सामने दिखते रोशन विस्तार में ज्वार के साथ बहते जा रहे बजरों के तपे हुए पाल सीधे तने खड़े कैनवस के लाल झुंड में शांत खड़े से लगते थे। रोगन लगे मस्तूलों की चमक दिख रही थी। समंदर तक फैले सपाट विलीन होते निचले तटों पर कुहासा फैला हुआ था। ग्रेवसेंड के बंदरगाह पर हवा घनी थी, और पीछे दूर धरती पर सबसे बड़े और महानतम नगर के ऊपर किसी चिंता में शोकातुर-सी खोई-थमी हुई लगती थी।

कंपनियों का निर्देशक हमारा कप्तान और मेज़बान था। वह कमान पर खड़ा समंदर की ओर देख रहा था और हम चार उसकी पीठ को स्नेहपूर्वक ताक रहे थे। पूरी नदी में इस दृश्य की तुलना में ऐसा और कुछ नहीं था जिसमें समंदर की दुनिया की इस झलक का आधा भी दिखता हो। वह ऐसा पायलट लगता था, जिसमें समुद्री नाविक को भरपूर भरोसा

हो सके। यह जानना कठिन था कि उसका काम सामने दिखते रोशन मुहाने में नहीं, बल्कि पीछे के ख़ामोश चिंतामग्न परिवेश में था।

जैसे मैंने पहले कहीं कहा है, हमें समुद्र ने जोड़ा था। लंबे अरसे तक अलग रहने के दौरान हमारे दिलों को एक साथ जोड़े रखने के अलावा इसी बंधन का असर था कि हम एक-दूसरे की कहानियों—और आस्थाओं तक को—सह लेते थे। वकील पुराने दोस्तों में सबसे बढ़कर था; अपने लंबे अनुभवी वर्षों और कई गुणों की वजह से उसी के पास डैक का एकमात्र तकिया था और एकमात्र दरी पर वह लेटा हुआ था। मुनीम डॉमिनो वाला बक्सा निकाल चुका था और गोटियों से खेलते हुए इमारतों जैसी आकृतियाँ बनाने लगा था। मार्लो पैर पर पैर रखे पिछली मस्तूल के दायीं ओर बैठा था। उसके गाल चिपके हुए थे, रंग पीला पड़ गया था, रीढ़ सीधी थी; शक्ल में वैराग्य-सा था और चटकती बाँहों और खुली हथेलियों में वह मूर्ति-सा लग रहा था। निर्देशक को जब संतोष हो गया कि लंगर की पकड़ मजबूत है, तो वह पीछे आकर हमारे साथ बैठ गया। हमने अलसाते हुए उससे गुफ़्तगू की।

इसके बाद नौका पर चुप्पी छा गई। किसी वजह से हम लोगों ने डॉमिनो का खेल शुरू नहीं किया। हम अपने ख़यालों में खो गए; अब हम ध्यान में कहीं एकटक देखते रहने के अलावा और कुछ करने के क़ाबिल न थे। थमी हुई, ख़ामोश और अद्‌भुत दमकती शाम थी। पानी शांत चमक रहा था; आस्मान में कहीं कोई धब्बा न था और वह खुले दिल से साफ़ रोशनी बरसा रहा था। एसेक्स के दलदली इलाक़े पर भीतरी इलाक़ों से उभर कर पतली तहों में लटका हुआ और निचले तटों को ढकता पारदर्शी कुहरा भी चमकते और जालीदार कपड़े सा फैला था। बस पश्चिम की ओर ऊपरी छोरों की तरफ़ चिंतामग्न दिखता मटमैलापन हर कुछ क्षणों बाद और गंभीर-सा होता जा रहा था, जैसे कि सूरज के दिखने से उसे ग़ुस्सा आ रहा हो।

आख़िरकार मानो लोगों की भीड़ पर चिंतामग्न अवसाद की छुअन से मरता, मानो अचानक ही कूच करता हुआ, चौंधियाती सफ़ेदी से फीकी लालिमा में बदलता, किरणें खो चुका निस्ताप सूरज अपनी टेढ़ी ढलान में बिना किसी आभास के डूब चला।

जल्दी ही लहरों पर बदलाव दिखा; चारों ओर फैली शांति की चमक कम, पर और गहरी, हो चली। धरती के अगम छोरों तक पहुँचते मुहाने की शांत गरिमा में फैले तटों पर बसे आदमजात की परम सेवा में युगों बिता कर दिन के अंत में शांत बूढ़ी नदी अपने विस्तार में पसर कर लेट गई। हमने उस गरिमापूर्ण प्रवाह को चिरस्थायी स्मृतियों की पवित्र रोशनी में देखा, न कि उस छोटे से दिन की प्रफुल्लता में, जो आए और हमेशा के लिए गुज़र जाए। जैसी कहावत है, सम्मान और स्नेह के साथ 'समुद्र की पुकार' सुन चुके आदमी के लिए थेम्स के निचले मुहानों पर अतीत के महात्म्य को पढ़ने से आसान सचमुच और कुछ नहीं है। घर के आराम या समंदर की जंगों तक नाविकों और जहाज़ों को ले जाने वाली स्मृतियों से बोझिल लहरों का उफान निरंतर आगे-पीछे बहता रहता है। सर फ्राँसिस ड्रेक से सर जॉन फ्रैंकलिन तक, वे सभी जो नाइट की पदवी से सम्मानित हैं या नहीं भी हैं, राष्ट्र जिन पर गर्व करता है, समुद्र के उन सभी साहसी वीरों को इन लहरों ने जाना है और उनकी ख़िदमत की है। जिसे महामहिम रानी साहिबा देखने आई थीं, उन ख़ज़ानों से भरे-फूले जठर लिए वापस लौटे लंबी किंवदंती बन चुके 'गोल्डेन हाइंड' से लेकर, अन्य विजयों के लिए निकले और कभी न लौटे, 'एरेबस*' और 'टेरर' जैसे सभी जहाज़ों को इस प्रवाह ने ढोया है, जिनके नाम वक़्त की रात में तारों की तरह चमकते हैं। इन लहरों ने उन जहाज़ों को और उन पर सवार

* एरेबस : ग्रीक किंवदंती के अनुसार (और मिल्टन के काव्य 'पैराडाइज़ लॉस्ट' में उल्लिखित) एरेबस वह क्षेत्र है, जहाँ से मृतकों को पाताल-लोक के देवता हेड्स तक पहुँचने के पहले गुज़रना पड़ता है। यहाँ ये नाम समुद्री जहाज़ों के लिए हैं।

लोगों को पहचाना था। ये साहसी खोजी, नई बस्तियाँ बसाने वाले; 'राजाओं' के जहाज़ या सैलानियों के जहाज़; कप्तान, ऐडमिरल, पूर्वी इलाक़ों में व्यापार में शरारती 'घुसपैठिए', ईस्ट इंडिया जाने वाले जहाज़ों पर 'ज़नरलों' के ओहदों पर भेजे जाने वाले इन सब ने डेप्टफोर्ड, ग्रीनिच, ईरिथ आदि बंदरगाहों से कूच किया था। ये सब सोने की तलाश या यश के लोभ में इसी प्रवाह में बह गए थे। उनके हाथों में तलवारें या अक्सर मशालें होती थीं। वे इस धरती की ताक़तवर हुकूमत के संदेशवाहक और पवित्र लपटों की चमक साथ ले जाते हरकारे थे। पुरुषों के सपने, आर्थिक समूहों की कल्पनाएँ और साम्राज्यों के जीवाणु....धरती के अनजान इलाक़ों के अनगिनत रहस्यों में शायद ही कुछ ऐसा महान था जो इस नदी की लहरों पर न तैर चुका हो!

सूरज छिपा; जलधारा पर अँधेरा उतर आया, और तट पर बत्तियाँ जलती दिखने लगीं। मिट्टी के धरातल पर खड़े तिपाए भवन पर चैपमैन प्रकाश घर* से तीख़ी रोशनी आ रही थी। खुले प्रवाह में जहाज़ों की बत्तियाँ चल रही थीं—बत्तियों का बवंडर-सा आगे पीछे आ-जा रहा था। और भी पश्चिम की ओर ऊपरी छोरों पर आस्मान में तारों के नीचे भड़कीली चमक वाली धूप में चिंतामग्न उदासी-सा, भीमकाय शहर का मनहूस धब्बा अभी भी दिख रहा था।

अचानक मार्लो ने कहा, 'और यह भी दुनिया की अँधेरी जगहों में से है।'

हममें से वही एक था जो अब भी 'समुद्र की पुकार' सुन चल पड़ता था। उसके बारे में ज़्यादा से ज़्यादा यही कहा जा सकता था कि वह अपने वर्ग का आदमी न था। वह समुद्री नाविक था, पर वह यायावर

* चैपमैन प्रकाशघर : 1815 में पहली बार निर्मित लोहे से बना प्रकाश-घर, जो गुज़रते जहाज़ों के नाविकों को तट से दूर मिट्टी से बने मकानों के बारे में सूचित करने के लिए था।

भी था, जबकि अधिकतर समुद्री नाविक, अगर ऐसा कहने में हर्ज न हो तो, सुस्त जीवन जीते हैं। उनके दिलों में घर बैठने के ख़याल होते हैं, और उनके घर—यानी जहाज़; और इसी तरह अपना देश—यानी समुद्र भी, हमेशा साथ होते हैं। हर जहाज़ किसी और जहाज़ जैसा ही होता है, और समुद्र तो हमेशा एक-सा होता है। उनके कभी न बदलते परिवेश में विदेशी तट, विदेशी चेहरे, जीवन के व्यापक बदलाव किसी रहस्य के अहसास नहीं, बल्कि अज्ञान से उपजी लापरवाही में छिपे फिसलते से निकल जाते हैं; क्योंकि नाविक के लिए समुद्र के अलावा और कुछ भी रहस्यमय नहीं होता, वही उसके अस्तित्व में उसकी संगिनी और नियति की तरह अकाट्य है। बाक़ी, घंटों मेहनत करने के बाद, तट पर यूँ ही मटरगश्ती या बेफ़िक्र सैर के दौरान पूरे महादेश के राज उसके सामने खुल जाते हैं और आम तौर पर यह जानकारी उसे बेकार लगती है। नाविकों के ज्ञान-तंतु सीधे सपाट होते हैं, चटक फोड़ी मूँगफली के खोल में सारी व्याख्याएँ सिमटी होती हैं। पर मार्लो आम नाविक नहीं था (अगर उसकी धागे बुनने की प्रवृत्ति को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए) और उसके लिए किसी घटना का मतलब उसके अंदर का सार नहीं, बल्कि कहानी को समेटे उसका बाहरी हिस्सा होता था, जो घटना के सार को कुहरा चीरती रोशनी-सा ऐसे निकाल लाता है जैसे कभी-कभी चाँद की सतरंगी चमक के साथ धुँधला प्रभामंडल दिखता है।

उसकी बात में ज़रा भी अनोखापन नहीं लगा। ऐसी बात मार्लो ही कह सकता था। सबने चुपचाप उसे सुना। किसी ने चूँ तक न की; और थोड़ी देर बाद उसने बहुत धीरे से कहा—'मैं उन्नीस सौ साल पहले के उस अतीत की बात सोच रहा था, जब पहले रोमन यहाँ आए—अभी उस दिन....तब से इस नदी में से प्रकाश उभर आया—कैसे पुकारते हैं उन्हें, नाइट्स? हाँ; धरती पर आग की लपटों के दौड़ने जैसा, या बादलों को चीरती बिजली की कौंध-सा। हम उस झिलमिलाहट में जीते हैं—ईश्वर करे कि यह सदियों तक बनी रहे, धरती के घूमते रहने

तक! पर अभी कल तक यहाँ अँधेरा था। भूमध्य सागर में गश्त लगाते बढ़िया—क्या कहते हैं उन्हें?—तिमंज़िला युद्धपोत के उस कमांडर के जज़्बात की सोचो, जिसे अचानक उत्तर की ओर कूच कर जल्दी से स्थल मार्ग से गॉल[1] लोगों पर धावा बोलने का आदेश मिला हो; हमने जो पढ़ा है अगर वो सच है तो एक-दो महीनों में उन सैनिकों द्वारा—वो भी क्या कमाल के कारीगर थे—सैकड़ों की तादाद में बनाए ऐसे ही किसी यान का उसे कप्तान बना दिया हो, उसकी भावनाओं को सोचो। सोचो कि वह यहाँ मौजूद हो—धरती के इस आख़िरी छोर पर, शीशे के रंग के इस समुद्र पर, जहाँ आस्मान धुएँ के रंग-सा दिखता है, ऐसे जहाज़ में जो कंसर्टीना बाजे जैसा सख्त है और इस नदी पर सामग्री लिए या बुलावे पर या और किसी वजह से ऊपर की ओर बढ़ रहा है। चारों ओर रेतीले तट, दलदली ज़मीन, जंगल, जंगली लोग—सभ्य लोगों के खाने के लिए नहीं के बराबर सामग्री, थेम्स के पानी के अलावा पीने को पानी नहीं। कहीं इटली के फालेर्नियस पहाड़ों पर बनती लाजवाब शराब नहीं, तट पर उतरने की कोई संभावना नहीं। यदा-कदा फूस के ढेर में सुई जैसा जंगल में भूला-सा कोई सैन्य शिविर—ठंड, कुहरा, तूफ़ान, बीमारियाँ, प्रवास और मौत—हवा में, पानी में, झाड़ियों में मँडराती हुई मौत। निश्चित ही वे यहाँ मक्खियों की तरह मर रहे थे। जी हाँ—ऐसे में उसने कर दिखाया। और जो किया, बेशक, उम्दा किया, और बिना सोचे-जाने, बस इतना कि बाद में कभी उसने अपने वक़्तों में गुज़ारे तजुर्बों का फ़ख़्र के साथ बयाँ किया हो, शायद। अँधेरे से जूझने की मर्दानगी उनमें थी। और अगर रोम में उसके शुभचिंतक मित्र रहे हों तो बदहवास मौसम से बच निकलने पर देर-सबेर रावेना[2] की जहाज़रानी में बेहतर औहदा

1. लौह युग से रोमन युग तक पश्चिमी यूरोप के गॉल प्रदेश के निवासी।

2. रावेना : एड्रिएटिक सागर के पास उत्तर-पूर्व इटली का शहर, जो रोमन साम्राज्य के दिनों में बड़ा सामरिक बंदरगाह था।

पाने की उम्मीद से उसे उत्साह मिलता हो। या टोगा* पहने किसी भले युवा नागरिक की कल्पना करो—जो शायद जुए में ज़्यादा ही लिप्त है, है न—जो कि अपनी क़िस्मत फेरने के लिए किसी कोतवाल या कर अधिकारी या कि किसी सौदागर के मातहतों में शामिल यहाँ आया हो। दलदल में उतर कर जंगलों से गुज़रते हुए, सोचो कि किसी भीतरी खेमे में वह चारों ओर ख़ुँख़ार हिंसक स्थितियों से घिर गया—जैसा वनों, जंगलों में रहस्यमय बीहड़पन होता है, जो ख़ुँख़ार लोगों के दिलों में होता है। ऐसा भी नहीं कि ऐसी खौफ़नाक स्थितियों का कोई अनुभव पहले से रहा हो। अकल्पनीय और साथ ही घिनौनी स्थितियों में ही उसे रहना है। और इस स्थिति में रोमांच भी है, जो उसे प्रभावित करता है। जुगुप्सा के प्रति आकर्षण—समझते ही हो। अपने निर्णयों पर बढ़ता हुआ अफ़सोस—वहाँ से भाग निकलने की तड़प, असह्य घृणा, स्थितियों से हार मान लेना, नफ़रत, इनकी कल्पना करो।'

वह रुका।

'ध्यान रखो,' कुहनी से बाँह हटाते हुए हथेली को बाहर की ओर फैला कर अपने पैरों को सामने मोड़े हुए, ताकि वह यूरोपी पोशाक वाले बिना कमल के फूल की बुद्ध-मुद्रा में दिखे, उसने फिर कहना शुरू किया—'ध्यान रखो, हममें से किसी को भी ठीक ऐसा अहसास नहीं हो सकता। दक्षता—दक्षता के प्रति हमारा समर्पण हमें बचा लेता है। पर सचमुच इन लोगों के बारे में कहने को कोई ख़ास बात नहीं। ये बस्ती बसाने वाले नहीं थे; मेरा ख़याल है कि उनकी हुकूमत महज दबाव डालने वाली थी। वे जंग जीतने वाले थे, और इसके लिए महज ताक़त की ज़रूरत होती है—इसका होना कोई सीना पीटने लायक़ बात नहीं, क्योंकि किसी का ताक़तवर होना दूसरों की कमज़ोरी से उपजा महज संयोग होता है। जो कुछ भी मिलता, महज लूटने के लिए वे उसे लूट

* टोगा : प्राचीन रोम में पुरुषों का उत्तरीय।

लेते थे। यह बस हिंसा और डकैती थी, बड़े पैमाने पर क़त्लेआम—जैसा कि अँधेरे के साथ जूझने वालों के लिए बिल्कुल ठीक ही है। ज़मीं फ़तह करने का मतलब ज़्यादातर अपने से अलग शक्ल के या अधिक चपटी नाक वालों से इसे छीन लेना होता है और इस बारे में अगर हम सोचने लगें तो यह कोई बढ़िया बात नहीं लगेगी। इससे बचने के लिए सिर्फ़ विचार पर ध्यान देना चाहिए। इसके पीछे जो विचार है; कोई भावुक पाखंड नहीं, महज विचार; और उस विचार में निःस्वार्थ आस्था—वह कुछ जो हम गढ़ सकते हैं, जिसके सामने झुक सकते हैं, और जिस पर बलि चढ़ा सकते हैं....।'

उसने अपनी बात रोकी। नदी में लपटें फिसलती जा रही थीं, छोटी हरी लपटें, लाल लपटें, सफ़ेद लपटें, एक-दूसरे का पीछा करतीं, एक-दूसरे को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जातीं, परस्पर जुड़ जातीं—फिर धीरे या जल्दी से अलग हो जातीं। बेनींद नदी पर महानगर का परिवहन गहराती रात तक बेरोक चलता रहा। हम धीरज के साथ देखते हुए इंतज़ार करते रहे, ज्वार उतरने तक इसके अलावा करने को कुछ न था; पर एक लंबी चुप्पी के बाद ही जब उसने हिचकती आवाज़ में मुँह खोला, 'तुम लोगों को तो पता ही होगा कि एक बार कुछ समय के लिए मैंने नदी के नाविक का काम किया था,' कि हमें समझ में आ गया कि भाटा आने के पहले हमारी क़िस्मत में मार्लो के अधूरे तजुर्बों की एक कहानी सुनना लिखा है।

उसने शुरू किया, 'जो कुछ मेरे अपने साथ हुआ, वह सुनाकर मैं तुम्हें तंग करना नहीं चाहता।'

उसकी इस बात से दिख रहा था कि उसमें भी वह कमज़ोरी थी जो कई कथा सुनाने वालों में होती है कि श्रोताओं की रुचि जिस बात को सुनने में सबसे ज़्यादा है, वे अक्सर उस बात से अनजान होते हैं।

'पर इस बात का मुझ पर जो प्रभाव हुआ, उसे समझने के लिए तुम्हें जानना होगा कि मैं वहाँ क्यूँकर गया, मैंने क्या देखा, मैं उस जगह तक

पहली बार कैसे गया जहाँ मैं उस बेचारे से पहली बार मिला। अपनी नाविक की ज़िंदगी में यह मेरी सबसे दूर की यात्रा और मेरे अनुभव की पराकाष्ठा थी। ऐसा लगता था कि इस तजुर्बे ने मेरे इर्द-गिर्द हर चीज़ पर—और मेरे ख़यालों पर रोशनी डाल दी है। उसमें पर्याप्त गंभीरता भी थी—और कातरता—किसी भी तरह की असाधारणता नहीं थी—स्पष्टता भी नहीं थी। न, स्पष्टता बिल्कुल नहीं थी। फिर भी उसमें से रोशनी फैलती थी।

अगर तुम्हें याद हो, उन दिनों मैं पूरब के नियमित चक्कर—कोई छः साल—हिंद महासागर, प्रशांत महासागर और चीन की खाड़ी की लंबी सैर—के बाद लौटा ही था, और मैं तुम लोगों के काम में अड़चन डालता और तुम्हारे घरों में धावा बोलता मटरगश्ती कर रहा था, जैसे कि मैंने तुम्हें सभ्य बनाने का दैवी ठेका लिया हुआ था। कुछ वक़्त तक सब ठीक चलता रहा, पर थोड़े दिनों बाद मैं आराम से ऊब गया था। फिर मैं किसी जहाज़ की तलाश करने लगा जो मेरे ख़याल में दुनिया का सबसे कठिन काम है। पर जहाज़ मेरी ओर देखते तक नहीं थे। और इस खेल से भी मैं ऊब गया।

जब मैं छोटा बच्चा था, नक़्शों में मेरी दिलचस्पी थी। मैं कई घंटों तक दक्षिण अमेरिका, या अफ्रीका, या ऑस्ट्रेलिया को देखता रहता और खोज के उल्लास में खो जाता। उस ज़माने में धरती पर कई खाली जगहें थीं, और जब मुझे ऐसी जगह दिखती जो ख़ास तौर पर मन को खींचती (पर वे सभी वैसी ही दिखती हैं), तो मैं उस पर उँगली रख देता और कहता कि बड़ा होकर मैं यहाँ जाऊँगा। मुझे याद है, कि उत्तरी ध्रुव उन जगहों में से एक था। ठीक है, मैं अभी तक वहाँ गया नहीं हूँ और अब कभी जाने की भी कोशिश भी नहीं करूँगा। उसका आकर्षण ख़त्म हो गया है। दीगर जगहें भूमध्य रेखा के आर-पार और दोनों गोलार्द्ध पर कई देशांतरों में बिखरी हुई थीं। इनमें से कुछ में मैं गया हूँ, और....खैर

छोड़ो। पर एक ऐसी भी जगह थी—सबसे बड़ी, एक तरह से बिल्कुल खाली—जिसके लिए मन तड़पता था।

सही है कि मेरे जाने तक वह खाली नहीं रह गई थी। मेरे बड़े होने तक वहाँ नदियाँ, झील और दीगर नाम भर आए थे। अब वह आनंद देने वाले रहस्यों भरी खाली जगह—ऐसा सफ़ेद टुकड़ा जिसे देख एक किशोर सुख भरे सपने पालता रहे—नहीं रह गई थी। वह अंधकार वाली जगह बन गई थी। पर इसमें नक़्शे में दिखती एक ख़ास बड़ी लंबी नदी बची हुई थी, जो ऐसे एक बहुत बड़े कुंडली खोले सीधे साँप जैसी दिखती थी, जिसका सिर नदी में छिपा और शरीर ज़मीन के विस्तार में दूर तक बलखाता हो, और पूँछ ज़मीन की गहराइयों में खो गई हो। और जब मैंने एक दूकान की खिड़की में इसके नक़्शे को देखा, तो मैं उसे देखकर यूँ मोहित हुआ जैसे किसी पक्षी—निहायत एक छोटे पक्षी को देखकर साँप मोहित हो जाता है। फिर मुझे याद आया कि उस नदी के ज़रिए अपना धंधा चलाने वाली एक बड़ी कंपनी है। धत् तेरे की! मैंने ख़ुद से कहा, व्यापार चलाने के लिए वे कोई तो वाहन इस्तेमाल करते ही होंगे—भाप वाली नौकाएँ—स्टीमबोट! मैं क्यों नहीं ऐसी नाव चलाने का काम ले लेता। मैं फ्लीट स्ट्रीट* पर चलता चला, पर वह ख़याल मेरे दिमाग़ से नहीं उतरा। साँप ने मुझे वश कर लिया था।

तुम समझ ही रहे होगे कि यह व्यापार निगम, यूरोपी मुख्यभूमि कांटिनेंट की कंपनी थी; पर कांटिनेंट में मेरे कई संबंधी रहते हैं, क्योंकि, वे कहते हैं कि वहाँ रहना सस्ता है और इतना बुरा नहीं जितना कि लगता है।

---

*फ्लीट स्ट्रीट : भूतल के नीचे से बहती लंदन शहर की सबसे बड़ी नदी फ्लीट के नाम पर बनी सदियों पुरानी सड़क। अस्सी के दशक तक ब्रिटेन के राष्ट्रीय अख़बार यहीं से छपते थे। आज भी इसके नाम को ब्रिटिश प्रेस के लिए मुहावरे की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

मुझे अफ़सोस के साथ मानना पड़ेगा कि मैं उनकी परेशानी का सबब बनने लगा था। यह मेरे लिए एक और बढ़िया मौक़ा था। क्या कहें, मुझे इस तरह की अड़चनों की आदत नहीं थी। जहाँ मेरा दिल मुझे ले चला, मैं हमेशा अपनी राहों पर और अपने पैरों चला। सोचो कि मैंने किसी भी तरह वहाँ पहुँचने के लिए हर तिकड़म को वाज़िब माना—मैं ख़ुद अपने बारे में ऐसा नहीं सोच पाता था। इसलिए उनको मेरे बारे में चिंता थी। मर्दों ने कहा, 'प्यारे भाई,' और कोई मदद न की। फिर—तुम मानोगे?—मैंने औरतों पर डोरे डाले। मैं—चार्ली मार्लो—काम पाने में सफलता के लिए औरतों की मदद लेने लगा। हे प्रभु! क्या बतलाएँ, उस ख़याल ने मुझे वश कर रखा था। मेरी एक मौसी थी, बड़ी हौसले वाली भली मानुष। उसने लिखा : 'बड़ी ख़ुशी की बात है। तुम्हारे लिए मैं कुछ भी, कुछ भी करने को तैयार हूँ। बहुत बढ़िया विचार है। प्रशासन में बड़े ओहदे पर एक आदमी की, जिसका काफ़ी प्रभाव भी है, पत्नी को मैं जानती हूँ,' आदि। अगर मेरी इच्छा यही थी कि मुझे स्टीमबोट के कप्तान की नौकरी मिले, तो इसके लिए हर कोशिश करने का उसने बीड़ा उठा लिया।

नौकरी तो मुझे मिलनी ही थी; और बड़ी जल्दी मिली। कंपनी को ख़बर आई थी कि उनका कोई कप्तान कहीं स्थानीय लोगों से मारपीट में मारा गया था। यही मेरा मौक़ा था और मैं जाने के लिए और बेचैन हो गया। बाद में कई-एक महीनों के बाद जब मैंने मृतक के अवशेष ढूँढ़ निकालने की कोशिश की, तभी जाना कि झगड़े की शुरूआत कुछ मुर्गियों के बारे में ग़लतफ़हमी से हुई थी। हाँ, दो काली मुर्गियों से। वह डेनमार्क से आया फ्रेसलेवेन नाम का एक बंदा था—उसे लगा कि उसे मोलभाव में लूटा गया है, तो वह तट पर गया और गाँव के मुखिए को उसने छड़ी से पीटना शुरू किया। यह सुनकर और साथ ही यह बतलाए जाने पर कि फ्रेसलेवेन दो पैरों पर चलने वाला दुनिया का

सबसे नम्र, शांत प्राणी था, मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। बेशक वह ऐसा ही था; पर अपने महान कार्य में वह कुछ वर्षों से वहाँ जुटा हुआ था और आख़िरकार शायद उसे यह ज़रूरत महसूस हुई होगी कि किसी तरह अपना आत्म-सम्मान प्रकट करे। इसलिए उसने उस बूढ़े निगर को उसके अपने तमाम लोगों की स्तब्ध आँखों के सामने बेरहमी से पीटा, जब तक कि बुड्ढ़े की चीत्कार सुनकर एक बंदे से रहा न गया। मैंने सुना कि वह मुखिया का बेटा था। उसने आज़माइशी तौर पर गोरे पर बर्छी से चोट की—और वह तो कंधों को चीरती आसानी से धँस ही गई। उसके बाद वे सारे लोग इस डर से कि अब भयानक घटनाएँ हो सकती हैं, जंगलों में भाग गए, वहीं दूसरी ओर, मेरी समझ से, फ्रेसलेवेन के अधीन वाला स्टीमर भी इंजीनियर के संचालन में घबरा कर भागा। इसके बाद जब तक कि मैंने जाकर उसकी जगह भार न सँभाला, किसी ने फ्रेसलेवेन के अवशेष को सँभालने की ख़बर न ली। मैं यूँ ही इसे छोड़ नहीं सकता था; पर जब अपने पूर्वाधिकारी से मिलने का मौक़ा मुझे मिला तो उसकी पसलियों पर से उगी घास हड्डियों को छिपाने लायक़ लंबी हो चुकी थी। वे सारी वहीं थीं। मरने के बाद उस अलौकिक सत्ता को छुआ तक न गया था। और गाँव खाली हो गया था; ध्वंस हो चुके क्षेत्र में बिखरी हुई काली, सड़ रही झोपड़ियाँ फटी आँखों से देख रही थीं। बेशक वहाँ कोई दुर्योग घटित हुआ था। लोग ग़ायब थे। वे सभी मर्द, औरत, और बच्चे भयावह आतंक से इधर-उधर भाग गए और फिर वापस नहीं आए थे। मुझे यह भी नहीं मालूम कि उन मुर्गियों का क्या हुआ। वैसे मेरे ख़याल में वे किसी तरह विकास के मक़सद में खो गईं। पर इस महान घटना की वजह से मुझे उम्मीद से पहले ही भेंट के लिए बुलावा आ गया।

मैं पागलों की तरह तैयारी में जुट गया, और अड़तालीस घंटे भी नहीं हुए थे कि अपने होने वाले मालिकों के साथ मिलकर नियुक्ति के मसौदे पर हस्ताक्षर करने के लिए मैं चैनल पार करने चला। बस, कुछ ही घंटों में मैं उस शहर में पहुँच गया जिसे देखकर मुझे हमेशा सफ़ेद

मक़बरा-सा याद आता है। बेशक यह एक पूर्वग्रह है। कंपनी के दफ़्तर ढूँढ़ने में मुझे कोई दिक्कत न हुई। वह शहर का सबसे बड़ा इदारा था। मैं जिससे भी मिलता, हर कोई उसी के बारे में बातें करता हुआ होता। वे लोग समुद्रों के पार साम्राज्य बनाने और व्यापार से बेइंतहा धन कमाने चले थे।

गहरी छायाओं, ऊँचे मकानों, झिलमिलदार चिक लगी विशाल खिड़कियों, मुर्दा शांति, पत्थरों के बीच उगती घास, दाएँ-बाएँ ताँगों के चलने के लिए तोरणपथ, कुछ सोचते से हुए खुले विशाल दरवाज़ों के जोड़ों वाली पतली और वीरान गली। ऐसी एक दरार में से मैं फिसलता सा निकला, साफ़ और बेरौनक रेगिस्तान जैसी सूखी सीढ़ियों पर चढ़ता चला और जो पहला दरवाज़ा दिखा, उसे खोलकर अंदर घुस गया। एक मोटी और एक दुबली, दो स्त्रियाँ, पुआल की बनी सीट वाली कुर्सियों पर बैठीं काला ऊन बुन रही थीं। दुबली वाली उठ कर सीधे मेरी ओर आई—वह अब भी नीचे की ओर आँखें झुकाकर बुनती जा रही थी। ठीक जब मैं उसके रास्ते से हटने की कोशिश में था, जैसे नींद में चल रहे किसी के लिए हम हट जाते हैं, वह रुक गई और उसने नज़रें ऊपर कीं। उसने छतरी की चादर जैसे सादे कपड़े पहने हुए थे। बिना कुछ कहे वह मुड़ी और मेरे सामने चलते हुए मुझे एक प्रतीक्षालय में ले गई। मैंने अपना नाम बतलाया और चारों ओर देखा।

बीच में ताश खेलने की मेज़, चारों दीवारों के पास सामान्य क़िस्म की कुर्सियाँ, एक ओर एक चमकता हुआ बड़ा नक़्शा, जिसमें इंद्रधनुष के सभी रंगों के चिह्न लगे हुए थे। लाल रंग की भरमार थी, जिसे देख कर हर वक़्त अच्छा लगता है क्योंकि इससे पता चलता है कि यहाँ ठोस काम हो रहा है; बहुतेरे नीले और थोड़े से हरे रंग, साथ में नारंगी धब्बों वाली ताश की गड्डी, और पूर्वी छोर पर, बैंगनी छाप, जिससे यह पता चलता था कि यहाँ तरक्की के पथ पर अलमस्त अग्रणी लोग लेगर

बीअर के मस्त घूँट चढ़ाते हैं। पर मैं इन चक्करों में पड़ने वाला नहीं था। मैं बिल्कुल केंद्र में पीले रंग की ओर बढ़ रहा था। और वहाँ साँप जैसी—मारक—मोहक—नदी थी। उफ! दरवाज़ा खुला, सफ़ेद बालों वाली सेक्रेटरी जैसी, पर हमदर्दी भरी नज़रों वाली शक्ल दिखी और एक दुबली तर्जनी ने मुझे अंदर वाले ख़ास कमरे में आने का आमंत्रण करते हुए संकेत किया। अंदर प्रकाश धुँधला था, और ठीक बीच में एक लिखने की मेज़ पड़ी हुई था। इस ठोस वस्तु के पीछे से फ्रॉक-कोट पहने एक फीके ज़र्द मांसल आकार का आभास हुआ। वह साक्षात महामानव स्वयं। मेरे हिसाब से उसका कद पाँच फीट छः का था। बढ़ते ही जा रहे करोड़ों के धन का आख़िरी नियंत्रण उसके हाथों में था। उसने मुझसे हाथ मिलाए, मुझे लगा कुछ बिड़बिड़ाया और मेरे फ्राँसीसी भाषा बोलने से संतुष्ट हुआ। *शुभ यात्रा।*

क़रीब पैंतालीस सेकंड में मैं वापस प्रतीक्षालय में उस नर्मदिल सेक्रेटरी के साथ था। उसने बड़ी सहानुभूति और चिंता के साथ मुझसे कुछ काग़ज़ात पर हस्ताक्षर करवाए। मेरे ख़याल में अन्य बातों के अलावा मैंने व्यापार से जुड़े तथ्यों को दूसरों से साझा न करने का लिखित वादा भी किया। और मुझे साझा करना भी नहीं है।

मैं बेचैन-सा होने लगा। तुम्हें तो पता है कि मैं ऐसी रस्मों का आदी नहीं हूँ, और माहौल में कुछ मनहूसियत-सी थी। ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी षड्यंत्र का शिकार था—पता नहीं—कुछ गड़बड़-सी थी; और मैं वहाँ से निकला तो बचा। बाहरी कमरे में वही दो औरतें बेचैनी से काला ऊन बुन रही थीं। लोग आ रहे थे और कम उम्र वाली महिला सब को मिलवाने में आगे-पीछे आ जा रही थी। बड़ी वाली कुर्सी पर बैठी रही। उसकी कपड़े की सादी चप्पलें पैरों को ग़र्म रखने वाले अलाव के पास रखी थीं और एक बिलाव उसकी गोद में आराम कर रहा था। उसके सिर पर कलफ लगा कपड़ा था, गाल

पर मस्सा दिख रहा था और नाक पर चाँदी की फ्रेम वाली ऐनक टँगी थी। ऐनक के ऊपर से उसने मेरी ओर देखा। उस नज़र की तेज़ी और शांत उदासीनता मुझे परेशान कर रही थी। बेवकूफ़ और हँसमिजाज़ दिखते दो युवकों को आगे ले जाया जा रहा था और उसने उनकी ओर भी तेज़ी से वैसी ही उदासीनता भरी समझदारी की नज़र डाली। लग रहा था जैसे उसे उनके बारे में और मेरे बारे में भी सबकुछ मालूम था। मुझे घबराहट होने लगी। वह रहस्यमय और घातक क़िस्म की सी लगी। बाद में जब मैं दूर जा चुका था, मैं अक्सर उन दोनों के बारे में सोचता, जो मानो जनाज़े में जाने के लिए पहनने वाले ग़र्म कपड़े के लिए काला ऊन कातती हुई अंधकार के दरवाज़ों पर पहरा दे रही थीं। एक तो लगातार अनजान लोगों का परिचय किसी अज्ञात से करवाती और दूसरी हँसमुख बेवकूफ़ लोगों पर उदासीन बूढ़ी नज़रें फेंकती रहती। काला ऊन कातने वाली बुढ़िया, हम जो मरने के लिए तैयार हैं, तुम्हें सलाम करते हैं, हम तुम पर सदके जाएँ। उसकी नज़रों में आए अधिकतर लोगों ने उसको दुबारा कभी नहीं देखा होगा—आधे ने भी नहीं। सवाल ही नहीं उठता।

अभी डॉक्टर को दिखलाना बाक़ी था। 'बस एक औपचारिक ज़रूरत,' सेक्रेटरी ने आश्वस्त करते हुए कहा। ऐसा कहते हुए उसकी भंगिमा ऐसी थी जैसे मेरी तकलीफ़ों में उसकी बड़ी भागीदारी हो। फिर, बाँयी भौंहों तक टोपी चढ़ाए, शायद कोई क्लर्क ऊपर कहीं से आया—हालाँकि वह घर तो मृतकों का घर लगता था, पर व्यवसाय में क्लर्क तो होंगे ही—और वह मुझे आगे ले चला। वह गंदा और बेफ़िक्र-सा दिख रहा था और उसकी जैकट पर स्याही के धब्बे लगे थे। उसने पुराने जूतों के अँगूठे जैसी ठुड्डी के नीचे गले में बड़ी सीं फूली हुई टाई पहनी हुई थी। अभी डॉक्टर से मिलने में देर थी, इसलिए मैंने उसे जाम का न्यौता दिया, तो उसका सलूक ज़रा दोस्ताना हो गया। वर्मूथ शराब पीते हुए उसने

कंपनी के व्यापार के गुण गाए। फिर धीरे-धीरे मैंने इस बात पर अचंभा प्रकट किया कि वह यात्राओं पर क्यों नहीं जाता। वह बहुत ठंडा पड़ गया और तुरंत गंभीर हो गया।

'मैं उतना बेवकूफ़ नहीं, जितना कि दिखता हूँ, अफलातून ने अपने शिष्यों से कहा था', उसने बड़ी गंभीरता से कहा। पूरा दम भरकर उसने अपना जाम पिया और हम उठ खड़े हुए।

बूढ़े डॉक्टर ने मेरी नब्ज देखी, लगा जैसे कि वह किसी और ख़याली दुनिया में खोया हुआ था।

'बढ़िया, वहाँ के लिए बढ़िया है,' वह बड़बड़ाया, और फिर बड़ी उत्कंठा के साथ उसने पूछा कि मैं उसे अपने माथे का नाप लेने दूँ। ज़रा आश्चर्य के साथ मैंने हाँ कहा, तो वह कैलिपर्स (सूक्ष्ममापी) निकाल लाया। फिर आगे पीछे, हर ओर से माप लेते हुए उसने बड़ी सावधानी के साथ आँकड़े दर्ज़ किए। वह कद का छोटा था, उसने दाढ़ी नहीं बनाई थी, मोटे सूत का फटा-पुराना कोट पहना हुआ था। उसके पैरों में चप्पलें थीं। मुझे वह निहायत ही नादान-सा लगा। वह बोला, 'विज्ञान के हित में, उन इलाक़ों में जाने वाले हर किसी से मैं इजाज़त लेता हूँ कि मैं उनकी खोपड़ी का माप ले सकूँ।'

मैंने पूछा, 'उनके लौट आने पर भी माप लेते हैं क्या?' उसका जवाब था, 'वे फिर कभी दिखते ही नहीं, यह भी है कि बदलाव तो दरअसल अंदर होते हैं।' वह ऐसे मुस्कराया जैसे मन ही मन कोई चुटकुला सुनाया हो।

'तो तुम भी वहाँ जा रहे हो, ख्याति भी और मज़ा भी!' उसकी नज़रें मुझमें कुछ ढूँढ़ रही थीं और उसने कुछ और लिखा।

'तुम्हारे परिवार में पागलपन का कोई वाक़या हुआ है क्या?' उसने सामान्य सादी-सी आवाज़ में पूछा।

मुझे बड़ा-ग़ुस्सा आया। 'यह सवाल भी क्या विज्ञान के हित में किया जा रहा है?'

'हाँ, ऐसा ही है,' मेरी चिढ़ को नज़रअंदाज़ करते हुए वह बोला, 'वैसे विज्ञान की दृष्टि से घटनास्थल पर ही व्यक्तियों की मानसिक स्थिति का जायज़ा लेना रोचक होगा, पर....'

मैंने उसे रोकते हुए पूछा, 'आप क्या मनश्चिकित्सक हैं?' उस मौलिक चिंतक ने बेझिझक जवाब दिया, 'हर डॉक्टर को—थोड़ा बहुत होना चाहिए। आप जो सज्जन वहाँ जाते हैं, उन्हें मेरे एक सामान्य से सिद्धांत को प्रमाणित करने में मेरी मदद करनी चाहिए। मुल्क को उन इलाक़ों से जो ख़ज़ाना मिल रहा है, उसमें यह मेरा छोटा-सा हिस्सा होगा। धन चाहे दूसरे ले जाएँ। मेरे सवालों का बुरा मत मानें, पर आप मेरे निरीक्षण में आए पहले अंग्रेज़ हैं....'

मैंने तुरत उसे समझाया कि हर अंग्रेज़ मेरी तरह का नहीं होता। मैंने कहा, 'अगर मैं ऐसा होता, तो मैं आपके साथ यूँ बातें न कर रहा होता।'

'आपने बड़ी मुद्दे की बात की है और शायद ग़लत।' उसने हँसते हुए कहा, 'धूप में जितना जाना हो उससे ज़्यादा नुक्सान पहुँचाने से बचना, आदियू (अलविदा)। तुम अंग्रेज़ों की ज़ुबान में कहें, क्यों? गुड-बाई। आह! गुड-बाई। अलविदा। उष्ण प्रदेशों में हर किसी को सबसे अधिक शांत रहने की कोशिश करनी चाहिए'....उसने चेतावनी की मुद्रा में तर्जनी उठाई.... 'शांत रहना, शांत रहना। आदियू।'

एक और बात रह गई थी—मेरी लाजवाब मौसी को अलविदा कहना था। वह बहुत ख़ुश थी। मैंने उनके साथ चाय पी—और लंबे समय तक ऐसी बढ़िया चाय मुझे न मिलनी थी—और एक ऐसे कमरे में जो देखने में एक कुलीन महिला की बैठक जैसा ही आरामदेह था। हमने अलाव के पास बैठकर लंबी सुकून भरी गुफ़्तगू की। इस बातचीत से मैं स्पष्ट जान पाया कि मेरे बारे में उस उच्च अधिकारी की पत्नी और न जाने किन-किन लोगों

से ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया था कि मुझमें कमाल की क़ाबिलीयत है—मेरा आना कंपनी के लिए ऐसी क़िस्मत की बात होगी—ऐसा आदमी हर दिन पकड़ में नहीं आता। प्रभु रक्षा करें! मैं तो बस नदी में भाप से चलने वाली एक आम चवन्नी-अठन्नी छाप नौका का भार लेने वाला था, जिसमें साधारण सी चवन्नी-छाप सीटी बजती थी। पर बात यह निकली कि मैं कोई हुनरमंद कारीगर था। मानो मैं अँधेरी दुनिया में रोशनी ले जाने वाला छोटा-मोटा संत था। उन्हीं दिनों अख़बारों में बहुत सारी ऐसी बकवास छप रही थी और वह नफ़ीस महिला इन ऊल-जलूल बातों के बीच जीते हुए उनसे प्रभावित हो गई थी। यक़ीन मानो, जब तक कि मैं बेचैन न होने लगा, वह मुझे समझाती रही कि 'उन करोड़ों अज्ञानी लोगों को उनके जघन्य तौर-तरीक़ों से निकालना है'। मैंने संकेत करने की हिम्मत की कि कंपनी तो मुनाफ़ा कमाने में लगी है।

उसने जोश के साथ कहा, 'प्यारे चार्ली, हम भूल जाते हैं कि कामगार को उसका मेहनताना तो मिलना ही चाहिए।'

यह कमाल ही है कि स्त्रियों को सचाई का कितना कम पता होता है। वे अपनी एक ऐसी दुनिया में जीती हैं, जो न कभी हुई है, न होगी। वह एक बड़ी ख़ूबसूरत दुनिया है और अगर ऐसी दुनिया सचमुच बनाई जाती तो पहले ही सूर्यास्त से पहले ही वह ख़त्म हो गई होती। सृष्टि की शुरूआत से हम मर्दों की जानकारी में रही कोई गड़बड़ बात सामने आएगी और उस समूची दुनिया को उलट डालेगी।

इसके बाद उसने मुझे गले से लगाया, मुझे ग़र्म कपड़ा पहनने की और नियमित ख़त लिखने आदि की हिंदायत दी और मैं चल पड़ा। सड़क पर आने के बाद—पता नहीं क्यों—मुझे अजीब-सा अहसास हुआ कि मैं धोखेबाज़ हूँ। अजीब बात कि मैं—जो कि बेहिचक चौबीस घंटों की नोटिस पर, इतना भी सोचे बिना जितना कि अधिकांश लोग सड़क पार करते हुए सोचते हैं, दुनिया के किसी भी कोने के लिए कूच

करने को तैयार रहता था, अब इस सामान्य अनुभव से—क्षण भर के लिए झिझक तो नहीं, पर आशंका से रुक-सा गया। इसे समझाने को सबसे बेहतर शब्द मेरे पास यही हैं कि मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं किसी महाद्वीप के नहीं धरती के केंद्र की ओर कूच करने वाला था।

मैं एक फ्राँसीसी स्टीमर से चला, और जहाँ तक मेरी समझ में बात आई, महज सैनिकों और आबकारी (कस्टम्स) के अफ़सरों को उतारने-चढ़ाने के खातिर वह नौका हर छोटे-मोटे बंदर पर रुकती रही। मैं तट को देखता रहा। जहाज़ के पास से गुज़रते जा रहे तट को देखना एक पहेली जैसा है। आँखों के सामने फैला हुआ—मुस्कराता, घूरता, बुलावा देता, आलीशान, कुटिल, फीका, या ख़ूँख़ार, और हमेशा 'आओ ढूँढ़ो मुझे' फिसफिसाता सा, पर निःशब्द्। इस तट की कोई ख़ास पहचान न थी, मानो वह अभी बन ही रहा हो, उसमें एक कठोर इकहरापन-सा था। रेंग-रेंग कर बढ़ रहे कुहरे में धुँधले होते जा रहे चमकते नीले समुद्र से काफ़ी दूर तक, इतना गहरा हरा कि तक़रीबन काला दिखता, विशाल जंगल का किनारा सीधी खिंची एक रेखा की तरह चला जा रहा था, जिसके साथ सफ़ेद झाग था। धूप तीख़ी थी और ज़मीं भाप से गीली चमक-सी रही थी। कभी-कभार सफ़ेद झाग में इकट्ठे स्याह सफ़ेद धब्बे दिखते जिन पर शायद परचम लहरा रहे होते। ये कुछ सदी पुरानी बस्तियाँ थीं, जो देखने में पीछे फैले अनछुए विशाल मंज़र के सामने पिन के सिरे जैसी लगती थीं। हम बढ़ते चले, कभी रुकते, सिपाहियों को उतारते; वीरान जंगली इलाक़े जैसे दिखते इलाक़ों में, जहाँ टिन की छत वाला झंडा उड़ाता खंभा मौजूद था, आबकारी किरानियों को चुंगी वसूली के लिए, और इन्हीं की देखभाल के लिए और सिपाहियों को उतारते हम चलते चले। मैंने सुना कि कुछ झाग में ही डूब गए; पर सचमुच वे डूबे या नहीं, किसी को इसकी परवाह नहीं थी। उनको बस वहाँ फेंक कर हम आगे बढ़ गए। हर दिन तट वैसा ही दिखता, मानो हम वहाँ से हिले ही न थे; पर हम कई इलाक़ों से गुज़रते रहे—'ग्रैन'(ड) बासाम लिटल

पोपो' जैसे नाम वाली मंडियाँ; ऐसे नाम जो किसी डरावने परदे के सामने खेले गए निचले दर्जे के प्रहसन के नाम लगते थे। सवारी होने की सुस्ती, लोगों के बीच का एकाकीपन, जिनसे मेरा कोई संबंध न था, तैलीय और निस्तेज समुद्र, तट की नियमित गंभीरता, इन बातों की वजह से मैं सचाई से दूर किसी शोकग्रस्त और बेवजह की गहरी भ्रांति में खोया-सा था। कभी-कभार उमड़ती लहरों की आवाज़ किसी भाई की सलाह-सी ठोस आनंद दे जाती थी। यह प्रकृति का रूप था, जो किसी मक़सद और मानी के साथ मौजूद था। कभी-कभार तट से आई कोई नौका क्षणभर के लिए सचाई का सामना करवा जाती। उसे खेने वाले काले मल्लाह थे। दूर से उनकी चमकती सफ़ेद आँखों की पुतलियाँ दिख जातीं। ये बंदे—चिल्लाते, गीत गाते; उनके शरीर से पसीना बहता; उनके चेहरे भुतहे नकाबों जैसे थे; पर उनकी हड्डियाँ, मज्जाएँ, उद्दाम जीवन शक्ति, प्रचंड गतिमान ऊर्जा उनके तट पर के झाग जैसी ही क़ुदरती और सच्ची थीं। उनके वहाँ मौजूद होने की कोई वजह ज़रूरी नहीं थी। उन्हें देखकर बहुत सुकून मिलता था। थोड़ी देर तक लगता कि मैं सादी सरल दुनिया में हूँ, पर यह भाव ज़्यादा देर तक टिकता न था। कुछ ऐसा हो जाता कि यह भावना डर कर रफ़ूचक्कर हो जाती। एक बार, मुझे याद है कि हमने तट से थोड़ी दूर लंगर डाले खड़ा एक जंगी जहाज़ देखा। तट पर कोई झोपड़ी तक न थी और उस जहाज़ से झाड़ियों पर गोलियाँ बरसाई जा रही थीं। पता चला कि आसपास कहीं फ़्राँसीसियों की जंग चल रही थी। उसका परचम चीथड़े की तरह लटका हुआ था; नीचे की ओर झुके जहाज़ के समूचे ढाँचे से बंदूक़ों की छः इंच नालें निकली हुई थीं; तेल और गंदगी भरी लहरें सुस्ती के साथ उसे ऊपर की ओर हिचकोले देतीं और फिर नीचे ले आतीं, जिससे उसकी पतली पतवारें हिलती-डुलतीं। धरा, आकाश और जल के खुले अनंत विस्तार में, उसका यूँ एक महाद्वीप पर गोलीबारी करना समझ के बाहर की बात थी। छः इंच वाली बंदूक़ फटाक से बोलती; आग की लपट उछलती और ग़ायब हो

जाती; थोड़ा-सा धुआँ विलीन हो जाता, छोटी-सी गोली की कर्कश चीख़ सुनाई पड़ती—और कुछ भी नहीं होता था। कुछ होने का सवाल ही नहीं था। पूरे मामले में पागलपन की झलक थी, शर्मनाक प्रहसन जैसा दृश्य था; और जो जहाज़ पर सवार किसी के इस गंभीर आश्वासन से कमतर न हुआ कि वहाँ कहीं आँखों से ओझल स्थानीय लोगों की बस्ती थी—उसने उन्हें दुश्मन कहा था!

हमने उस जहाज़ के लिए लाई डाक उनको दी और चल पड़े। पता चला कि उस अकेले जहाज़ में दिन में तीन की रफ़्तार से लोग बुख़ार से मरते जा रहे थे। मज़ेदार नामों वाली कुछ और जगहों पर हम रुके। मानो प्रकृति स्वयं घुसपैठियों को धकेल बाहर करने की कोशिश कर रही हो, कीचड़ में सड़ रहे किनारों वाली नदियों से आते-जाते, ज़िंदगी में मौत के धारे घोलते, ख़तरनाक फ़ेनिल लहरों के पहरे में उस समूचे बेनक़्श समुद्रतट की इन जगहों पर ज़मीं के नीचे के किसी खौलते क़ब्रिस्तान की थमी और धूल-भरी हवाओं-सा मौत और सौदे का मोहक नृत्य जारी था। गंदगी से गाढ़ा हो चुके नदियों के पानी की बौछार मँझले कद की ऐंठी हुई झाड़ियों (मैनग्रोव) पर पड़ रही थी। लगता था जैसे झाड़ियाँ पंगु हताशा के अतल से हमें देखती काँप रही हैं। हम कहीं भी इतनी देर तक नहीं रुके कि जगह के बारे में तफ़सील से कोई समझ बना सकें, पर एक अस्पष्ट और तकलीफ़देह अचंभे का सामान्य अहसास मेरे मन में घर कर गया। मानो मैं परेशान-सा यात्री कर रहा था और बीच-बीच में बुरे सपने से आते रहते।

तीस दिनों से ऊपर हो गए जब मैंने बड़ी नदी का मुहाना देखा। तट पर सरकारी चौकी के पास ही हमने लंगर डाला। पर मेरे काम का क्षेत्र अभी भी दो सौ मील दूर था। तो मौक़ा मिलते ही मैं तीस मील आगे की यात्रा पर निकल पड़ा।

मैं समुद्र पर चलने वाले एक स्टीमर पर सवार था। कप्तान स्वीडी था और मुझे समुद्री नाविक मान कर उसने ब्रिज (संचालन कक्ष) में

बुलाया। वह हल्के बालों वाला, उदास शक्ल और दुबले कद का, पैर घसीट कर चलने वाला गोरा युवा था। उस टूटे-फूटे घाट से छूटते ही उसने तट की ओर तिरस्कार भरे अंदाज़ में माथा झटकते हुए पूछा, 'वहाँ रहते हो क्या?' मैंने कहा, 'हाँ।' बड़े तिक्त लहजे और कमाल की सही अंग्रेज़ी में वह बोलता रहा, 'ये सरकारी लोग भी बड़े अजूबे हैं—हैं न? हँसी आती है कि थोड़ी-सी माहवार तनख़्वाह के लिए लोग क्या-क्या नहीं करने को तैयार हो जाते। ये लोग जब ज़मीं पर आगे और अंदर की ओर जाते हैं तो जाने इनका क्या हश्र होता होगा?'

मैंने उसे बतलाया कि जल्द ही मेरा यही अनुभव होने वाला है। 'ऐसा!' उसने विस्मय से कहा। मुस्तैदी से सामने की ओर एक आँख टिकाए पैर घसीटते हुए वह मुड़ा। उसने बोलना जारी रखा, 'सँभल कर रहना। अभी उस दिन मैंने एक सवारी चढ़ाई जिसने सड़क पर फाँसी लगा कर ख़ुदकुशी कर ली। वह भी स्वीडी था।'

मैं चीख़ा, 'फाँसी लगा ली! हे प्रभु! आख़िर क्यों?'

वह सावधानी से बाहर देखता रहा। 'क्या पता? शायद ग़र्मी से परेशान था, या मुल्क से।'

आख़िरकार हम किसी गंतव्य पर पहुँचे। पथरीली चोटी दिखलाई पड़ी। तट पर मिट्टी के ढेर लगे थे। पहाड़ी पर मकान दिख रहे थे। खुदाइयों से निकाले मलबे के बीच कुछ और लोहे की छत वाले मकान या ढलान पर टिके मकान दिखे। तबाही पर बनी बस्ती के इस दृश्य पर तेज़ बहते सोतों की धार की आवाज़ छाई हुई थी। ज़्यादातर काले और नंगे बहुत सारे लोग चींटियों जैसे चल-फिर रहे थे। घाट पर जेटी नदी के अंदर तक बढ़ी हुई थी। कभी-कभी अचानक चौंध वापस लिए लौटी तीख़ी धूप इन सब को ढक देती थी।

'वह रहा तुम्हारी कंपनी का डेरा,' पथरीली ढलान पर पल्टन घर जैसे दिखते लकड़ी के बने तीन ढाँचों की ओर संकेत करते हुए स्वीडी

बोला, 'तुम्हारा सामान मैं भिजवा दूँगा। तुमने चार ही बक्से कहा था न? ठीक। अलविदा।'

मुझे घास में लेटी हुई एक भट्ठी दिखी, फिर पहाड़ी की ओर जाती एक सड़क मिल गई। चट्टानों और हवा में चक्के ऊपर किए औंधे पड़े छोटे साइज़ के एक रेलवे ट्रक के पास से बलखाती हुई सड़क मुड़ी। एक चक्का ग़ायब था। ट्रक किसी मरे हुए जानवर की लाश जैसा मुर्दा लग रहा था। रास्ते में और भी सड़ती मशीनरी के टुकड़े, ज़ंग लगी कीलों का एक गुच्छा, दिखे। बाँयी ओर पेड़ों के झुंड से बनी छाया में धीमी-सी हिलती हुई काली जानें थीं। मैं आँखें झपक रहा था, रास्ते की ढाल ऊँची थी। दाँयी ओर भोंपू बजा और काले लोग दौड़ पड़े। भारी, दबे से धमाके से ज़मीन हिली और चोटी से धुएँ का गुब्बार निकला, बस और कुछ नहीं। चट्टान की शक्ल पर और कोई बदलाव नहीं दिखा। रेलपथ बनाने का काम चल रहा था। ऐसा नहीं कि चोटी बीच में आती हो, पर बेमक़सद धमाकों वाला ही एकमात्र काम चल रहा था।

पीछे से आई छनछन की आवाज़ सुन मैंने सिर घुमाया। छः काले लोग, शिद्दत के साथ एक कड़ी में चल रहे थे। सिर पर मिट्टी भरी टोकरियाँ सँभाले वे सीधे धीमी गति से चल रहे थे और छनछन की थाप में उनके क़दम सधे हुए थे। उनकी जाँघों के बीच काली लँगोटियाँ बँधी थीं, जिनके छोटे सिरे पूँछ की तरह आगे-पीछे बल खा रहे थे। मैं उनकी हरेक पसली देख पा रहा था। उनके अंगों के जोड़ रस्सी की गाँठों जैसे थे। हरेक की गर्दन में लोहे की पट्टी बँधी थी। वे सब एक चेन से इकट्ठे बँधे थे, जिसकी कड़ियाँ उनके बीच दोलती हुई लय में छनछना रही थीं। चोटी से आई एक और आवाज़ सुनकर मुझे अचानक उस जंगी जहाज़ की याद आई जो महाद्वीप पर गोलियाँ बरसा रहा था। वैसी ही डरावनी आवाज़ यह भी थी; पर इन लोगों को किसी भी तरह दुश्मन नहीं कहा जा सकता था। इन्हें अपराधी घोषित किया गया था और क़ानून

की नाराज़ दुनिया गोलियाँ बरसाती हुई समुद्र से निकले किसी अनजान रहस्य-सी उन तक पहुँच आई थी। उनके दुबले सीने इकट्ठे हाँफ रहे थे। बुरी तरह फूले हुए नथुने काँप रहे थे। पथराई हुई आँखें ऊपर की ओर ढाल को ताक रही थीं। मेरी ओर देखे बिना, नाख़ुश जंगलियों के प्रति मौत जैसी उदासीनता के साथ वे कोई छः इंच की दूरी से मेरे क़रीब से गुज़रे। इन अनगढ़ लोगों के पीछे काम पर लगाए पालतू बन चुके नए सिपाहियों में से एक बंदा बंदूक़ को बीच से पकड़े निराश-सा चल रहा था। उसने एक वर्दी वाला जैकिट पहना हुआ था जिसका एक बटन टूटा हुआ था। राह पर गोरे आदमी को देखते ही उसने मुस्तैदी से कंधे पर बंदूक़ खींची। यह महज सावधानी थी, दूर से सभी गोरे एक जैसे दिखते हैं और उसे अंदाज़ा न था कि मैं कौन हो सकता हूँ। बड़ी जल्दी वह मुझे ताड़ गया और एक धूर्त्त चौड़ी मुस्कान के साथ अपनी बंदूक़ को देखते हुए उसने मुझे आत्मीय-सा बनाने की कोशिश की। आख़िर मैं भी इन उच्च और न्यायसंगत कार्रवाइयों का भागीदार था!

ऊपर न जाकर मैं घूमकर बाँयी ओर से उतरा। मैं ऊँचाई पर चढ़ने से पहले चेन से बँधे उन लोगों से बचना चाहता था। भई मैं कोई नाज़ुक तो हूँ नहीं; मुझे भी कभी-कभार लड़ना पड़ा है और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। ग़लती से जैसी ज़िंदगी हमें गुज़ारनी पड़ी है, उसकी माँग मुताबिक़ कभी-कभार मुझे प्रतिरोध और कभी हमला करना पड़ा है—जो क़ीमत चुकानी पड़ी है उसका सही हिसाब लगाए बिना—यह प्रतिरोध का महज एक तरीक़ा है। मैंने हिंसा की, लालच की और अदम्य चाहत की तबाही देखी है, पर ख़ुदा क़सम! मेरी मानो तो बताऊँ कि आदमी को—यही ऐसी लाल आँखों वाली, भयंकर लोलुप ताक़तें हैं, जो आदमी को नचाती, डिगाती रही हैं। उस चट्टान के किनारे खड़े होकर मुझे पूर्वाभास हुआ कि उस ज़मीं पर फैली चौंधियाती धूप में, किसी थुलथुल, ढोंगी, तंगनज़र, लालची और संवेदनाहीन हैवान नमूने के साथ मेरी वाकफ़ियत होगी। उसकी कुटिलता की पूरी समझ मुझे कुछ

महीनों बाद और वहाँ से एक हज़ार मील दूर जाकर ही मिली। जैसे मुझे कोई चेतावनी मिली हो, क्षण भर के लिए मैं आतंकित-सा खड़ा रहा। आख़िरकार जिस ओर मुझे पेड़ दिखे थे, मैं तिरछी राह उस ओर पहाड़ी से उतर गया।

ढलान पर एक बहुत बड़ा गड्ढ़ा था। मैं नहीं समझ पाया कि किस वजह से कोई इसे खोद रहा था। मैं उससे बचता हुआ निकला। वैसे यह पत्थर या रेत की खदान नहीं थी। बस एक गड्ढ़ा था। हो सकता है क़ैदियों को काम में लगाए रखने के उदार ख़याल के साथ इसका कोई संबंध हो। मुझे नहीं मालूम। फिर मैं चट्टान के किनारे पर धब्बे जैसा दिखते बहुत ही सँकरे एक गड्ढ़े में गिरने को था। मैंने पाया कि बस्ती के लिए मँगाये गए नालियों के पाइप वहाँ फिंके पड़े थे। एक भी ऐसा न था जो टूटा हुआ न था। सारे जान-बूझ कर तोड़े हुए थे। अंततः मैं पेड़ों के नीचे पहुँचा। मैं पल भर के लिए छाया में टहलना चाहता था; पर मैं वहाँ पहुँचा ही था कि मुझे लगा कि मैं दाँते के इनफर्नो के किसी डरावने घेरे* में पहुँच गया था। पास ही कहीं सोते बह रहे थे, और उस झुरमुट में, जहाँ कोई साँस तक न बह रही थी, कोई पत्ता न हिल रहा था, उस मातमी सन्नाटे को एक तेज़, लगातार, बेरोक, बढ़ती चली रहस्यमय आवाज़ का शोर भर रहा था—ऐसा लग रहा था मानो प्रक्षेपित धरती के चूरमचूर होने की आवाज़ अचानक सुनाई पड़ने लगी थी।

पीड़ा, अवहेलना और हताशा की हर प्रकार की भावनाओं से भरी, मद्धिम रोशनी में थोड़ी दिखती, थोड़ी अदृश्य काली आकृतियाँ, कोई उकड़ूँ, कोई लेटी, कोई तनों का सहारा लिए, ज़मीं को पकड़े हुए, पेड़ों के बीच बैठी हुई थीं। चोटी पर कहीं एक और सुरंग का विस्फोट हुआ और उसके बाद मेरे पैरों के नीचे धरती ज़रा सी काँप उठी। काम चल

* मध्ययुगीन इतालवी महाकवि दाँते के काव्य-ग्रंथ 'इनफर्नो' में अलग-अलग तरह के पाप-कर्मों के लिए निर्धारित दस सर्कल्स (घेरों) का उल्लेख है।

रहा था। काम! और यही वह जगह थी, जहाँ कुछ खलासी मरने को आए थे।

यह बिल्कुल स्पष्ट था—वे धीरे-धीरे मर रहे थे। वे दुश्मन नहीं थे, वे अपराधी नहीं थे, उनमें रोग और भुखमरी के अलावा इस दुनिया का कुछ भी बाक़ी न बचा रह गया था—वे इन हालात में सब्ज़-सी मनहूसियत में परेशान पसरे हुए थे। वे क़ानूनी मसौदों के बल पर समुद्र तट पर बसी तमाम बस्तियों में से लाए गए थे; प्रतिकूल परिवेश में खोए हुए, पहले कभी न खाया भोजन खाते हुए वे बीमार पड़ते रहे और उनका काम धीमा पड़ने लगा; तब उन्हें रेंगते हुए जाने दिया गया कि वे आराम कर लें। ये अधमरे ढाँचे हवा जैसे हल्के, और उतने ही दुबले थे। मुझे पेड़ के नीचे अलग-अलग आँखों की चमक की पहचान होने लगी। फिर नीचे नज़र डालने पर अपने हाथों के पास एक शक्ल दिखी। काली हड्डियों का पूरा ढाँचा पेड़ पर टिके कंधे के सहारे लेटा हुआ था। उसकी आँखों की पलकें धीरे से उठीं और बेजान, मुर्झाई बड़ी आँखों ने मेरी ओर देखा, जैसे कि ज़मीं की गहराइयों से धीरे-धीरे बुझती हुई कोई सफ़ेद चिनगारी हो। वह युवा जैसा—तक़रीबन किशोर—लगता था, पर तुम तो जानते हो कि उनकी उम्र जान पाना कठिन होता है। मैं इतना ही कर पाया कि जेब में पड़े उस भले स्वीडी के जहाज़ में मिले बिस्कुटों में से एक उसे दे दिया। उँगलियों ने धीरे से उस बिस्कुट को पकड़ा और थामे रखा—और कोई हलचल न थी और कोई नज़र न उठी। उसने अपनी गर्दन पर एक छोटा-सा अंग्रेज़ी ऊनी कपड़ा बाँधा हुआ था—क्यों? उसे कहाँ से यह मिला? क्या यह पहचान के लिए था—या सजधज के लिए—बस मस्ती के लिए—बलि होने की तैयारी? इसका कोई उद्देश्य था भी? उसकी काली गर्दन पर बँधा समंदर पार का वह छोटा विलायती सफ़ेद धागा चौंकाता था।

उसी पेड़ के पास सिकुड़े तिकोने गट्ठर से दिखते दो और लोग अपने पैर उकड़ूँ किए बैठे थे। एक ने अपनी ठुड्डी घुटनों पर टिकाई हुई थी,

उसकी नज़र असह्य और तकलीफ़देह ढंग से कहीं शून्य पर टिकी थी। उसका भुतहा भाई मानो भारी थकान से अपना माथा टिकाए हुए था। आसपास दूसरे लोग हर तरह से सिकुड़े हुए मुर्झाए पड़े थे, जैसे कि किसी नरसंहार या महामारी की तस्वीर में दिखता है। जबकि मैं वहाँ आतंकित खड़ा था, इन प्राणियों में से एक अपने हाथों और पैरों के सहारे उठा और चारों हाथों पैरों के बल नदी की ओर पानी पीने चला। वह हाथों से पीता रहा, फिर सामने पिंडलियों को एक-दूसरे पर रखते हुए धूप में उठ बैठा, और थोड़ी देर बाद अपने घुँघराले बालों वाला सिर सीने की हड्डी पर लटका दिया।

मैं छाया में और इधर-उधर चलना न चाहता था, सो जल्दी से स्टेशन की ओर चल पड़ा। मकानों के पास आकर मैं एक गोरे आदमी से मिला, जिसने मेरी कल्पना से परे ऐसी अभिजात सजधज की हुई थी कि एकबारगी मुझे लगा कि दृष्टिभ्रम है। मुझे बहुत माड़ी लगी हुई कॉलर, सफ़ेद कफ़-बटन, एक हल्की अल्पाका रोयों से बुनी जैकेट, बर्फ़ानी सफ़ेद पतलून, एक साफ़ टाई और वार्निस की पालिश लगे बूट दिखे। कोई टोप नहीं। सँवारे तेल लगे बालों में से सीध कटी हुई, नीचे बड़े गोरे हाथ में हरे किनार वाली छतरी। वह कमाल का बंदा था और उसके कानों के पीछे एक क़लम होल्डर था।

मैंने इस प्राणी के साथ हाथ मिलाए और जाना कि वह कंपनी का प्रधान मुंशी है, और इसी स्टेशन पर सारा हिसाब-किताब किया जाता है। उसने बताया कि वह थोड़े समय के लिए 'ताज़ी हवा में साँस लेने' के लिए बाहर निकला था। उसके कहने में कुछ विचित्र-सा था और उसमें डेस्क पर लंबे समय तक बैठ कर काम करने का संकेत था। मैंने इस बंदे के बारे में कतई बात न की होती, पर ऐसा है कि उसी के मुँह से मैंने पहली बार एक ऐसे आदमी का नाम सुना जो उन दिनों की स्मृति के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा है। और यह भी है कि मेरे मन में उस बंदे के

प्रति सम्मान था। हाँ, उसके कॉलर, उसके बड़े कफ़-बटन, उसके सँवारे बालों के प्रति मेरे मन में सम्मान था। दिखने में वह किसी हेयरड्रेसर की नक़ल लगता था, पर उस मनहूस मुल्क में उसने अपनी ख़ास शक्ल बनाए रखी थी। हिम्मत की बात है। उसके कलफ़ लगे कॉलर और कमीज़ के दिखते हिस्से उसके चरित्र की दृढ़ता की पहचान थे। तीन सालों तक वह बाहर रह चुका था; और बाद में मैं उसे पूछे बिना न रह सका कि ऐसा कपड़ा उसने कैसे ढूँढ़ निकाला। बस हलकी-सी झेंप के साथ नम्रतापूर्वक उसने कहा, 'यहाँ की एक औरत को मैं यह काम सिखलाता रहा हूँ। मुश्किल काम था। उसे यह काम पसंद न था।' स्पष्ट है कि बंदे ने सचमुच कुछ तो कर दिखाया था। और वह अपने बही-खातों के प्रति समर्पित था, जो कि तरतीबवार सजाए हुए थे।

अड्डे में बाक़ी हर चीज़—लोग, सामान, मकान—तितर-बितर बिखरे हुए थे। धूल में लिपटे भद्दे पैरों वाले काले लोग आ-जा रहे थे; बहुत सारा निर्मित सामान, गंदा दिखता कपास, मनके, और पीतल का तार घने जंगलों में जाते और बदले में थोड़ा सा मूल्यवान हाथी का दाँत आता।

मुझे अड्डे पर दस दिनों तक इंतज़ार करना पड़ा—जो कि मुझे अनंत समय लगता रहा। मैं यार्ड में एक झोंपड़ी में रहता था, पर कभी-कभार वहाँ की अव्यवस्था से भागने के लिए मैं मुंशी के दफ़्तर चला आता। वह दफ़्तर सीधे तख़्तों का बना था। ये तख़्ते इतनी बुरी तरह जोड़े गए थे कि जब वह अपनी ऊँची मेज़ पर झुकता तो सिर से पैर तक धूप की पतली धारियाँ उस पर आ गिरतीं। बाहर देखने के लिए झरोखे खोलने की ज़रूरत न थी। वहाँ भी गर्मी थी; बड़ी-बड़ी मक्खियाँ डरावने ढंग से उड़तीं। वे डँसती नहीं, काटती थीं। आम तौर पर मैं फ़र्श पर बैठ जाता, और वह क़रीने से सजा-धजा (और थोड़ी इत्र लगाए), ऊँची मेज़ पर टिका लिखता रहता, लिखता रहता। बीच-बीच में वह कसरत के

लिए उठता। जब एक बीमार आदमी (ऊपरी इलाक़ों पर बीमार पड़ा कोई एजेंट) के साथ चक्के लगे दीवान को कमरे में लाया गया तो उसने नम्रता से विरोध जताया।

'इस बीमार आदमी की कराहों से मेरा ध्यान बँटता है', उसने कहा, 'पूरा ध्यान काम पर न होने पर ऐसे मौसम में काग़ज़ात देखते हुए ग़लतियों से बच पाना मुश्किल है।'

एक दिन उसने अपना सिर ऊपर उठाए बिना एक बात कही, 'अंदरूनी इलाक़ों में तुम्हारी मुलाक़ात मिस्टर कुर्त्ज़ से ज़रूर होगी।' जब मैंने पूछा कि मिस्टर कुर्त्ज़ कौन है तो उसने कहा कि वह ऊँचे दर्जे का एजेंट है; और जब उसे लगा कि मैं इस सूचना पर तवुज्जो नहीं दे रहा, तो उसने क़लम रोकते हुए धीरे से जोड़ा, 'वह कमाल का बंदा है।' और सवाल करने पर उससे यह जानकारी निकली कि फ़िलहाल मिस्टर कुर्त्ज़ 'वहाँ नीचे कहीं असली हाथीदाँत वाले क्षेत्र में किसी बड़े ही ख़ास व्यापार केंद्र का अधिकारी है। बाक़ी सब लोग मिलकर जितना हाथी का दाँत भेजते हैं, उतना वह अकेले भेजता है।....' उसने फिर से लिखना शुरू किया। बीमार आदमी कराहने लायक़ हालत से भी ज़्यादा बीमार था। फ़ाइलें बड़ी रफ़्तार से चलती रहीं।

अचानक बहुत सारे पैरों के चलने की थपथपाहट और बढ़ती हुई आवाज़ों की बड़बड़ाहट सुनाई पड़ी। कोई कारवाँ आया था। तख़्तों के दूसरी ओर से अप्रिय आवाज़ों का गुबार-सा फूटा। सारे कुली इकट्ठे बोल रहे थे। इस सबके बीच बीसवीं बार रोती हुई आवाज़ में उस प्रधान एजेंट की आवाज़ सुनाई पड़ी, 'और नहीं सह सकता।' वह धीरे से उठा।

'कैसा असहनीय शोरगुल है,' उसने कहा। उसने बीमार आदमी को देखने के लिए हलके क़दमों से कमरा पार किया और लौटते हुए मुझे कहा, 'उसे सुन नहीं रहा।'

मैंने चौंकते हुए पूछा, 'क्या! मर गया क्या?'

उसने बड़ी गंभीरता से जवाब दिया, 'नहीं, अभी नहीं।' फिर अपना सिर झटक कर स्टेशन के यार्ड में हो रहे हंगामे की ओर संकेत करते हुए कहा, 'खाते में सही आँकड़े दर्ज़ करने का भार हो तो इन जंगलियों से नफ़रत—हद दरज़े की नफ़रत होने लगती है।'

वह पल भर सोचता रहा, 'जब तुम मिस्टर कुर्त्ज़ से मिलो तो उससे कहना कि यहाँ सब कुछ'—उसने डैक की ओर देखा—'बिल्कुल ठीक है। मैं उसे लिखना पसंद नहीं करता—हमारे इन संदेशवाहकों का क्या पता कि—केंद्रीय अड्डे में किसके हाथ में चिट्ठी पहुँच जाए।' अपनी निरीह, बड़ी होती आँखों से उसने मेरी ओर पल भर देखा।

'अरे वह काफ़ी दूर, दूर तक जाएगा,' वह फिर बोला। 'जल्दी ही कभी वह प्रशासन में बड़ा कोई बनेगा। ऊपर वाले—तुम जानते ही हो, यूरोप में काउंसिल वाले—वे चाहते हैं कि वह बड़ी ज़िम्मेदारियाँ सँभाले।'

वह वापस अपने काम में लग गया। बाहर का शोर रुक गया था, और जल्दी ही बाहर जाते हुए मैं दरवाज़े पर रुका। लगातार आ रही मक्खियों की भिनभिनाहट में अपने रूहानी घर को कूच कर रहा एजेंट बेहोश पड़ा था; दूसरा खातों पर झुका हुआ बिल्कुल सही लेन-देन के बिल्कुल सही आँकड़े दर्ज कर रहा था; और पचास फीट आगे मैंने मौत का साया बने दरख़्तों के ऊपरी हिस्सों को देखा।

अगले दिन आख़िरकार मैंने साठ लोगों के कारवाँ के साथ दो सौ मील लंबी यात्रा के लिए कूच किया।

इस बारे में तुम्हें अब क्या बतलाएँ। पगडंडियाँ, हर ओर पगडंडियाँ; ऊँची घास के बीच से, जली घास के बीच से, झाड़ियों के बीच से, ख़तरनाक दर्रों में से, गर्म तपी धधकती हुई पहाड़ियों के बीच, बंजर ज़मीन पर मानो पगडंडियों का जाल बिछा था; और वीरानी, चारों ओर वीरानी, कहीं कोई झोपड़ी तक नहीं। वहाँ से लोग काफ़ी पहले जा चुके

थे। भई, अगर कई सारे अजीब काले लोग तरह-तरह के ख़तरनाक हथियार लिए इंगलैंड के डील और ग्रेवसैंड इलाक़ों के बीच चल पड़ते और आम लोगों को जहाँ मर्जी पकड़ कर जबरन सामान ढोने को कहते दिखाई देते, तो मुझे तो यही लगता है कि सभी खेत और आसपास की झोपड़ियाँ बड़ी जल्दी खाली हो जाते। यहाँ मकान तक ग़ायब हो गए थे। फिर भी मैं कई वीरान गाँवों में से गुज़रा। घास की दीवारों वाली झोपड़ियों के खंडहरों में कुछ सचमुच ही दयनीय क़िस्म की बचकानी-सी बातें होती हैं। कई-कई दिनों तक अपने पीछे आते हरेक साठ पाउंड का वज़न ढोते, साठ जोड़े घसीटते पैरों की थाप के आगे मैं चलता रहा। पड़ावों पर रुकना, खाना पकाना, सोना, फिर शिविर बना कर रुकना और कूच कर जाना। अक्सर हमें राह के किनारे लंबी घास के बीच साँकलों में बँधे किसी मजूर का शव दिख जाता, उसके हाथों में पानी की डुगडुगी होती और उसकी लंबी लाठी उसके पास पड़ी होती। ज़मीं-आस्माँ में चारों तरफ़ घोर सन्नाटा छाया होता।

कभी-कभार शांत रातों में कहीं दूर से ढोलकों की काँपती, कभी डूबती, कभी फैलती, कभी बहुत भारी तो कभी बिल्कुल ही हल्की-सी आवाज़ आती; वह आवाज़ जैसे कुछ कह रही होती, मन को भाती-सी, कुछ कुरेदती-सी और उन्मुक्त—उसमें शायद किसी ईसाई इलाक़े में बजती घंटियों जैसा कोई गहरा अर्थ था। एक बार बंदूक़धारी ठिगने ज़ंज़ीबारियों की टुकड़ी की सुरक्षा में रास्ते में मोर्चा डाले, खुली कमीज़ पहने एक मस्त और ख़ुशमिजाज़ गोरा आदमी मिला। ऐसा नहीं कि वह नशे में था। उसने बतलाया, सड़क की मरम्मत की निगरानी कर रहा हूँ। मैं कह नहीं सकता कि मैंने वहाँ कोई सड़क देखी या कोई मरम्मत होते देखी—हाँ, वहाँ से तीन मील की दूरी पर माथे पर गोली की छेद वाली एक अधेड़ नीग्रो की देह से मैं सीधे टकराया, चाहो तो इसे स्थायी मरम्मत कह लो। मेरे साथ भी एक गोरा सहयोगी था, बंदा बुरा न था, पर ज़रा मोटा-सा था और उसकी एक परेशान करने वाली आदत यह

थी कि पहाड़ी रास्तों पर जहाँ ज़रा भी छाया न हो, पानी न मिले, वह बेहोश हो जाता। सचमुच बड़ी चिढ़ होती जब अपना कपड़ा उतारकर उसके सिर के ऊपर छतरी की तरह रखना पड़ता ताकि उसे होश आ जाए। मुझसे एक बार उसे पूछे बिना न रहा गया कि उसे वहाँ आने की ज़रूरत ही क्या थी? उसने तिरस्कार के लहजे में कहा, 'अमाँ, पैसों के लिए। और तुमने क्या सोचा?' फिर उसे बुख़ार आ गया और उसे लाठी की पालकी बनाकर उठा ले जाना पड़ा। उसके भारी वज़न की वजह से कहारों के साथ मेरी खिटपिट होती रही। वे बेसब्र होते रहे, भागते रहे, रात को अपना सामान ले कर भाग गए—बग़ावत ही समझो। फिर एक शाम मैंने धमकियों वाली मुद्राओं के साथ अंग्रेज़ी में भाषण दिया। मेरे सामने मौजूद साठ जोड़े आँखों में से हर कोई मेरी भंगिमाओं का अर्थ समझ रहा था। अगले दिन मैंने पालकी को सबसे आगे कर दिया। सब ठीक चल रहा था, घंटे भर बाद मैंने सारा तामझाम एक झाड़ी में गिरा पाया—बंदा, पालकी, चीख़ें, कंबल, आतंक। भारी लकड़ी से घिसकर उसकी बेचारी नाक छिल गई थी। वह बेचैनी से चाह रहा था कि मैं किसी को मार डालूँ, पर आस-पास किसी कहार की छाया भर भी न थी। मुझे बूढ़े डॉक्टर की बात याद आई—'ऐन वारदात की जगह पर लोगों की मानसिक स्थिति में आते बदलावों का अध्ययन विज्ञान की दृष्टि से रोचक होगा।' मुझे लगा कि मैं एक रोचक वैज्ञानिक विषय बनता जा रहा था। पर यह सब बेमतलब था। पंद्रहवें दिन मुझे वह बड़ी नदी फिर दिखलाई पड़ी, और मैं लड़खड़ाता हुआ मुख्य अड्डे पर पहुँच गया। एक ओर बदबू भरे कीचड़ के ख़ूबसूरत घेरे और बाक़ी तीनों ओर भारी दलदली पौधों के बाड़े से घिरा यह अड्डा झाड़ियों और जंगल से घिरे खड़े पानी के तालाब पर बना था। प्रवेशद्वार के नाम पर एक बेतरतीब-सी खुली दरार थी। पहली नज़र में ही पता चल जाता था कि यह जगह कैसे मोटे लालची शैतान की निगरानी में होगी। इमारतों के बीच हाथों में बड़े डंडे लिए सुस्त चाल में चलते गोरे लोग मुझे देखने पास तक आते

और फिर कहीं नज़रों से ओझल हो जाते। उनमें से अच्छी कद-काठी के काली मूँछों वाले एक चंचल स्वभाव के आदमी ने लगातार बोलते हुए और बहुत सारी बेमतलब की बातों के बीच मुझे बतलाया कि जिस स्टीमर में मुझे जाना है, वह नदी में डूबा हुआ है। मुझ पर मानो बिजली आ गिरी। क्या, कैसे, क्यों? अरे, नहीं 'सब ठीक' है। 'मैनेजर ख़ुद' वहाँ मौजूद है। सब क़ायदे से हो रहा है। 'हर कोई बिल्कुल क़ायदे से पेश आया है! बिल्कुल क़ायदे से!'—'तुम' उसने उत्तेजित स्वर में कहा, 'तुरंत जाकर जनरल मैनेजर से ज़रूर मिलो। वह इंतज़ार कर रहा है।'

मुझे उस दुर्घटना का असली मतलब तब समझ में नहीं आया था। मुझे लगता है कि अब मैं समझता हूँ, पर मैं पक्का नहीं हूँ—बिल्कुल नहीं। अब सोचने पर लगता है कि वह इतनी बेतुकी बात थी कि पूरी तरह स्वाभाविक तो कतई नहीं हो सकती थी.... पर उस वक़्त वह बात मुझे गड़बड़झाला ही लग रही थी। स्टीमर डूब चुका था। एक स्वैच्छिक कप्तान के नियंत्रण में वे दो दिनों पहले, मैनेजर बा-सवार, जल्दबाज़ी में धार के विपरीत चले थे और तीन घंटे भी न हुए थे कि पत्थरों से टकराकर उसकी पेंदी फट गई और वह दक्षिणी किनारे के पास डूब गया। मैंने पूछा कि अब मेरी नौका तो डूब गई तो मेरा काम वहाँ क्या होगा। दरअसल करने को मेरे लिए काफ़ी काम था कि मैं अपना स्टीमर पानी से निकालूँ। अगले ही दिन मुझे यह काम शुरू करना था। इतना ही नहीं, स्टेशन पर नौका लाकर मरम्मत करवाने में मुझे महीनों लग गए।

मैनेजर के साथ पहला साक्षात्कार अजीब था। उस सुबह बीस मील पैदल चलने के बावजूद उसने मुझे बैठने को नहीं कहा। रंग और शक्ल, आचार और बातचीत में वह मामूली लगता था। वह मँझले कद-काठी का था। उसकी आम नीली आँखें कुछ ज़्यादा ही ठंडी थीं और बेशक उसकी नज़र कुल्हाड़ी की मार जैसी भारी और असरदार थी। पर इस सबके बावजूद उसका बाक़ी रवैया नर्म था। अन्यथा उसके होंठों पर हल्की, बयाँ

न की जा सकने वाली मुकम्मल—मुस्कान—नहीं मुस्कान नहीं—मुझे याद है पर मैं समझा नहीं सकता। वह मुस्कान अचेत-सी थी, हालाँकि उसके कुछ कहने पर क्षण भर के लिए वह फैल-सी गई थी। उसके बयानों के आख़िर में वह मुस्कान यूँ आती जैसे शब्दों पर कोई मुहर-सी लगी हो, जिससे आम बातें भी बिल्कुल दुरूह लगने लगें। अपनी जवानी के दिनों से इस धंधे में लगा वह एक मामूली व्यापारी था—इसके सिवा और कुछ नहीं। लोग उसकी बात मानते थे, पर न तो उसकी बातों से कोई प्रेरणा मिलती, न कोई डर, उसके प्रति कोई सम्मान की भावना भी न होती। उसकी बातों से बेचैनी बढ़ती। बस! बेचैनी। कोई ख़ास नायक़ीनी नहीं—मात्र बेचैनी—इससे अधिक कुछ नहीं। तुम सोच नहीं सकते कि ऐसी .... ऐसी.... दक्षता कितने काम की चीज़ है। चीज़ों को व्यवस्थित करने, नई पहल लेने, यहाँ तक कि निर्देश देने तक का कौशल उसमें न था। स्टेशन की शोचनीय स्थिति जैसी बातों से यह साफ़ झलकता था। उसने न कुछ पढ़ा था, न ही वह मेधावी था। उसे यह पद मिल गया था—कैसे? शायद इसलिए कि वह कभी बीमार न पड़ा था उसने वहाँ तीन साल के तीन कार्य-काल पूरे कर लिए थे....जब आम तौर पर तबियत बिगड़ती हो, वहाँ तंदरुस्त बने रहना अपने आप में ताक़त है। छुट्टी पर घर जाने पर वह जम कर—ख़ुलेआम—मस्ती करता था। यात्राओं से लौटे हर किसी नाविक जैसा—पर एक फ़र्क़ था—यह बस बाहर से था। उसके साथ सामान्य बातचीत से यह पता चल जाता था। उसकी बातों में नया कुछ न था, वह रूटीन बातें करता—बस। पर वह कमाल का था। उसके बारे में कमाल की बात यह थी कि यह कहना कठिन था कि ऐसे आदमी को क्या बाँध सकता है। यह राज़ वह कभी उजागर नहीं करता। शायद उसमें छिपा कुछ भी न था। यह शक आपको सोचने को मजबूर करता—वहाँ कोई बाहरी लक्षण तो नहीं थे। एक बार जब अड्डे में तक़रीबन सभी 'एजेंट' गर्म इलाक़े की बीमारियों से पस्त थे, कहते हैं उसने कहा, 'यहाँ आने वाले लोगों की भीतर से खाली होना चाहिए।' अपनी इस उक्ति पर उसने

उसी मुस्कान की मुहर लगा दी थी, मानो यह उसकी हिफ़ाज़त में रखे किसी अँधेरे को उजागर करता दरवाज़ा थी। हमें लगता कि हम कुछ जान पाए—पर मुहर तो लगी रहती। भोजन के वक़्त आगे-पीछे खाने को लेकर गोरे लोगों में निरंतर चलते झगड़ों से परेशान होकर उसने एक बड़ी गोल मेज़ बनाने का हुक्म दिया, जिसके लिए ख़ास घर बनाना पड़ा। यह स्टेशन का भोजनालय था। पहली जगह वह थी जहाँ उसे बैठना था—बाक़ी कोई जगह मायने न रखती थी। लगता था जैसे कि यह उसका अटल विश्वास था। उसमें न तो सौजन्य था और न ही बेअदबी। वह शांत रहता। तटीय इलाक़े से आए एक मोटे काले 'छोकरे' को वह, अपनी मौजूदगी में ही, गोरों के साथ बदतमीज़ी के साथ छेड़खानी करने देता।

मुझे देखते ही वह बोलने लगा। मुझे सफ़र में लंबा समय लग गया था। वह इंतज़ार नहीं कर सकता था। मेरे बिना ही उसे काम शुरू करना पड़ा। नदी पर आगे आने वाले अड्डों को भारमुक्त करना था। इतनी देर हो ही चुकी थी कि उसे पता न था कि कौन ज़िंदा था और कौन मर चुका था और अब कौन किस हालत में था—वग़ैरह-वग़ैरह। उसने मेरी सफाइयों पर ग़ौर तक न किया, और मोम की मुहर लगाने वाली एक काठी से खेलते हुए कई बार यह बात दुहराई कि स्थिति 'बड़ी गंभीर, बड़ी गंभीर' है। अफ़वाह थी कि एक महत्त्वपूर्ण अड्डा ख़तरे में है और वहाँ का मुख्य अधिकारी, मिस्टर कुर्त्ज़ बीमार है। उम्मीद है कि यह ख़बर ग़लत होगी। मिस्टर कुर्त्ज़ तो .. मैं थका और चिड़चिड़ा महसूस कर रहा था। मैं सोच रहा था, कुर्त्ज़ को गोली मार। मैंने उसे यह बतलाने के लिए रोका कि मैं तट पर कुर्त्ज़ के बारे में सुन चुका था। 'अच्छा! तो वहाँ उसके बारे में बातें होती हैं,' उसने ख़ुद से बड़बड़ाते हुए कहा। फिर उसने दुबारा बोलना शुरू किया। मुझे आश्वस्त किया कि मिस्टर कुर्त्ज़ उसका सबसे बढ़िया एजेंट था। वह असाधारण आदमी था और कंपनी के लिए बेशक़ीमती था; इसलिए उसकी बेचैनी मुझे समझ में

आनी चाहिए। उसने बतलाया कि वह 'बहुत, बहुत बेचैन' था। बेशक वह अपनी कुर्सी पर बेरोक हिल-डुल रहा था, और उसने बेचैनी से कहा, 'आह, मिस्टर कुर्त्ज़!' और मोम की मुहर की काठी तोड़ डाली और इस घटना से अचंभित-सा हो गया। आगे उसने जानना चाहा कि '(मरम्मत को) कितना समय लगेगा....' मैंने उसको फिर रोका। क्या बतलाएँ, भूख और थकान से मैं परेशान हो रहा था।

'कैसे कहूँ?' मैंने कहा, 'मैंने अभी तक मलबा देखा नहीं है—बेशक कुछ महीने तो लग जाएँगे।' यह बातचीत मुझे बेमतलब लग रही थी। 'कुछ महीने,' उसने कहा, 'मान लो कि तीन महीने काम शुरू करने में लग ही जाएँगे। हाँ, इतने में मामला सुलझ जाएगा।' मैं मन ही मन उसके बारे में अपने ख़याल बड़बड़ाता झटके से उसकी झोपड़ी से निकला (वह बरामदे वाली मिट्टी की बनी एक झोपड़ी में अकेला रहता था)। वह लगातार बोलने वाला बौड़म था। बाद में, जब मुझे समझ में आया कि कितनी अचूक स्पष्टता से उसने 'मामले' के सुलझने के वक़्त का अनुमान किया था, मैंने अपना ख़याल बदला।

अगले दिन मानो अड्डे को पीठ दिखाते हुए, मैं काम पर गया। मुझे लगा कि जीवन की कठिन सचाइयों पर अपनी पकड़ बनाए रखने का यही तरीक़ा था। फिर भी कभी-कभार नज़र आस-पास दौड़ती ही है। फिर मैंने वह अड्डा देखा, यार्ड पर धूप में बेवजह भटकते लोगों को देखा। कभी-कभार मैंने ख़ुद से पूछा कि इस सबका मतलब क्या है? किसी सड़ चुके बाड़े के पीछे भटक गए आस्था खो चुके यात्रियों की तरह अजीब से दिखते बड़े सोंटे लिए वे इधर-उधर घूम रहे थे। हवा में 'हाथीदाँत' शब्द गूँज रहा था, फिसफिसाहट और साँसों में सुनाई पड़ रहा था। लगता था कि यह उनकी कोई प्रार्थना थी। इस सबके बीच जैसे कोई बेहूदा लोभ की हल्की बू-सी थी, जैसे किसी शव से आती बदबू हो। ख़ुदा क़सम! ऐसा अवास्तविक मैंने जीवन में कुछ नहीं देखा। और इसके बाहर, साफ़ की गई

ज़मीं के टुकड़े के चारों ओर फैला ख़ामोश जंगल मुझे कोई बड़े सच या विनाशकारी ताक़त-सा विशाल और अगम सत्ता-सी लगा, जो इस ग़ज़ब के हमले के गुज़र जाने का धीरज से इंतज़ार कर रहा हो।

वो भी क्या महीने गुज़रे! खैर, छोड़ो। ऐसी कई वारदातें होती रहीं। एक शाम खद्दर, कपास, प्रिंट के कपड़े, मनके और पता नहीं क्या-क्या से भरे एक गोदाम में अचानक आग की ऐसी लपटें चमकीं कि देख कर लगता था कि उस कचरे को खा जाने को धरती ने अपना सीना फाड़ कर बदला लेती आग भड़का दी है। मैं अपने खुले पुर्ज़ों वाले स्टीमर के पास बैठ आराम से अपना पाइप पी रहा था और मैंने देखा कि वे सब अपने हाथ ऊपर किए रोशनी में उछल रहे हैं, जब मूँछों वाला तगड़ा बंदा हाथों में टिन की बाल्टी लिए दौड़ता हुआ नदी तक आया, सबको आश्वस्त किया कि हर कोई 'दुरुस्त है, बिल्कुल दुरुस्त', कोई लिटर भर पानी डाला और वापस भागा। मैंने देखा कि उसकी बाल्टी में नीचे छेद था।

मैं चल कर गया। कोई जल्दी न थी। आग यूँ भड़की थी जैसे कोई दियासलाई का बक्सा हो। शुरू से ही कोई उम्मीद न थी। लपटें ऊँची उठीं, सबको पीछे भगाया, हर चीज़ को जला दिया—और फिर बुझ गईं। गोदाम अब तक धू-धू जलते अंगारों का ढेर बन ही चुका था। पास ही एक काले आदमी को पीटा जा रहा था। लोगों का कहना था कि उसी ने किसी तरह आग लगाई थी। जो भी हो, वह भयंकर तरीक़े से चीख़ रहा था। बाद में कई दिनों तक मैंने उसे थोड़ी-सी छाया में बहुत बीमार हाल में और ख़ुद पर क़ाबू पाने की कोशिश में बैठे देखा। इसके बाद वह उठा और चला गया—और जंगल ने बिना किसी शोर के उसे अपने सीने में ले लिया। मैं अँधेरे से रोशनी की ओर आया। मैंने ख़ुद को बातें करते हुए दो लोगों के पीछे खड़ा पाया। मैंने कुर्त्ज़ का नाम सुना और फिर 'इस दुःखद घटना का फ़ायदा उठाओ' शब्द सुने। उन लोगों में से एक मैनेजर था। मैंने उसे नमस्कार कहा।

'तुमने कभी ऐसा देखा है—हाँ? कमाल ही है,' उसने कहा, और आगे निकल गया। दूसरा आदमी वहीं खड़ा रहा। वह युवा, विनम्र, थोड़ा संकोची, उम्दा दर्जे का एजेंट था, चेहरे पर दो हिस्सों में बँटी छोटी दाढ़ी थी और नाक तीख़ी थी। दूसरे एजेंटों से वह अलग रहता और वे कहते कि वह मैनेजर की ओर से उन पर जासूसी करता है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने उससे शायद ही कभी पहले बात की थी। हम आपस में बातचीत करने लगे, और धीरे-धीरे सुलगते अवशेषों से दूर आ गए। फिर उसने मुझे अपने कमरे बुला लिया, जो अड्डे की मुख्य इमारत में था। उसने सलाई जलाई और मैंने देखा कि इस अभिजात युवा के पास न केवल एक चाँदी की कढ़ाई किया हुआ साज-सज्जा के सामान का बक्सा था, बल्कि सिर्फ़ अपने लिए रोशनी के इंतज़ाम का सामान भी उसके पास था। उस वक़्त सिर्फ़ मैनेजर को अकेले यह हक़ था कि उसके पास रोशनी के लिए मोमबत्तियाँ हों। मिट्टी की दीवारों पर स्थानीय कारीगरी वाली चादरें चढ़ी थीं; कुछेक बरछे, कुछ आसेगाई* बरछियाँ, भाले, कटारें आदि जीत के स्मारकों की तरह लटके थे। मुझे बतलाया गया था कि इस बंदे को ईंटें बनाने का काम दिया गया था, पर अड्डे में कहीं भी ईंट का एक टुकड़ा तक नहीं था; और उसे वहाँ आए एक साल से ज़्यादा हो चुका था—अब भी वह इंतज़ार में था। अनुमान था कि ईंटें बनाने के लिए उसे कुछ सामान—पता नहीं क्या—शायद पुआल—चाहिए था। खैर, वहाँ वह मिलता न था और यूरोप से भेजे जाने की कोई संभावना न थी, इसलिए मुझे स्पष्ट नहीं था कि वह किसलिए इंतज़ार कर रहा था। शायद कोई जादू होना था। पर वे सभी किसी चीज़ के इंतज़ार में थे—वे जो सोलह या बीसेक यात्री थे; और यक़ीन मानो उन्हें देख कर लगता नहीं था कि वे काम से नाख़ुश हैं, हालाँकि मेरी जानकारी में उन सबके साथ एक ही अनहोनी होती थी—बीमारी। वे एक-दूसरे के ख़िलाफ़ षड्यंत्र और परस्पर नुकसान कर

* आसेगाई : बंतू उपजाति के लोगों की पतली बरछी

उजबकों की तरह अपना समय बिता रहे थे। उस अड्डे की हवा में षड्यंत्र की बू थी, पर उससे कतई कुछ निकला नहीं। बाक़ी सब कुछ—पीरी संस्था के परोपकारी दिखावे, उनकी डींगें, उनके शासन, उनके श्रम के दिखावे—की तरह यह भी ज़मीनी सचाई से दूर था। एक ही बात सच दिखती थी कि वे ऐसी जगह पोस्टिंग चाहते थे जहाँ हाथी के दाँत का सौदा होता था, ताकि वे अपना हिस्सा कमा सकें। बस इसी के लिए वे षड्यंत्र करते और एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बोलते रहते, पर सचमुच किसी का नुकसान करने के लिए कभी उँगली भी उठाई हो—ऐसा कभी नहीं। अरे भई, एक आदमी घोड़ा चुराए और दूसरा लगाम तक को न देखे, वह भी कैसी दुनिया है! घोड़ा चुराना है तो चुरा लिया। ठीक है। जिसने करना है कर लिया। अब वह उस पर चढ़ भी जाएगा। पर लगाम जब दिखती है तो भले से भला संत भी बिदक उठता है।

मुझे कोई अंदाज़ा न था कि वह मेरे साथ गपशप क्यों करना चाहता है, पर वहाँ बैठे बातें करते हुए मुझे अचानक अहसास हुआ कि उसका कोई मक़सद है—दरअसल वह मुझसे बातें निकालने की कोशिश में था। वह बार-बार यूरोप के ऐसे लोग, जिन्हें मैं जानता था, उनकी बात करता—उस मक़बरा बन चुके शहर में मेरे जानकार कौन हो सकते हैं, उन से जुड़े खुफ़िया सवाल, आदि। उसकी छोटी आँखें उत्सुकता से अभ्रक की चकतियों-सी चमक रही थीं—हालाँकि वह एक सतही उदासीनता बनाए रखने की कोशिश भी कर रहा था। पहले मुझे आश्चर्य हुआ, फिर मुझे बड़ी उत्सुकता हुई कि देखते हैं वह मुझसे क्या कुछ जान सकता है। मेरी कल्पना में नहीं था कि मेरी जानकारी में उसके काम आने लायक़ कोई बात भी होगी। देखकर बड़ा मज़ा आ रहा था कि वह कैसे इस कोशिश में परेशान था, जबकि मेरा बदन महज ठंडा था और मेरे दिमाग़ में उस मनहूस स्टीमबोट का मामला फँसा था। यह साफ़ था कि वह मुझे बेशर्म झूठा समझ रहा था। आख़िर उसे ग़ुस्सा आ गया, और

ग़ुस्से या बदमिज़ाजी की हरकतों से बचने के लिए उसने उबासी ली। मैं उठा। फिर मुझे एक पैनेल में लगा छोटा तैलचित्र दिखा, जिसमें हाथ में जलती मशाल थामे, कपड़ों में सजी और आँखों पर पट्टी बाँधे एक स्त्री की तस्वीर थी। पीछे का दृश्य गंभीर—तक़रीबन पूरा काला—था। स्त्री की चाल में वज़न था और मशाल की वजह से भय-सा पैदा होता था।

इस तस्वीर ने मेरा ध्यान बाँध लिया, और वह सौजन्य के साथ हाथ में मोमबत्ती फँसी आधे पाइंट की शराब (स्वास्थ्य सुविधाएँ) की खाली शीशी लिए खड़ा रहा। मेरे पूछने पर उसने बतलाया कि साल भर से भी पहले व्यापार के काम पर नियुक्ति का इंतज़ार करते हुए—इसी अड्डे में मिस्टर कुर्त्ज़ ने वह तस्वीर बनाई थी।

'कृपया मुझे बतलाइएं,' मैंने पूछा, 'ये मिस्टर कुर्त्ज़ कौन हैं?'

'भीतरी अड्डे के प्रमुख,' उसने नज़र परे हटाते हुए बात को संक्षिप्त रखा।

'शुक्रिया,' मैंने हँसते हुए कहा, 'और आप मुख्य अड्डे के ईंट बनाने वाले हैं। हर कोई यह बात जानता है।'

वह थोड़ी देर चुप रहा।

'वे होनहार हैं,' आख़िर उसने कहा, 'वे करुणा, और विज्ञान और प्रगति, और ख़ुदा जाने क्या-क्या के अग्रदूत हैं। 'हमारी ख़्वाहिश है कि,' अचानक उसने भाषण देना शुरू किया, 'यूरोप ने हमें जो काम सौंपा है, उसके लिए हमें मार्गदर्शन, यानी उच्चतर मेधा, व्यापक सहानुभूति और उद्देश्य की एकाग्रता का आदर्श मिले।'

मैंने पूछा, 'ऐसा कौन कहता है?'

उसने जवाब दिया, 'कई लोग।' 'कई ऐसा लिखते भी हैं, आपको पता होना चाहिए कि इसीलिए वह ख़ास शख़्स यहाँ आए हैं।' मैंने सचमुच अचंभित होकर उसे रोका, 'मुझे क्यों पता होना चाहिए?' उसने मेरी बात पर ध्यान न दिया।

'हाँ, आज वह सबसे बेहतर अड्डे के प्रमुख हैं, अगले साल वे सहायक मैनेजर हो जाएँगे....पर मैं समझता हूँ कि आप तो जानते ही हैं कि दो सालों बाद वह किस पद पर पहुँच जाएँगे। आप भी तो उसी नए समूह के—भले लोगों के समूह—के हैं। जिन लोगों ने उन्हें ख़ास तौर पर भेजा है, उन्हीं ने आपकी सिफ़ारिश भी की है। अब इनकार मत कीजिएगा। मैंने अपनी आँखों से सब देखा है।'

मुझे रोशनी मिली। इस युवक पर मेरी प्रिय मौसी का अनपेक्षित असर पड़ रहा था। मैं तो हँस ही पड़ता। मैंने पूछा, 'क्या आप कंपनी के गोपनीय काग़ज़ात पढ़ते हैं?'

वह चुप रहा। मुझे बड़ा मजा आ रहा था। मैंने गंभीरता से कहा, 'जब मिस्टर कुर्त्ज़ जनरल मैनेजर हो जाएँगे, आपको यह मौक़ा फिर न मिलेगा।'

उसने अचानक फूँक मार कर बत्ती बुझा दी, और हम बाहर आ गए। चाँद निकला हुआ था। बेआवाज़ काली आकृतियाँ अंगारों पर पानी फेंकती आ-जा रही थीं, जिससे सुलगने की हिस्स की आवाज़ आती; चाँदनी में भाप ऊपर को चढ़ती, पिटा हुआ काला आदमी कहीं चीख़ उठता।

'गँवार चीख़ रहा है बेइंतहा!' मूँछों वाले अथक बंदे ने सामने आते हुए कहा। 'अच्छा हुआ साले को! क़ानून तोड़ा, सजा—धड़ाम! बेरहमी, बेरहमी। यही एक तरीक़ा है। इसी से आगे अब कोई ख़तरनाक चिनगारी नहीं भड़केगी। मैं मैनेजर को कह ही रहा था....' उसने मेरे साथ के व्यक्ति को देखा और उसका उत्साह तुरत बुझ गया।

'अभी सोए नहीं,' भरपूर ग़ुलामी की भावना के साथ उसने पूछा, 'ठीक ही है। हा! ख़तरा—बेचैनी।'

वह ग़ायब हो गया। मैं नदी किनारे गया और दूसरा आदमी मेरे पीछे-पीछे आया। मुझे मेरे कान के पास तीखी नफ़रत भरी बड़बड़ाहट सुनाई पड़ी, 'गँवारों का झुंड—भागो साले।'

भंगिमाओं के साथ चर्चा करते हुए यात्री समूह में दिखे। कइयों के हाथों में अभी तक सोटे थे। मुझे सचमुच लगता है कि वे सोटों को साथ रख सोते थे। बाड़े के पार चाँदनी में जंगल एक नज़ारा था, और उस दयनीय आँगन की हल्की आवाज़ों, उस हल्की हलचल के बीच फिज़ां का सन्नाटा—उसका रहस्य, उसकी विशालता, छिपी-सी जीवंतता का अद्‌भुत यथार्थ—दिल की गहराइयों तक पहुँच रहे थे। पिटा हुआ काला आदमी कहीं पास में ही कराह रहा था, और फिर उसने एक ऐसी गहरी साँस ली कि मैं वहाँ से अपने क़दम दूर ले चला। मेरी बाँह के नीचे एक हाथ बढ़ता-सा आया, 'भाई साहब,' उस आदमी ने कहा, 'मुझे ग़लत न समझें, ख़ासतौर से आप, चूँकि मिस्टर कुर्त्ज़ के साथ मुझे मिलने का मौक़ा मिलने से कहीं पहले आप उनसे मिलने वाले हैं। मैं नहीं चाहता कि उन्हें मेरे स्वभाव के बारे में कोई ग़लतफ़हमी हो....।'

उस काग़ज़ी (खोखली शख़्सियत) मेफिस्टोफिलिस* (शैतान) को मैंने बोलने से रोका नहीं। मुझे लगा कि मैं अगर उसके बदन में अपनी उँगली दबाऊँ तो वह उसके अंदर से गुज़र जाएगी और मुझे अंदर हल्की गर्द के सिवा कुछ न मिलेगा। अरे, वह तो मौजूदा अधिकारी के साथ काम करते हुए धीरे-धीरे सहयोगी मैनेजर बनना चाहता था और मुझे दिख रहा था कि कुर्त्ज़ के आने से दोनों को ही ख़ासी समस्या हो रही थी। वह बेरोक बोलता जा रहा था, और मैंने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। मेरे कंधे ढलान पर नदी में बसने वाले किसी दैत्याकार जानवर की लाश जैसे पड़े मेरे स्टीमर के अवशेष पर टिके थे। मिट्टी की गंध, आदिम मिट्टी की वह गंध, हे प्रभु! मेरे नाक उस गंध से भरे थे, आदिम जंगल की अगाध शांति मेरी आँखों के सामने थी; काले सोते पर चमकते

*मेफिस्टोफिलिस : जर्मन लोक-साहित्य के अलावा दीगर पश्चिमी कृतियों में मेफिस्टो का ज़िक्र गाहे-बगाहे शैतान के रूप में आता है। उन्नीसवीं सदी के जर्मन साहित्यिक गेठे के कालजयी त्रासद नाटक 'फाउस्ट' में खलनायक मेफिस्टोफिलिस के रूपक का इस्तेमाल है।

धब्बे दिख रहे थे। विस्तृत घास पर, मिट्टी पर, किसी मंदिर की दीवारों से भी ऊँची हरीतिमा की सजी दीवार पर, उन्हीं के बीच एक प्रशांत खिड़की में से दिखती विशाल चमकती, पास से शांत बहती चौड़ी नदी पर—हर चीज़ पर चाँदनी ने चाँदी की पतली परत बिछा दी थी। यह सबकुछ अद्‌भुत, आशाओं से भरा हुआ, शांत था, बस वह बंदा ख़ुद से कुछ बोले जा रहा था। मेरे मन में सवाल उठा कि यह जो विशालता का चेहरा हम दोनों को ताक रहा था, उस पर छाई शांति हमारे प्रति कोई प्रार्थना थी या चेतावनी। यहाँ भटक आए हम लोग कौन थे? यह मूक छवि हमारे नियंत्रण में थी या हम उसके हाथों में थे? मुझे यह अहसास हो रहा था कि वह मूंक छवि कितनी विशाल थी, कितनी अचंभित करने वाली विशालता लिए थी, और संभवतः उसे कुछ सुनाई भी न पड़ता हो। उसके अंदर क्या था? मैंने सुना था कि मिस्टर कुर्त्ज़ वहाँ अंदर कहीं है और मैं वहाँ से थोड़े से हाथी के दाँत निकलते देख रहा था। प्रभु की क़सम! मैंने इसके बारे में काफ़ी सुना भी हुआ था। फिर भी अगर कोई कहता कि वहाँ अंदर कोई फ़रिश्ता या प्रेत है, उससे ज़्यादा कोई स्पष्ट छवि नहीं बन पा रही थी। मैंने इसे वैसे ही मान लिया जैसे तुम में से कोई मान ले कि मंगल ग्रह पर लोग रहते हैं। कभी मैं एक स्कॉट नौ-कारीगर को जानता था जो मंगल ग्रह में लोगों के रहने पर पूरा, बिल्कुल पक्का यक़ीन करता था। अगर उससे पूछ लिया कि उनके शक्ल और आचरण कैसे थे, तो वह शर्मा जाता और 'चार पैरों पर चलते हैं' जैसा कुछ बड़बड़ाता। अगर हम ज़रा मुस्करा तक दिए तो वह—हालाँकि साठ साल का था—लड़ने आ जाता। मिस्टर कुर्त्ज़ के लिए मैंने किसी से लड़ाई तो न मोल ली होती, पर मैं उसके लिए झूठ बोलने की कगार तक गया। तुम जानते हो कि मुझे झूठ से नफ़रत है, मैं झूठ बोलना सह नहीं पाता और इससे चिढ़ता हूँ, इसलिए नहीं कि मैं कोई दूसरों से बेहतर हूँ, बल्कि इसलिए कि मैं इससे आतंकित हो जाता हूँ। मिथ्या में मृत्यु की छाया, नश्वरता की बू-सी होती है—और यही मैं भूलना

चाहता हूँ। दुनिया में इसी बात से मुझे नफ़रत और नापसंदगी है। इससे मैं पीड़ित और बीमार हो जाता हूँ, जैसे किसी सड़ी चीज़ को खाने पर होता है। शायद यह मेरा स्वभाव है। यूरोप में मेरे प्रभाव को लेकर उस बेवकूफ़ युवक को जो मर्ज़ी सोचने देने में मैं झूठ की सीमा तक पहुँच गया। एक क्षण में मैं भी बाक़ी सम्मोहित यात्रियों की तरह नक़ली शख्सियत बन गया। तुम समझ सकते हो कि ऐसा इसलिए हुआ कि मुझे लगा कि इससे उस अभी तक न मिले कुर्त्ज़ को कोई फ़ायदा होगा। मेरे लिए वह केवल एक नाम था। उस नाम में मौजूद आदमी को मैंने उतना ही जाना था जितना अभी तुम जानते हो। क्या तुम उसे देख पाते हो? तुम्हें कहानी समझ में आ रही है? तुम्हें कुछ दिख रहा है? मुझे लगता है कि मैं तुम्हें एक सपने के बारे में बतला रहा हूँ—एक असफल कोशिश कर रहा हूँ, क्योंकि सपने का कोई भी विवरण सपने के अहसास को, जूझते विद्रोह के कंपन में मौजूद बेतुकेपन, आश्चर्य और घबराहट की उस खिचड़ी को, सपनों के अद्‌भुत सार-तत्त्व में जकड़े जाने के ख़याल को.... नहीं समझा सकता।'

कुछ देर वह चुप रहा।

'....न, यह असंभव है, अस्तित्व के किसी ख़ास अवधि के जीवंत अहसासों को—जिनसे उसका सच, उसका अर्थ—उसका सूक्ष्म और गहरा सार बनता है, समझा पाना असंभव है। हम अपने सपनों में जीते हैं—अकेले....'

वह फिर कुछ सोचता-सा चुप हो गया, फिर बोला—'हाँ, उस वक़्त मैं जितना समझ पाया, आज तुम इन बातों में उससे ज़्यादा समझ पा रहे हो। आख़िर मुझे तुम जानते हो, और मुझे देख पा रहे हो....'

अँधेरा इतना घना हो गया था कि हम सुनने वाले आपस में एक दूसरे तक को साफ़ न देख पा रहे थे। पहले से ही अलग बैठा वह, लंबे समय तक हमारे लिए महज एक आवाज़ था। किसी ने चूँ तक न की

थी। दूसरे शायद सो गए थे, पर मैं जगा हुआ था। मैं सुन रहा था, ऐसे हर शब्द को मैं ध्यान से सुन रहा था, जिससे नदी पर रात से भारी होती हवा में इस आख्यान से प्रेरित हल्की बेचैनी का कोई सूत्र मिल सके, जो मानवीय होंठों के बिना अपने आप ही आकार लेती जा रही थी।

'.... हाँ—मैंने उसे बोलते रहने दिया,' मार्लो ने फिर कहना शुरू किया, 'और मेरे पीछे जिन भी ताक़तवर लोगों की जैसी भी कल्पना उसे करने दी। हाँ जी! और मेरे पीछे कुछ नहीं था! जबकि वह 'हर आदमी के बढ़ते रहने की ज़रूरत' के बारे में धाराप्रवाह बोलता जा रहा था, मेरे पीछे उस बुरे हाल, पुराने, टूटे-फूटे स्टीमर के सिवाय कुछ न था, जिस पर मैं पीठ टिकाए हुए था।

'और आप सोचिए कि कोई यहाँ आए तो चाँद देखने नहीं आता है।' मिस्टर कुर्त्ज़ 'सर्वप्रतिभासंपन्न' हैं, पर प्रतिभावान आदमी को भी 'उचित साजो-सामान—बुद्धिमान सहयोगियों' की ज़रूरत होती है। वह ईंटें नहीं बना रहा था—इस काम में भौतिक अवरोध थे—जिनसे मैं अच्छी तरह वाक़िफ़ था; और मैनेजर के लिए जो लिखापढ़ी का काम वह कर रहा था, वह इसलिए कि 'कोई भी समझदार आदमी अपने ऊपर के अधिकारियों के भरोसे को नासमझी से ठुकराता नहीं।' क्या मेरी समझ में बात आ रही थी? मैं समझ गया। और मुझे क्या चाहिएं? मुझे तो ख़ुदा के वास्ते मोटे पेंदे वाली कीलें, रिवेट, चाहिए थीं! ताकि मैं काम आगे बढ़ाऊँ, छेद भर सकूँ। रिवेट चाहिए थीं। तट पर रिवेटों की पेटियाँ पड़ी थीं—पेटियाँ—एक पर एक लदीं—खुली टूटीं! पहाड़ी किनारे उस स्टेशन-यार्ड पर हर कहीं कोई रिवेट पैर से टकराती। रिवेट मौत के झुरमुट में खो गई थीं। वहाँ झुकने भर की ज़िल्लत से रिवेट से जेब भरी जा सकती थी—और जहाँ ज़रूरत थी, वहाँ एक भी न थी। कामचलाऊ ढक्कन थे, पर उनको टिकाने के लिए कुछ न था। और हर हफ़्ते एक लंबा नीग्रो संदेशवाहक कंधे पर चिट्ठियों का झोला और

हाथ में लाठी लिए, हमारे स्टेशन से तट को जाता। और हफ़्ते में कई बार तट से सौदे का सामान—चमकता घटिया छींट का कपड़ा, जिसे देखते ही बदन काँप उठता, एक पाई में पाव भर काँच के मनके, गड्डमड्ड धब्बों वाले कपास के रुमाल—लिए कारवाँ आता और कोई रिवेट नहीं। स्टीमबोट को वापस तैराने के लिए ज़रूरी सामान लाने के लिए तीन वाहक काफ़ी थे।

उसमें अब मेरे प्रति भरोसा बढ़ रहा था, पर मुझे लगता है कि मुझसे कोई ख़ास जवाब न मिलने पर वह आख़िरकार थकने लगा होगा, क्योंकि उसने मुझे यह बतलाना उचित समझा कि उसे न तो ख़ुदा न शैतान का ही ख़ौफ़ था, किसी आदमी से तो क्या डरना। मैंने कहा कि वह तो मेरी समझ में आ रहा था, पर मुझे अच्छी तादाद में रिवेट चाहिए थे—और अगर मिस्टर कुर्त्ज़ को पता चले तो उन्हें भी रिवेट ही चाहिए होंगे। आख़िर, हर हफ़्ते तट की ओर चिट्ठियाँ जा रही हैं....। 'भाई साहब,' वह चीख़ा, 'मैं निर्देश मिलने पर ही लिखता हूँ।'

मैंने रिवेटों की माँग रखी। समझदार आदमी के लिए कोई परेशानी न थी। तरीक़ा होगा—समझदार आदमी समझ लें। उसका अंदाज़ बदला; बातों में ठंडक आ गई, और अचानक वह एक दरियाई घोड़े की बात करने लगा; पूछा कि स्टीमर पर सोने से मैं उसकी वजह से परेशान न होता होऊँ (मैं रात दिन मरम्मत के काम में लगा था)। मुझे कोई परेशानी न थी। वहाँ एक बूढ़ा दरियाई घोड़ा था, जिसे रात को किनारे पर चढ़कर स्टेशन के मैदान में चक्कर काटने की बुरी आदत थी। यात्री सभी इकट्ठे निकलकर जितनी राइफिलें मिलतीं सारी की सारी उस पर दाग देते। कुछ तो रात भर उसके लिए जगे बैठे रहते। वैसे यह सारी ऊर्जा बेकार जाती।

'वह जानवर मस्त है,' उसने कहा, 'पर यह बात आप इस मुल्क में सिर्फ़ पशुओं के लिए कह सकते हैं। किसी आदमी के लिए नहीं—आप मेरी बात समझ रहे हैं न? कोई इंसान मस्त नहीं जी सकता।'

एक पल वहाँ चाँदनी में अपनी नाज़ुक टेढ़ी नाक थोड़ी और तिरछी किए और बिना पलक झपके चमकती अभ्रक आँखें लिए वह खड़ा रहा, और फिर रुखाई से नमस्कार कहकर चलता बना। मैं समझ रहा था कि वह परेशान और काफ़ी उलझा हुआ है और इससे कई दिनों के बाद मुझमें पहले से अधिक उम्मीद जगी। उस बंदे से हटकर पिटी, मरोड़ी, नष्ट हो चुकी, खटपटिया, अपने प्रभावशाली मित्र स्टीमर पर ध्यान देने में काफ़ी संतोष मिल रहा था। मैं किसी तरह उसके ऊपर चढ़ा। मेरे पैरों के नीचे उसमें से ऐसी आवाज़ें आईं, जैसे बिस्कुट बनाने वाली कंपनी हंटली और पामर के टिन के डब्बे को नाली में ठोकरें मारी जा रही हों। वह कमज़ोर चादर की बनावट की और बदशक्ल सी स्टीमबोट थी, पर मैं उस पर इतनी मेहनत लगा चुका था कि मुझे उससे लगाव हो गया था। कोई प्रभावशाली दोस्त मेरे लिए उससे बेहतर नहीं हो सकता था। उसने मुझे खुले में निकलने का मौक़ा दिया था—यह जानने के लिए कि मैं क्या कुछ कर सकता हूँ। नहीं, काम करना मुझे अच्छा नहीं लगता। आरामतलबी और बेहतर जो कुछ किया जा सकता है, सोचते रहना मुझे अधिक पसंद है। मैं काम नहीं करना चाहता—कोई नहीं करना चाहता—पर मुझे काम में जो है, ख़ुद को जानने का मौक़ा—यह पसंद है। अपनी सचाई—दूसरों के लिए नहीं, अपने लिए—कोई दूसरा जिसे कभी नहीं जान सकता। वे बस बाहरी खेल देख सकते हैं, और कभी नहीं जान सकते कि अस्लियत क्या है।

छत के किनार पर किसी को मिट्टी के ऊपर पैर लटकाए बैठे देखकर मुझे कोई आश्चर्य न हुआ। उस अड्डे पर बाक़ी गोरे जिन से आदतन दूरी रखते थे—शायद उनके गँवारपन की वजह से—ऐसे कुछ कारीगरों से मैंने दोस्ती की हुई थी। वह एक फोरमैन था—उसका काम बॉयलर (भाप की देगचियाँ) बनाना था—वह उम्दा कारीगर था। वह दुबला, हड़ीले शरीर का और बड़ी घनी आँखों वाली पीली शक्ल का था। वह परेशान-सा दिखता था, और उसका सिर मेरी हथेली-सा गंजा था। उसके झड़ते

बाल मानो उसकी ठुड्डी में अटक गए थे, और इस नई जगह पर फ़सल अच्छी फली थी, क्योंकि उसकी दाढ़ी कमर तक आ चुकी थी। वह छः बच्चों वाला विधुर था (ख़ुद वहाँ आने के लिए उनको अपनी एक बहन के पास छोड़ आया था), और उसका सबसे बड़ा शौक़ कबूतरबाज़ी था। वह जोशीला और जानकार आदमी था। कबूतरों के बारे में वह बढ़-बढ़ कर बोलता। दिन का काम ख़त्म होने पर वह कभी-कभार अपने बच्चों और कबूतरों की बातें करने आ जाता। काम के दौरान जब उसे स्टीमबोट के नीचे मिट्टी में रेंगना पड़ता तो वह अपनी दाढ़ी को एक सफ़ेद गमछे जैसे कपड़े में बाँध लेता जो वह इसी काम के लिए लेकर आया था। उसमें कानों पर चढ़ाने के लिए फंदे बने हुए थे। शाम को उसे सोते के किनारे बैठे बड़ी सावधानी से उस गमछे को साफ़ कर और फिर गंभीरता से झाड़ियों पर सूखने के लिए डालते देखा जा सकता था।

मैंने उसकी पीठ पर थपकी दी और चिल्ला कर कहा, 'हमें रिवेट मिल जाएँगे!' वह पैरों पर उठ खड़ा हुआ और जैसे कि उसे अपने कानों सुनी पर यक़ीन न हो रहा हो, विस्मय से बोला, 'सच! रिवेट!' फिर धीरे से कहा, 'तुम.... सच?' पता नहीं हम पागलों जैसा बर्ताव क्यों कर रहे थे। मैंने नाक के एक ओर उँगली रखी और रहस्यमय ढंग से सिर हिलाया। उसने एक पैर उठाकर, सिर के ऊपर उँगलियाँ चटखाईं और ज़ोर से बोला, 'क्या बात!' मैंने भी नाचने की कोशिश की। हम डैक पर उछलते रहे। उस ढाँचे से एक डरावनी खड़खड़ की आवाज़ निकली और सोते के दूसरी ओर फैले जंगल ने उस निंदियाए स्टेशन पर गरजती लहरों सा उसे वापस बिखेर दिया। इससे कुछेक गोरे तो अपनी झोंपड़ियों में उठ बैठे होंगे। मैनेजर की झोंपड़ी के दरवाज़े के सामने की पगडंगी पर एक काली आकृति आई, ग़ायब हो गई और फिर एक दो पलों में वह दरवाज़े की ओर जाती पगडंगी ही ग़ायब हो गई। हम रुके, और हमारे पैरों की थाप से पीछे हट चुका सन्नाटा ज़मीं के विस्तार से वापस बहता

आया। चाँदनी में स्तब्ध पेड़ों के भरे और उलझे तनों, शाखाओं, पत्तियों, टहनियों, झालरों से बनी वनस्पति की विशाल दीवार एक बेआवाज़ जीवंतता का उन्मत्त आक्रमण जैसी थी। पौधों की एक उमड़ती लहर थी, लहर पर लहर, शिखर पर, जो हममें से हरेक इंसान को अपने सामान्य जीवन से निकाल फेंकने आ रही थी। और वह हिल नहीं रही थी। दूर से टूटती जा रही लहरों की उफनती चिंघाड़ें हम तक आ रही थीं, मानो कोई इक्थियोसॉरस* उस बड़ी नदी में रोशनी से नहा रहा हो। बॉयलर बनाने वाले ने आराम से कहा, 'आख़िर हमें रिवेट क्यों न मिलेंगे?' सचमुच क्यों नहीं! मुझे उनके न मिलने की कोई वजह मालूम न थी। 'तीन हफ़्ते में सारे पहुँच जाएँगे,' मैंने पूरे यक़ीन से कहा।

पर वे नहीं आए। रिवेट की जगह हम पर किसी का हमला हुआ, एक बीमारी आई और किसी का प्रादुर्भाव हुआ। अगले तीन हफ़्तों के दौरान अलग-अलग टुकड़ों में ऐसा हुआ, हर बार नए कपड़े और चमकते जूते पहने किसी गोरे आदमी को ढोते एक गधे की शक्ल में यह हुआ; वह आदमी ऊँचाई से दाएँ-बाएँ झुक कर सलाम करता गोरों को प्रभावित करता हुआ आया। छिल गए पैरों वाले थके हुए काले लोग झुंड में लड़ते-झगड़ते हुए गधे के पीछे दौड़ रहे थे। कई सारे तंबू, बैठने के स्टूल, टिन के बक्से, सफ़ेद डिब्बे, भूरे गट्ठर आँगन में फेंके गए, जिससे अड्डे पर मौजूद ताम-झाम में रहस्य का अहसास और घना हो गया। ऐसी पाँच किस्तें पहुँचीं, साथ अनगिनत कपड़ों की दूकानों और किराने की दूकानों से लाई इस बिखरी हुई लूट का बेतुका शोर था, देख कर लगता था जैसे कि हमला ख़त्म होने के बाद यह सारा सामान जंगल में बराबर हिस्सों में बाँटने के लिए ढो कर लाया गया हो। यह सब समझ न आने वाली ऐसी उलझी हुई बातें थीं, जो अपने आप में सही लगती थीं, पर उस इंसानी बेवकूफ़ी को देखकर यह डकैती का सामान लग रहा था।

---

* इक्थियोसॉरस : 2 करोड़ साल पहले धरती पर रहने वाले विशाल समुद्री सरीसृप

यह समर्पित गिरोह अपने आप को एल डोराडो* का खोजी अभियान कहता था और मेरा ख़याल है कि उन्होंने गोपनीयता की शपथ ली हुई थी। पर उनकी बातचीत लुटेरों-डकैतों जैसी थीः उसमें दृढ़ता नहीं, बड़बोलापन था, साहस नहीं लोभ था, हिम्मत नहीं क्रूरता थी; उन सभी में दूरदृष्टि या गंभीर सोच का लेशमात्र भी न था और लगता था कि उन्हें यह समझ भी नहीं है कि दुनिया में सार्थक जीवन के लिए इन गुणों की ज़रूरत होती है। उनकी तमन्ना ज़मीं को चीरकर ख़ज़ाना निकालने भर की थी, और इसके पीछे तिज़ोरी लूटते डकैतों से अधिक कोई नैतिक उद्देश्य न था। मुझे नहीं मालूम कि इस महान कार्य के लिए पैसे कहाँ से आए, पर हमारे मैनेजर के चाचा इस गिरोह के नेता थे।

बाहर से वह किसी ग़रीब बस्ती का कसाई दिखता था, और उसकी आँखों में उनींदी धूर्त्तता थी। अपनी छोटी टाँगों पर वह अपनी तोंद को बढ़-चढ़ कर दिखलाता था, और जब तक उसका गिरोह स्टेशन पर रहा, उसने अपने भतीजे के अलावा और किसी से बात न की। सारे दिन अपने माथे एक दूसरे के क़रीब रखते जैसे किसी अंतहीन विमर्श में हों, वे टहलते रहते।

मैंने रिवेटों के बारे में सोचना बंद कर दिया था। हम में उस तरह की मूर्खताओं की क्षमता अपनी कल्पना से कम ही होती है। मैंने कहा, 'गोली मारो!—और चीज़ों को चलने दिया। आत्म-चिंतन के लिए मेरे पास काफ़ी वक़्त था। कभी-कभार मैं कुर्त्ज़ के बारे में सोचता। उसमें मेरी कोई ख़ास रुचि न थी। न। फिर भी मेरे मन में यह जानने की उत्सुकता थी कि यह आदमी जो नैतिक विचारों के साथ आया था, वह कभी ऊपर तक पहुँचेगा भी कि नहीं और अगर वह वहाँ तक पहुँचे तो अपना काम कैसे बढ़ाएगा।'

---

*एल डोराडो : दक्षिणी अमेरिका की मिथकीय स्वर्ण-नगरी, जिसने इस्पानी खोजियों को सदियों तक भरमाया।

दूसरा अध्याय

'एक शाम जब मैं अपनी स्टीमबोट पर सपाट लेटा हुआ था, मुझे क़रीब आती आवाज़ें सुनाई दीं—सोते के किनारे चाचा-भतीजा सैर कर रहे थे। मैंने फिर से अपनी बाँह पर सिर रखा और मैं नींद में डूब ही चुका था कि जैसे किसी ने मेरे कान में कहा : 'मैं छोटे बच्चे-सा निरीह हूँ, पर मुझे यह पसंद नहीं कि कोई मुझे निर्देश दे। आख़िर मैं मैनेजर हूँ—है कि नहीं? उसे वहाँ भेजने के लिए मुझे निर्देश दिया गया था। कमाल है।'....

मैं समझ गया कि दोनों स्टीमबोट के सामने के हिस्से के पास मेरे सिर के नीचे ही खड़े हैं। मैं हिला नहीं; मुझे लगा नहीं कि मुझे हिलने की ज़रूरत हैः मुझे नींद आ रही थी। 'बेशक बुरा लगता है,' चाचा गुर्राया। 'उसने अधिकारियों से आग्रह किया है कि उसे यहाँ भेजा जाए,' दूसरा बोला, 'ताकि वह दिखला सके कि वह क्या कर सकता है और मुझे ऐसे ही निर्देश भेजे गए। देखो बंदे का कितना प्रभाव है। यह चिंता की बात है न?'

दोनों इस बात पर सहमत थे कि यह चिंता की बात है, और फिर उन्होंने कई अजीब टिप्पणियाँ कीं।

'वर्षा लाओ और बढ़िया मौसम—एक आदमी—परिषद—नाक पकड़ कर'—बेतुकी बातों के ऐसे टुकड़े सुनकर मेरी नींद भाग गई और जब तक चाचा ने यह कहा, 'मौसम तुम्हारी इस आफ़त को सुलझा देगा। वह वहाँ अकेला है क्या?' मैं पूरे होशोहवास में आ चुका था।

'हाँ,' मैनेजर ने जवाब दिया; 'उसने अपने सहयोगी को मुझे इन शब्दों में लिखित सूचना देने के लिए नदी द्वारा भेजा : 'इस बेचारे को इस मुल्क से दफ़ा करो। तुम्हारे भेजे ऐसे लोगों के साथ होने से तो मैं अकेला रहना पसंद करूँगा।' इस बात को साल से ऊपर हो गया। ऐसी धृष्टता की आप कल्पना कर सकते हैं!'

'उसके बाद कुछ और हुआ?' दूसरे ने कर्कश आवाज़ में पूछा।

'हाथी के दाँत', भतीजा हिला; 'बहुत सारा—उम्दा क़िस्म का बहुत सारा—वही भेज रहा है, बड़ा ग़ुस्सा आता है।'

'और उसका क्या हुआ?' भारी गुर्राहट ने पूछा।

'रसीद,' मानों गोली चली। फिर चुप्पी। वे कुर्त्ज़ के बारे में बात कर रहे थे।

अब तक मैं पूरी तरह जग चुका था, पर अपनी स्थिति को बदलने का कोई कारण न था, इसलिए आराम से चुपचाप लेटा रहा।

'इतना सारा हाथी दाँत इधर आया कैसे?' बुज़ुर्ग गुर्राया। वह पशोपेश में था। दूसरे ने समझाया कि कुर्त्ज़ के साथ काम कर रहे संकर वर्ण के एक अंग्रेज़ किरानी के भार में वह सामान नौकाओं के बेड़े में आया था; और तब अड्डे में सामान और माल ख़त्म हो चुके थे, इसलिए कुर्त्ज़ ख़ुद उन के साथ यहाँ लौटना चाहता था, पर तीन सौ मील आ चुकने के बाद अचानक उसने वापस लौट जाने का निर्णय लिया। वह चार मल्लाहों के साथ एक छोटी नौका में चल पड़ा। संकर वर्ण का बंदा हाथी दाँत लिए आगे नदी का सफ़र करता रहा। वे दोनों इस बात से अचंभित थे कि ऐसा भी कोई कर सकता है। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि इसकी वजह क्या हो सकती है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं पहली बार कुर्त्ज़ को जान रहा था। मैं साफ़ देख पा रहा थाः छोटी नौका, चार जंगली मल्लाह, और उनके साथ, घर की चिंता, खान-पान सामग्री, मुख्यालय—सबकुछ अचानक पीछे छोड़ अकेला एक गोरा आदमी अपने जंगल की गहराइयों

की ओर, अपने खाली और वीरान अड्डे की ओर, चला। मुझे वजह मालूम न थी। शायद वह महज काम के लिए ही लगन से काम करने वाला आदमी था। सोचो कि बातचीत में उसका नाम एक बार भी नहीं आया था। वह बस 'वह आदमी' था। जहाँ तक मेरी समझ में आया उस संकर-वर्ण आदमी ने बड़ी शिद्दत और हिम्मत के साथ यात्रा पूरी की, और उसका ज़िक्र हमेशा, 'वह बदमाश' कह कर हुआ। उस 'बदमाश' ने सूचना दी थी कि 'आदमी' बहुत बीमार पड़ गया था और पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था.... मेरे नीचे वे दोनों अब थोड़ी दूर चले गए और वहीं थोड़ी दूर पर आगे पीछे घूमते रहे। मैंने सुना : 'सैनिक गुमटी—डॉक्टर—दो सौ मील—अब बिल्कुल अकेले—देर से बच न पाए—नौ महीने—कोई ख़बर नहीं—अजीब अफवाहें।'

वे फिर क़रीब आए और मैनेजर कह रहा था, 'जहाँ तक मुझे पता है, कोई भी नहीं है, पर कोई घुमक्कड़ सौदागर की प्रजाति का कोई—ज़हरीला बंदा आम लोगों से हाथीदाँत छीन रहा हो तो अलग बात है।'

ये अब किसके बारे में बातें कर रहे थे? टुकड़ों में मुझे पता चला कि यह कुर्त्ज़ के इलाक़े के किसी आदमी की बात हो रही थी जिसे मैनेजर पसंद नहीं करता।

'जब तक इन लोगों में से किसी एक को नमूने के बतौर फाँसी पर नहीं चढ़ाया जाता हमें इस अनुचित स्पर्धा से मुक्ति नहीं मिलेगी,' उसने कहा।

'सही है,' दूसरा भुनभुनाया; 'साले को फाँसी चढ़ा दो! क्यों नहीं? कुछ भी—इस मुल्क में कुछ भी किया जा सकता है। मैं यही कह रहा हूँ, यहाँ, मेरी बात सुनो, यहाँ—**यहाँ** तुम्हारी हैसियत को किसी से ख़तरा नहीं है। और हो भी क्यों? अगर तुम मौसम को झेल लो—तो तुम उन सबसे ज़्यादा टिक पाओगे। ख़तरा यूरोप में है; पर वहाँ से चलने के पहले मैंने सब ठीक...,' वे आगे निकल गए और फिसफिसाहट में बातें करने लगे, फिर उनकी आवाज़ फिर से ऊँची हो गई। 'यह जो लगातार

असाधारण देर होती रही है, यह मेरी ग़लती नहीं है। मैंने जो संभव था किया।' मोटा आदमी लंबी साँस लेते हुए बोला, 'बड़े दुःख की बात है।'

'और उसकी बातों में जो बेतुकेपन की जो महामारी है,' दूसरा बोलता रहा; 'जब वह यहाँ था उसने मुझे काफ़ी तंग किया।' 'हर अड्डे को सड़क पर बत्ती की तरह होना चाहिए जो भली दिशा की ओर ले चले, व्यापार का केंद्र तो होना ही है, पर साथ ही मानवता, तरक्की, शिक्षा का केंद्र भी वह हो।' सोचो—वह बेवकूफ़! और वह मैनेजर बनना चाहता है! नहीं। यह—।' इतना कहकर उसका गला बढ़ती हुई झल्लाहट से रुँधने लगा, और मैंने अपना सिर थोड़ा-सा उठाया। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि वे मेरे कितने क़रीब थे—बिल्कुल मेरे नीचे। मैं थूकता तो उनकी टोपियों पर थूक गिरता। वे ख़यालों में खोए हुए नीचे की ओर देख रहे थे। मैनेजर एक पतली टहनी से अपने पैरों को सँवार रहा था; उसके ज्ञानी संबंधी ने अपना सिर उठाया।

उसने पूछा, 'इस बार यहाँ आने के बाद से तुम स्वस्थ रहे हो न?' दूसरा चौंक-सा उठा। 'कौन? मैं? अरे! चंगेदिल—बिल्कुल चंगेहाल। पर बाक़ी सब—हे प्रभु! सब बीमार हैं। वे इतनी जल्दी मर भी जाते हैं कि मैं उनको मुल्क से बाहर भी नहीं निकाल सकता—कमाल ही है!'

'हाँ, सही है,' चाचा भुनभुनाया। 'आह! बेटा, इस पर छोड़ दो—मैं कहता हूँ, इस पर छोड़ दो।' मैंने देखा कि उसने अपनी सपाट पतवार जैसी बाँह यूँ फैलाई कि उस भंगिमा ने जंगल, दर्रे, कीचड़, नदियाँ, सब समेट लिए। लग रहा था कि वह धूप की चमक में खिलती ज़मीं के चेहरे को धत्ता बतलाते हुए उसके जिगर के गहरे अँधेरे को, छिपे हुए शैतान और मँडराती मौत को छल भरा न्यौता दे रहा था। यह इतना चौंकाने वाला था कि मैं उछल कर पाँवों पर खड़ा हो गया और मैंने जंगल के किनारे को देखा, मानों मेरी उम्मीद थी कि वहाँ से उस ख़ुँख़ार दबंगई का किसी भी तरह का कोई जवाब आएगा। होता है न कि कभी-कभार दिमाग़ में बेवकूफ़ाना

ख़याल आते हैं। उनकी अनधिकार मौजूदगी के ख़त्म होने के इंतज़ार में भारी ख़ौफ़नाक धीरज भरा सन्नाटा उन दोनों का सामना कर रहा था।

मेरे ख़याल से वे ख़ालिस डर के मारे, गालियाँ निकालते हुए इकट्ठे चीख़ पड़े। फिर जैसे कि मेरा वजूद था ही नहीं, अड्डे की तरफ़ मुड़ गए। सूरज छिपने को था; और वे साथ-साथ सामने की ओर झुकते हुए मानों बड़ी शिद्दत से एक भी पत्ती दबाए बिना लंबी घास पर से पैर खींचते हुए, चढ़ान पर उनका पीछा करती अपनी अलग-अलग लंबाई वाली बेतुकी छायाओं को खींचते चले जा रहे थे।

कुछ ही दिनों में एलडोराडो खोजी दल धीरज भरे जंगल में पहुँच गया, और जंगल ने उन्हें ऐसे घेर लिया जैसे समंदर के पानी में गोताखोर खो जाता है। कई दिनों बाद ख़बर पहुँची कि सारे खच्चर मर चुके थे। जो कम क़ीमती जानवर थे, उनका क्या हुआ मुझे नहीं मालूम। बेशक बाक़ी हम लोगों की तरह उनको भी अपना सही भवितव्य मिल गया होगा। मैंने पता नहीं किया। मेरे मन में जल्दी ही कुर्ज़ से मिलने की उत्तेजना थी। जल्दी से मेरा मतलब और बातों की तुलना में है। उस सँकरी खाड़ी से चले ठीक दो महीनों के बाद हम कुर्ज़ के अड्डे के नीचे नदी के किनारे पहुँचे। उस नदी के धार के साथ चलना धरती की शुरुआत में जाने जैसा था, जब धरती पर पेड़-पौधों का बोलबाला था और ऊँचे दरख़्तों का राज चलता था। खाली धार, गहन सन्नाटा, अभेद्य जंगल। हवा गर्म, घनी, भारी, मंद बह रही थी। धूप की चमक में मज़ा न था। लंबी छायाओं भरी दूरियों की उदासी में पानी का एकाकी विस्तार और बहाव था। चाँदी से चमकते रेतीले किनारों पर दरियाई घोड़े और घड़ियाल पास-पास धूप सेंक रहे थे। बहते पानी का विस्तार जंगलों से भरे द्वीपों की भीड़ पार करता बह रहा था। जैसे कोई रेगिस्तान में रास्ता खो बैठता है, वैसे ही उस नदी पर भी भटक जा सकते थे। सही धार ढूँढ़ते रेत के किनारों में सारा दिन गुज़र सकता था, जब तक कि आप मानो अपने अतीत के किसी वजूद से—जो कुछ भी आप की ज़िंदगी में दूर कहीं कभी हुआ था—हमेशा के लिए ख़ुद को बिल्कुल कटा

और बिछुड़ा हुआ न समझने लगो। कभी-कभार अतीत की कोई घटना याद आती, जैसे कभी जब एक पल भी फ़ुर्सत का न मिले, ऐसे में याद आ ही जाती है; पर वह एक बेचैन और शोरगुल वाला सपना बन कर आती, जिसे दरख़्तों, पानी और सन्नाटे की इस अजीब दुनिया की तन-मन पर छा जाने वाली सचाइयों के बीच अचंभे के साथ हम याद करते। और जीवन का यह सन्नाटा कतई कोई पुरअमन माहौल न था। यह किसी अदम्य ताक़त की किसी अनजान ख़्वाहिशं का सन्नाटा था। वह हमें किसी बदले की भावना से घूर रहा था। बाद में मुझे इसकी आदत पड़ गई। मैं इसे देख न पाता। मेरे पास वक़्त न था। मुझे नदी के बहाव का सही अनुमान लगाने की चिंता थी। मुझे मुख्यतः सचेत रहकर छिपे किनारों की पहचान करनी थी; मैं पानी में डूबे हुए पत्थरों पर ध्यान रखे हुए था; जब भी दैवी संयोग से पानी में गिरे किसी ख़तरनाक पेड़ के तने के पास से नौका बच कर गुज़रती, जिससे टकराने से लद्दड़ नौका के टुकड़े हो गए होते और हम सब डूब गए होते, तो मेरे जिगर के पिघलने से पहले मैं हिम्मत से दाँत दबाए रखने की कोशिश करता। मुझे सूखी टहनियों के लिए भी आँखें खुली रखनी थीं कि जिसे हम रात को काट रख सकते ताकि अगले दिन हम स्टीमर का इंजिन चलाने के लिए भाप बना सकें। जब इस तरह की चीज़ों पर, सतह पर हो रही घटनाओं का ध्यान रखना हो, सच्चाई—मैं कहता हूँ— सचाई गुम हो जाती है। अच्छी बात यह कि, ख़ुशक़िस्मती से—भीतरी सचाई छिपी रह जाती है। फिर भी मैं उसके असर को नकार नहीं पा रहा था। मुझे अकसर लगता कि मेरी शरारती करतूतों को उसकी रहस्यमय चुप्पी घूर रही है, जैसे वह तुम्हें घूरती है, जब तुम लोग थोड़े से पैसों पर पलटा खाने के लिए रस्सियों पर बाज़ीगरी किया करते हो—'

'तमीज़ से बात करो, मार्लो,' गुर्राती हुई आवाज़ आई। मैं जान गया कि मेरे अलावा कम से कम एक कोई और जगा हुआ सुन रहा है।

'माफ करना। मेहनताने के बाक़ी हिस्से की ख़लिश की बात मैं भूल गयां था। और सचमुच बाज़ीगरी ठीक हो तो क़ीमत की क्या बात करें?

तुम लोग अपने काम दक्षता से करते हो। और मैं भी अपने काम में कोई बुरा नहीं था, आख़िर उस पहली यात्रा में मैंने उस स्टीमबोट को डूबने से बचाए रखा। आज भी यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है। यह ऐसा है जैसे किसी की आँखों में काली पट्टी बाँध कर उसे किसी ऊबड़-खाबड़ सड़क पर बड़ी गाड़ी चलाने को कह दिया जाए। यक़ीन करो कि उस दौरान मैं काँपता रहा और मेरा पसीना छूटता रहा। एक समुद्री नाविक के लिए हमेशा ऊपर तैरने वाली अपनी नौका को नीचे की ज़मीन में घिसटने देने से अधिक बड़ा पाप कुछ नहीं हो सकता। किसी और को पता चले न चले—हम ख़ुद उस टक्कर को कभी नहीं भूल सकते—क्या बताएँ! बिल्कुल दिल पर चोट करती है। ऐसी घटना याद आती रहती है, सपने में आती है, सालों बाद भी रात को नींद टूट जाती है और आप इसके बारे में सोचते रहते हैं—और बदन कभी पसीने से तर तो कभी ठंडक में काँपता है। मैं यह नहीं कह रहा कि वह स्टीमबोट हमेशा ही ऊपर बहती रही। एकाधिक बार उसे पानी में से धकेलना पड़ा, बीस नरभक्षी चारों ओर से छपाक-छप धकेलते रहे। हमने ऐसे कुछ लोगों को मल्लाह के काम पर लगाया था। अपनी जगह—वो नरभक्षी—ठीकठाक लोग थे। उनके साथ काम करना संभव था और मैं इसके लिए उनका मेहरबान हूँ। और फिर वे कौन-सा मेरे सामने एक-दूसरे को मार-खा रहे थे। वे अपने साथ खाने के लिए दरियाई घोड़े का मांस लाए थे जो सड़ चुका था और उसकी वजह से जंगल के तिलिस्म की तीख़ी बदबू मेरे नाकों में भर गई थी। ओफ्फ! मुझे अभी भी वह बू आती है। सवारियों में एक तो मैनेजर था और तीन-चार दूसरे गोरे एजेंट थे, जो अपनी लाठियाँ लिए—बिल्कुल तैयारी कर—आए थे। कभी-कभार हम किनारे के किसी पड़ाव से गुज़रते, जो कि अनजान ज़मीं के आँचल से लिपटा हुआ दिखता। एक टूटी-फूटी झोंपड़ी से ख़ुशी और आश्चर्य भरे गोरे दौड़े आते, उनको देखकर बड़ा अजीब लगता—ऐसा लगता था जैसे किसी जादूगर ने उन्हें जादू चलाकर वहाँ क़ैद कर रखा था। थोड़ी देर माहौल में हाथीदाँत शब्द की गूँज रहती—

और फिर हम सन्नाटे में वापस चल पड़ते, विस्तार की ओर, स्तब्ध मोड़ों के पार, दोनों ओर तट की ऊँची दीवारों के बीच हमारे घुमावदार जलपथ में नौका के पीछे लगातार चल रहे चक्के की गंभीर तालबद्ध छपछपाहटों की तालियों जैसी प्रतिध्वनि के साथ हम चलते। पेड़, पेड़, लाखों पेड़, विशाल, भारी, ऊँचे खड़े; और उनके पैरों पर, धार के विपरीत किनारे का आलिंगन करते हुए कीचड़ सनी छोटी स्टीमबोट रेंगती चलती जाती, जैसे किसी सजे हुए आँगन में कोई सुस्त कीट रेंग रहा हो। इससे ख़ुद को बड़ा छोटा और खोया हुआ महसूस होता था, पर ऐसा भी नहीं कि वह भावना कोई अवसाद की ही स्थिति में ले जा रही हो। आख़िर छुटपन में, कीचड़ सना कीट रेंगता रहता—बिल्कुल वैसा जैसा कि हम चाहते थे। मुझे नहीं मालूम कि बाक़ी गोरों के दिमाग़ में क्या समझ थी कि वह कहाँ रेंगते जा रहा था। शायद ऐसी कोई जगह जहाँ से कुछ पाने का उनका मक़सद था, ऐसा ही होगा! जहाँ तक मेरा सवाल है, वह कुर्त्ज़ की ओर रेंग रहा था—बस और कहीं नहीं; पर जब भाप के पाइप रिसने लगे तो फिर हम बहुत ही धीमी गति से रेंगने लगे। नदी का विस्तार सामने खुलता और पीछे सिमटता चला, मानो जंगल सुस्त चाल से पानी पर चल कर हमारी वापसी की राह बंद किए दे रहा था। हम अँधेरे का सीना चीरते लगातार जंगल की गहराई में बढ़ते जा रहे थे। चारों ओर घोर सन्नाटा था। रात को कभी-कभी दरख़्तों के परदे के पीछे से आती ढोल की आवाज़ नदी पर दूर तक जाती और सुबह की पहली झलक तक हल्की-सी टिकी रहती, मानो वह हमारे ऊपर मँडरा रही हो। हमें नहीं पता चलता कि वह युद्ध या शांति की घोषणा थी या महज प्रार्थना थी। एक थरथराती चुप्पी के साथ सुबह के आने का अंदाज़ा होता; लकड़हारे सो रहे होते, आग की आँच मद्धिम होती; और किसी टहनी के टूटने की आवाज़ से भी सब चौंक उठते। हम प्रागैतिहासिक धरती पर घुमक्कड़ों जैसे थे, एक ऐसी धरती पर जिस पर अनजान ग्रह के रंग लगे हुए थे। अपने बारे में हम यूँ कल्पना कर सकते थे कि हम किसी शापग्रस्त विरासत पर हक़ जताने आए पहले

इंसान थे और इसे पाने के लिए हमें बेइंतहा बेचैनी में रह कर और अकथ मेहनत कर क़ीमत चुकानी थी। पर कभी जब हम धार के किसी मोड़ पर आगे बढ़ने के लिए जूझ रहे होते, अचानक भारी और स्थिर पत्तों के ढेर के नीचे सरपत की दीवारें और शंकु आकार की घास की छतें दिखलाई पड़तीं, चीख़ें सुनाई पड़तीं, काली टाँगों की भरमार दिखती। कई सारे हाथ तालियाँ पीट रहे होते, पैरों की थापें सुनाई पड़तीं, कई शरीर झूम रहे होते, नाचती आँखें दिखलाई पड़तीं। किसको पता था कि वे प्रागैतिहासिक लोग हमें गालियाँ दे रहे थे, या हमारी स्तुति गा रहे थे और हमारा स्वागत कर रहे थे? हम अपने परिवेश को समझ पाने में असमर्थ थे; अशरीरियों की तरह अचंभित और मन ही मन आतंकित फिसलते हुए हम निकल रहे थे, जैसा कि पागलख़ाने में उत्तेजित दौड़भाग उछल-कूद देखकर कोई भी संतुलित दिमाग़ वाला आदमी करेगा। हम क्योंकि काफ़ी दूर आ चुके थे, बातें हमारी समझ से बाहर की थीं; बहुत पहले कभी गुज़र चुके ज़माने के इतिहास के पहले अध्यायों की रातों में से हम गुज़र रहे थे, जिनका कोई चिह्न न बचा था—कोई स्मृति बाक़ी न थी।

ज़मीं जैसे ज़मीं न थी। हम ज़ंजीरों में बँधे दानव की कल्पना कर सकते हैं, पर वहाँ—वहाँ दानवीय क़ुदरत आज़ाद फिर रही थी। वह अलौकिक था और वहाँ मौजूद शख़्स—नहीं, ऐसा नहीं कि वे इंसान न थे। अब क्या कहें, सबसे परेशान करने वाली बात यह थी कि शक होता था कि वे इंसान ही हैं। धीरे-धीरे यह बात समझ आ ही जाती थी। वे चीख़ते, उछलते, नाचते हुए भयंकर शक्लें बना रहे थे; पर उनके हमारे ही जैसे इंसान होने की बात सोचकर सबसे अधिक रोमांच होता था—कि इस आदिम और उल्लास भरे चीत्कार से हम भी किसी दूर के रिश्ते से जुड़े हैं। भद्दा, हाँ वह ख़ूब भद्दा तो लगता था; पर ईमानदारी से सोचने पर लगता था कि उस उन्मुक्त शोर की प्रतिक्रिया में हमारे अंदर कुछ जाग-सा रहा था, कोई हल्का अहसास-सा कि उसमें कुछ ऐसा अर्थ छिपा था जिसे हम आदिकाल की पहली रात से बहुत दूर आ चुकने के

बाद भी जान रहे थे। और आख़िर क्यों नहीं? इंसान का दिमाग़ हर कुछ समझने के क़ाबिल है—क्योंकि इसमें हर कुछ मौजूद है, सारा अतीत और सारा भविष्य भी। आख़िर यह सब क्या था? उल्लास, भय, दुख, समर्पण, ग़ुस्सा—कौन कह सकता है?—यह शाश्वत सच था—समय के आवरण से मुक्त सच। कोई बेवकूफ़ उनको देखकर काँपते हुए हँसता रहे—समझदार आदमी जानता है और बिना पलक झपके उनको देख जाँच सकता है। पर यह ज़रूरी है कि उसमें इतनी समझ हो जितनी किनारे के पार उन लोगों में थी। उस सत्य के साथ उसे अपने सत्व के साथ—अपनी अंदरूनी ताक़त के साथ ही रूबरू होना पड़ेगा। सिद्धांत? सिद्धांतों से काम नहीं चलने वाला। संपत्ति, दौलत, सुंदर कपड़े—ये महज चीथड़े हैं जो एक झटके में ही उड़ जाएँगे। जी, जो चाहिए वह है एक सोची-समझी आस्था। अपने अंदर उस उन्माद के प्रति वह प्रेत-आस्था ढूँढ़नी होगी—क्या ऐसी आस्था हममें है? और उस अंदर की आवाज़ को सुनते-पहचानते हुए, उसे मानना भी होगा और बुरी-भली जैसी भी वह है, उसे ज़िंदा रखना होगा; उसे चुप नहीं होने देना है। हाँ, भय और संकोच से भरे डरपोक हमेशा सुरक्षित रहते हैं। यह हँस कौन रहा है? तुम सोच रहे हो कि मैं भी किनारे पर जाकर उस चीत्कार और नाच में शामिल होने गया या नहीं? सही है—मैं नहीं गया। तुम्हें लगता है कि यह सब बस उम्दा ख़याल भर हैं? भाड़ में जाएँ उम्दा ख़याल! मेरे पास वक़्त नहीं था। मुझे पाइपों से रिसकर निकलती भाप को रोकने के लिए शीशे और ऊनी कंबलों के टुकड़ों से कशमकश करनी थी—यह माजरा था। मुझे स्टीमर की दिशा सही रखनी थी, पानी में गिरी डालों के पार निकलना था और छल-बल-कौशल से उस टिन की नाव को आगे बढ़ाते रहना था। मेरी इन बातों में समझदार आदमी के बचने के लिए काफ़ी सच है। और थोड़े-थोड़े समय बाद मुझे आग झोंकने वाले जंगली आदमी की निगरानी भी करनी थी। वह औरों से बेहतर नमूना था, आड़ी खड़ी भट्ठी को वह जलाए रख सकता था। वह मेरे नीचे था और यक़ीन मानो, उसे

देखकर ऐसा लगता था जैसे कोई कुत्ता पतलून और पंखवाली टोपी पहने अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो। कुछ ही महीनों के प्रशिक्षण से वह बढ़िया कारीगर बन चुका था। वह भाप-मीटर और पानी के मीटर को दबी आँखों से भरपूर सावधानी की कोशिश करता हुआ देखता। बेचारे के दाँत घिसे हुए थे, सर पर बाल अजीब आकृतियों में मुड़े हुए थे और उसके गालों पर तीन सजावटी रस्मी घाव थे। उसे किनारे पर पैरों की थाप के साथ तालियाँ बजाते हुए जंगलियों के साथ नाचते होना चाहिए था, पर यहाँ वह इस अजीब मायावी जादू के प्रभाव में लगातार अपनी कुशलता बढ़ाता हुआ कड़ी मेहनत के साथ काम पर लगा हुआ था। उसे क्योंकि प्रशिक्षण मिला था, वह काम का बंदा था; और उसे जो पता था वह यह था कि—अगर उस पारदर्शी भांडे से पानी सूख जाए तो उसके अंदर का शैतान अनबुझी प्यास के मारे आग-बबूला हो जाएगा और भयंकर बदला लेगा। इसलिए वह पूरी उत्तेजना के साथ (बाँह पर तुरत-फुरत बनाए चीथड़ों का तावीज़ बाँधे और निचले होंठ से घड़ी जैसी बड़ी, चमकती हड्डी का टुकड़ा आर-पार फँसाए) पसीने-पसीने होकर काँच के पार देखता जा रहा था, और जंगलों से भरे किनारे धीरे-धीरे सरकते गए, हल्का होता हुआ शोर पीछे छूटता चला, अनंत दूरी तक का सन्नाटा साथ रह गया—और हम कुर्त्ज़ की ओर रेंगते चले। पर पानी में पड़े तने मोटे थे, बहाव सँकरा और ख़तरे से भरा था, इसलिए न मेरे और न ही उस खलासी के पास अपने प्रेत-ख़यालों में गोते लगाने का वक़्त था।

भीतरी अड्डे से कोई पचास मील नीचे की ओर हम सरकंडों और तिरछे और मरियल से खंभे की बनी एक झोंपड़ी तक पहुँचे। उस पर कभी परचम रह चुके किसी कपड़े के चीथड़े फहरा रहे थे, और सामने ढंग से सजाया हुआ लकड़ियों का ढेर था। हमें ऐसे नज़ारे की उम्मीद न थी। हम किनारे पर आए। जलने की लकड़ियों के ढेर पर हमें एक सपाट तख़्ती दिखी, जिस पर पेंसिल से कुछ लिखा हुआ था। जब उसे समझ पाए तो पढ़ा, 'तुम्हारे लिए यह लकड़ी रखी है। जल्दी आओ। सावधानी से आगे बढ़ना।'

नीचे एक हस्ताक्षर भी था, पर वह पढ़ा नहीं जा रहा था—वह कुत्ज़ तो न था, काफ़ी बड़ा नाम था। 'जल्दी आओ।' कहाँ? नदी पर आगे? 'सावधानी से आगे बढ़ना।' हमने पहले तो ऐसा किया नहीं था। यह चेतावनी इस जगह के लिए तो नहीं हो सकती क्योंकि यहाँ तो हम बस अभी पहुँचे थे। आगे कुछ गड़बड़ी होगी। पर कैसी और कितनी भारी? यही सवाल था। ऐसे संक्षिप्त संदेश की बेवकूफ़ी पर हम लोगों ने रंजिश भरी टिप्पणियाँ कीं। पास की झाड़ियों ने कोई जवाब नहीं दिया। और वे इतनी घनी थीं कि हम बहुत दूर तक देख भी नहीं सकते थे। लाल खुरदरे कपड़े का एक फटा पर्दा झोंपड़ी के दरवाज़े पर लटका था और उसके मरियल से थपेड़े हमारे चेहरों पर पड़ रहे थे। झोंपड़ी टूटी-फूटी थी। हम यह अनुमान लगा पा रहे थे कि कुछ ही समय पहले कोई गोरा आदमी यहाँ रह चुका था। दो पायों पर तख़्ती डाल कर बनाई एक भद्दी-सी मेज़ थी; एक ओर अँधेरे से कोने में कूड़े का ढेर था और दरवाज़े के पास मुझे एक किताब भी मिली। उसके आवरण पृष्ठ ग़ायब थे, और पन्ने भी इस्तेमाल से बहुत गंदे और नर्म हो गए थे; पर अभी तक साफ़ दिखते कपास के सूत से हाल में ही इसकी बँधाई की गई थी। यह किताब कमाल की खोज थी, शीर्षक था, *'समुद्री नाविक के कुछ पहलुओं की जाँच'*। लेखक कोई टाउसर या टाउसन जैसे नाम का आदमी था जो राजकीय नौ-वाहिनी में मास्टर रह चुका था। किताब की प्रति साठ साल पुरानी थी और इसमें दिए आँकड़ों की ऊबाऊ तालिकाएँ और विस्तार से समझाई तस्वीरों को देखकर लगता था कि इसमें बड़ी गंभीर अध्ययन सामग्री है। इस डर से कि किताब मेरे हाथों में फट न जाए, मैंने इस अद्भुत प्राचीन कृति को बड़ी नाजुकी के साथ सहेजा। अंदर के पन्नों में टाउसन या टाउसर, जो भी हो, ने जहाज़ की ज़ंजीरों और माल फेंकने-उठाने के रस्सों को टूटने से बचाने के लिए उन पर अधिकतम बोझ कितना हो सकता है, ऐसी बातों पर गंभीरता से चर्चा की थी। यह कोई बहुत रोचक किताब नहीं थी। पर पहली नज़र में ही दिखता था कि गहन एकाग्र मंथन के बाद किताब

लिखी गई थी और मक़सद यह था कि काम बिल्कुल ठीक-ठीक हो। इस वजह से कई साल पहले तैयार की गई सामग्री वाले इन नाजुक पन्नों का पेशेवर निगाहों के अलावा भी एक अलग महत्त्व था। ज़ंजीरों और अन्य उपकरणों पर इस सामान्य अनुभवी नाविक की बातें पढ़कर मैं जंगल और बोट पर सवार यात्रियों की बात भूल गया। मैं ऐसी चीज़ को पाने के आनंद में अभिभूत हो गया, जो बेशक बड़ी मज़ेदार थी। ऐसी किताब का वहाँ मिलना तो ख़ुशी की बात तो थी ही; वहाँ हाशिए पर पेंसिल से लिखे पाठ के संदर्भों को बढ़ाती हुई टीपें पढ़कर और भी अधिक चमत्कृत हुआ। अपनी आँखों पर मुझे विश्वास न हो रहा था। ये टिप्पणियाँ सांकेतिक भाषा में थीं! हाँ, वे सांकेतिक ही लग रही थीं। कल्पना करो कि एक आदमी इस तरह की कोई किताब ऐसे वीरान इलाक़े में लिए फिरे और पढ़ते हुए नोट्स लिखे और वह भी सांकेतिक भाषा में! घना रहस्य था।

थोड़ी देर से मुझे एक परेशान-सा करता शोर सुनाई पड़ रहा था। मैंने आँखें ऊपर की तो देखा कि लकड़ी का ढेर ग़ायब था और सभी यात्रियों के साथ मिलकर मैनेजर नदी के किनारे से मेरी ओर चिल्ला रहा था। मैंने किताब जेब में डाल ली। यक़ीन मानो कि मेरे लिए पढ़ना छोड़ना किसी पुरानी दोस्ती के सहारे से ख़ुद को खींच कर अलग करने लायक़ था।

मैंने इंजिन चालू किया कि हम आगे बढ़ें।

'यह उस अधम घुसपैठिए व्यापारी का होगा,' छूटती हुई झोंपड़ी की ओर ग़ुस्से से देखते हुए मैनेजर ने कहा।

'वह ज़रूर अंग्रेज़ रहा होगा', मैंने कहा।

'अगर उसने सावधानी न बरती तो महज अंग्रेज़ होने से वह बच न पाएगा,' मैनेजर ने गंभीरता से कहा।

मैंने भोलेपन का बहाना करते हुए कहा कि इस दुनिया में कोई भी आदमी नियति से बच नहीं पाया है।

धारा अब पहले से और तेज़ बह रही थी। स्टीमर बस जैसे आख़िरी साँस लेने को था—पीछे का चक्का सुस्त-सा चल रहा था। सच यह था कि मुझे डर था कि यह निगोड़ा स्टीमर किसी भी पल चलने से रुक सकता है और मैं चुपचाप इसकी हर अगली साँस सुनते जा रहा था। ऐसा लगता था जैसे किसी के आख़िरी पलों को हम देख रहे थे। पर हम रेंगते चले थे। कभी-कभी किसी पेड़ को मैं पड़ाव की तरह यह मापने के लिए देखता कि हम कुर्त्ज़ की ओर कितनी दूर बढ़ आए हैं, पर उसको अच्छी तरह देखने के पहले ही वह छूट जाता। बड़ी देर तक किसी चीज़ पर आँखें गड़ाए रखना इंसान के धीरज के बाहर था।

मैनेजर बड़े सुकून में था। मैं कुढ़ता जा रहा था और ग़ुस्से में था, कभी-कभार ख़ुद से बहस कर रहा था कि कुर्त्ज़ के साथ खुलकर बात करूँगा या नहीं, पर किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने के पहले ही मुझे लगता कि मैं बोलूँ या चुप रहूँ या कुछ भी करूँ, इसका कोई असर नहीं होने वाला। कौन क्या जानता है या किस बात को नज़रअंदाज़ करता है, इससे क्या फ़र्क़ पड़ने वाला है? क्या फ़र्क़ पड़ता है कि मैनेजर कौन है? कभी कभी इंसान को इस तरह की अंतर्दृष्टि मिलती है। इस सारे मामले की गहराई सतह से काफ़ी नीचे तक थी और मेरे हस्तक्षेप की क्षमता या मेरी पहुँच से बाहर थी।

दूसरे दिन शाम तक हम लोगों ने अनुमान लगाया कि हम कुर्त्ज़ के स्टेशन से क़रीब आठ मील दूर थे। मैं आगे बढ़ते जाना चाहता था, पर मैनेजर की शक्ल गंभीर थी। उसने मुझे बतलाया कि आगे नाव बढ़ाना काफ़ी ख़तरनाक है और चूँकि सूरज छिपने को था, इसलिए बेहतर होगा कि हम अगली सुबह तक वहीं इंतज़ार करें। उसने इस बात पर भी ध्यान दिलाया कि सावधानी से बढ़ने की चेतावनी पर ग़ौर करना ही है तो वह ढलती शाम या अँधेरे में नहीं, बल्कि दिन की रोशनी में ही संभव है। बात सही थी। आठ मील का मतलब लगभग तीन घंटों तक भाप चलाए रखना था और दूरी पर धार के ऊपरी ओर मुझे अस्थिर उमड़ती लहरें भी दिख

रही थीं। फिर भी मुझे देर होने की वजह से बेइंतहा ग़ुस्सा आ रहा था। यह सचमुच बेसिरपैर का ग़ुस्सा था, क्योंकि इतने महीनों बाद एक और रात की यात्रा से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ने वाला था। चूँकि हमारे पास लकड़ी की कमी न थी और सावधानी की कोशिश थी, इसलिए मैंने बोट को मँझधार में ही रोका। दरिया सीधा और संकीर्ण था, दोनों ओर ऊँचे किनारे थे जैसे रेलवे लाइनों के दो ओर कटाव होते हैं। सूरज छिपने के बहुत पहले ही शाम का अँधेरा फिसलता हुआ आ रहा था। धार तेज़ और बेरोक बह रही थी, पर किनारों पर मंद स्थिरता थी। लताओं और नीचे की जीवंत झाड़ियों से बँधे ज़िंदा पेड़ों के हल्के-से-हल्के पत्ते और पतली-से-पतली डार भी जैसे पत्थर में बदल गए थे। बड़ा अस्वाभाविक-सा लग रहा था, जैसे कि सब सोए नहीं, बल्कि समाधि में थे। हल्की-सी आवाज़ भी कहीं से सुनाई न पड़ रही थी। हम बस अचंभित होकर देख भर सकते थे, और हमें शक हो सकता था कि हम बहरे न हो गए हों—और फिर अचानक रात उतर आई और हमारी नज़र छीन ले गई। सुबह तीन बजे के क़रीब एक बड़ी मछली उछली, और उसकी छपछपाहट से चौंक मैं ऐसे उछला जैसे कि कहीं गोली चली हो। सूरज चढ़ने पर गर्म, चिपचिपी और रात से भी ज़्यादा गाढ़ी धुंध छा गई। वह आगे नहीं बढ़ी या हिली नहीं, बस वहीं हमारे चारों ओर जैसे कोई ठोस दीवार-सी बनकर जमी रही। कोई आठ या नौ बजे धुंध हटी जैसे कोई शटर खुलता है। हमें दरख़्तों के विशाल झुंड और अपार हरियाली से ढँका, चारों ओर फैला जंगल दिखा, जिसके ऊपर सूरज का चौंधियाता छोटा गोलक था—सब कुछ अपनी जगह स्थिर—और वह सफ़ेद आवरण फिर से बेरोक उतर आया, जैसे कि तेल से चिकनी की गई दरारों में से फिसल आया हो। हम बेड़ियाँ उठाने लगे थे, मैंने उन्हें वापस डालने को कहा। दबी-सी चिंचियाती आवाज़ के साथ पूरी तरह से बेड़ियाँ डाले जाने के पहले ही जैसे किसी अंतहीन उजाड़ से निकलती चीख़, बड़ी ऊँची आवाज़ में चीख़, घनी हवा में गूँज उठी। फिर वह रुकी। जैसे कोई पूरे ज़ोर से विरोध कर रहा हो और फिर

जंगली लोगों की आपसी बहस की आवाज़ें हमारे कानों में सुनाई पड़ीं। यह शोर ऐसे अचानक आया था कि टोपी के नीचे मेरे बाल खड़े हो गए। पता नहीं औरों ने इसे कैसे लिया : इतनी सहसा और जैसे चारों ओर से रोती हुई और बौखलाहट भरी आवाज़ें सुनकर मुझे लगा जैसे धुंध ही चीख़ रही थी। शोर तेज़ी से कई तक़रीबन असहनीय चीख़ों तक बढ़ चला और फिर अचानक ही रुक गया। हम अजीब से रवैयों में बिल्कुल स्थिर खड़े रहे और तक़रीबन उतने ही पीड़ादायक घने सन्नाटे को एकाग्र सुनते रहे। 'हे प्रभु! यह सब क्या हो रहा है—?' मेरे बगल में खड़े एजेंट यात्रियों में से एक ने कहा—रेत भरे बालों और लाल ज़ुल्फ़ों वाले छोटे कद के इस मोटे आदमी ने साइड-स्प्रिंग जूते पहने थे और अपनी जुराबों में पाजामे के निचले हिस्से ठोंसे हुए थे।

दो और लोग पल भर के लिए मुँह खोल अचंभित खड़े रहे, फिर तेज़ी से दौड़ कर छोटी वाली केबिन में घुसे और तुरत वापस लौट आए, हाथों में विन्चेस्टर बंदूक़ें 'तैयार' रखे घबराती नज़रें डालते खड़े हो गए। हमारी नज़रें बस इतना ही देख पा रही थीं—अपना स्टीमर जिस पर हम सब सवार थे, उसके धुंधले से किनारे जैसे कि स्टीमर बस अब पिघलने ही वाला हो, और उसके चारों ओर कुहासे में दिखता शायद दो फीट तक घना पानी का घेरा। अपनी आँखों और कानों से हमें दुनिया का बाक़ी और कुछ नहीं दिख-सुन रहा था। कहीं नहीं। दुनिया कहीं नहीं थी, ग़ायब हो गई थी, एक साँस या फिसफिसाहट तक भी पीछे नहीं छोड़ गई थी।

मैं आगे बढ़ा, और मैंने तुरत बेड़ी उठाने का निर्देश दिया, ताकि ज़रूरत हो तो लंगर उठाकर स्टीमबोट को तुरत आगे बढ़ा सकें।

'क्या वो हम पर हमला करेंगे?,' डरी हुई एक आवाज़ ने पूछा।

'इस धुंध में हमें ज़िबह कर दिया जाएगा।' एक और बड़बड़ाया।

तनाव से चेहरे फड़क रहे थे, हाथ ज़रा काँप रहे थे, आँखें पलकें झपकना भूल गई थीं। हमारे नाविकों में गोरों और कालों के हाव-भाव

में फ़र्क़ देखने लायक़ थे। काले नाविकों के लिए भी यह इलाक़ा हमारे ज़ितना ही अनजान था, हालाँकि उनके घर बस आठ सौ मील ही दूर थे। गोरे तो बुरी तरह परेशान थे ही, इसके अलावा इस बलवे से सदमे में होने की अजीब शक्ल अपनाए हुए थे। दूसरों (कालों) के चेहरों पर सावधानी और स्वाभाविक उत्सुकता भरे भाव थे; पर उनके चेहरे शांत थे, उन इक्के-दुक्कों के भी जो बेड़ियाँ खींचते हुए मुस्करा रहे थे। कई आपस में चिढ़ के साथ संक्षिप्त बातें कर रहे थे और उनके लिए बस इससे ज़्यादा परेशानी की कोई बात न थी। गाढ़े नीले कपड़ों से पूरी तरह ढका हुआ, चौड़े सीने वाला उनका काला युवा मुखिया मेरे पास खड़ा था। उसके नथुने भयंकर दिखते थे और उसके तेल चुपड़े बाल घुँघराले थे।

'अहा!' मैंने दोस्ताना अंदाज़ में कहा।

'पकड़ो उनको,' उसने आँखें चौड़ी करते हुए और तीखे दाँत निकालते हुए कहा—'पकड़ो और हमें दे दो।'

'तुम्हें दे दें, हहँ?' मैंने पूछा; 'उनका क्या करोगे?'

'चबा जाएँगे!' उसने रूखेपन से कहा, और रेलिंग पर अपनी बाँह टिकाते हुए गंभीर और सँभले अँदाज़ में धुंध की ओर देखने लगा।

बेशक मुझे यह सुनकर आतंक ही हुआ होता, अगर मुझे यह जानकारी न होती कि वह और उसके साथी बेहद भूखे होंगे। कम से कम पिछले एक महीने से उनकी भूख बढ़ती ही रही होगी। वे छह महीने से काम पर लगे थे। (मुझे नहीं लगता कि उनमें से किसी को भी समय का कोई ज्ञान था, जो समझ हमें सदियों से मिली थी। वे अब भी उस ज़माने में थे, जब समय की शुरूआत हुई होगी—उनके पास अनुभव की हमारे जैसी विरासत न थी जिससे वे यह सीख पाते) और जब तक नदी के मुहाने पर किसी बकवास क़ानून के मुताबिक़ लिखा कोई मसौदा साथ था, किसी के दिमाग़ में यह फ़िक्र न थी कि वे ज़िंदा कैसे रहेंगे। वे अपने साथ थोड़ा सड़ा हुआ दरियाई घोड़े का मांस लाए ज़रूर थे, पर अगर

एजेंट यात्रियों ने हल्ले-गुल्ले के बीच उसमें से अधिकांश पानी में फेंक न भी दिया होता तो भी वह ज़्यादा देर न टिकता। वैसे तो यह ज़्यादती लगती थी, पर सचमुच यह अपने बचाव के लिए उठाया गया क़दम था। यह संभव नहीं है कि आप मरे हुए दरियाई घोड़े की गंध सोते-जागते या खाना खाते हुए झेल सकें और ज़िंदगानी पर पकड़ भी रखें। इसके अलावा उन्हें हर हफ़्ते ताँबे की क़रीब नौ इंच लंबी तीन तारें दी गई थीं, और समझ यह थी कि उसे मुद्रा की तरह इस्तेमाल कर वे नदी के किनारे के गाँवों से अपना भोजन और बाक़ी सरंजाम खरीद सकें। *यह योजना* क्या ख़ूब कारगर हुई देखना आसान था। या तो गाँव थे ही नहीं, अगर कोई थे भी तो वहाँ के लोगों ने दुश्मनों जैसा व्यवहार किया, या फिर निर्देशक, जो हम बाक़ी लोगों की तरह कभी-कभार बकरे के अलावा टिन के डिब्बों में लाया भोजन खा रहा था, किसी न किसी अनजान गहरी वजह से स्टीमर रोकने के ख़िलाफ़ था। यानी कि या तो वे तार ही को खा डालते, या उससे जाली बनाकर मछलियाँ पकड़ सकते, इसके अलावा मेरी समझ में उनकी मोटी तनख़्वाह किसी काम की न थी। यह तो कहना होगा कि पगार नियमित रूप से दी जाती थी जैसे कि किसी भी बड़ी प्रतिष्ठित कंपनी से अपेक्षित है। बाक़ी उनके पास खाने के लिए—हालाँकि वो बिल्कुल ही खाने लायक़ दिखता न था—सिर्फ़ गंदे बैंगनी रंग के अधपके आटे के गोलों जैसी कोई पत्तों से ढकी सामग्री थी, जिसका एकाध टुकड़ा वे कभी-कभार खाते थे, पर वे इतने छोटे थे कि उससे केवल जी बहलाया जा सकता था, पेट तो भर नहीं सकता था। अब यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है कि उस भयंकर भूख की तड़प में कभी उन लोगों ने—वे पैंतीसेक थे—हम पर हमला क्यों नहीं किया और एक बार ही सही अच्छी क़िस्मत क्यों नहीं आजमाई। वे अच्छे कद के ताक़तवर लोग थे, और हालाँकि उनके चमड़े में चमक नहीं बची थी और उनकी मांसपेशियाँ सख्त नहीं रह गई थीं, पर उनमें हिम्मत और ताक़त के साथ जीने की समझ नहीं थी। और मैंने पाया कि संयम, वह

रहस्यमय मानवीय गुण जो सभी संभावनाओं के ख़िलाफ़ जाता है, यहाँ काम कर गया था। मैंने उनकी ओर तेज़ी से बढ़ती रुचि के साथ देखा। इसलिए नहीं कि वे मुझे जल्दी ही कभी खा जा सकते थे, बल्कि मैं सच बतलाऊँ कि एक नई दृष्टि से मैंने देखा—कि एजेंट यात्री देखने में बड़े कमज़ोर—और स्वादहीन—लगते थेः अपने बारे में मेरी ख़ास उम्मीद थी कि मेरी शक्ल वैसी—क्या कहूँ—अरुचिकर न होगी—उन दिनों मैं जिस स्वप्नलोक में खोया हुआ था उसमें इस तरह का घना आत्म-मोह बिल्कुल सही बैठता था। शायद मुझे थोड़ा बुख़ार-सा भी था। नब्ज़ लगातार बिगड़ती रहे तो संतुलन रख पाना मुश्किल ही होता है। देर-सबेर गंभीर रूप से बीमार होने के पहले जंगल के वातावरण में अक्सर 'थोड़ा बुख़ार-सा' या कुछ न कुछ बीमारी मुझे होती ही रहती। हाँ, गहन शारीरिक तकलीफ़ों का सामना करते उनके आवेश, आवेग, क्षमताओं, कमज़ोरियों को समझने की कोशिश करते हुए, मैंने उनकी ओर ऐसे देखा जैसे किसी और इंसान को देखते हैं। संयम! कैसा संयम! क्या किसी गहरी आशंका से यह संयम उपजा था—अंधविश्वास, अरुचि, धीरज या भय? भूख हर भय को खा जाती है, हर धीरज भूख से हार मानता है, भूख के सामने कोई भी बात अरुचिकर नहीं लगती; और जहाँ तक अंधविश्वास, आस्थाएँ और जिन्हें आप सिद्धांत कहते हैं, वे हवा में तिनके की तरह उड़ जाते हैं। कौन नहीं जानता कि लगातार भूख से तड़पने से कैसी हैवानियत पैदा होती है, जो असहनीय उत्पीड़न होता है, जो भयंकर ख़याल दिमाग़ में आते हैं, कैसी गंभीर और भयानक सोच यह पैदा करती है? जी हाँ, मैं जानता हूँ। इंसान की सारी जिस्मी और रूहानी ताक़त भूख से लड़ने में पूरी तरह ख़त्म हो जाती है। लंबे समय तक भूखे रहने से दुःख, अपमान, आत्मा का पतन—यह सब सहना आसान है। बुरा लगता है, पर यह सच है। और इन बेचारों के पास भी नैतिक झिझक का कोई कारण न था। संयम! इससे बेहतर संयम की अपेक्षा तो किसी जंग के मैदान में पड़ी लाशों के बीच टोहते भेड़िए

से की जानी चाहिए। पर मैं इस सच के रूबरू था—समंदर के पानी के झाग-सा, किसी अनजान पहेली की उमड़ती लहर-सा यह सच, सोचने से समझ आता कि, धुंध की गाढ़ी सफ़ेदी के पीछे नदी के किनारे हमें झकझोर देने वाले जंगलियों के उस विचित्र चीख़-चीत्कारों भरे बेतुके शोर से भी अधिक रहस्यमय था।

दो एजेंट यात्री तेज़ फिसफिसाहट में बहस कर रहे थे कि किस किनारे पर से शोर आया था। 'बायीं ओर।' 'नहीं, नहीं, तुम भी यार? दायीं, दायीं ओर भई।'

'बड़ी गंभीर बात है,' मेरे पीछे से मैनेजर की आवाज़ आई; 'अगर हमारे पहुँचने से पहले मिस्टर कुर्त्ज़ को कुछ हो गया हो, तो मैं तो तबाह हो जाऊँगा।'

मैंने उसकी ओर देखा, और मुझे उसकी ईमानदारी पर ज़रा भी शक नहीं हुआ। वह ऐसा ही आदमी था जो कि परिस्थितियों को जैसी हैं वैसी ही रहने देना चाहता था। यही उसका संयम था। पर जब उसने बड़बड़ाते हुए कुछ ऐसा कहा कि हमें तुरंत तेज़ी से चल पड़ना चाहिए, मैंने उसे जवाब तक देना ज़रूरी न समझा। मैं जानता था, और वह जानता था कि ऐसा संभव न था। अगर हम लंगर उठा लेते, तो हम निश्चित ही हवा में उड़ जाते—हमारे लिए कहना मुश्किल हो जाता कि हम धार में आगे या पीछे की ओर या कि तिरछे—कहाँ चल पड़े हैं, जब तक कि हम एक या दूसरे किनारे से न जा टकराते, और वहाँ भी हमें तुरंत पता न चलता कि यह कौन सा किनारा है। मेरे चलने का सवाल ही न उठता था। मैं टक्कर के लिए तैयार न था। जहाँ हम थे, किसी नौका के टकरा कर डूबने की इससे ख़तरनाक जगह और नहीं हो सकती थी। चाहे हम तुरंत डूब न भी जाते, फिर भी तेज़ी से किसी न किसी तरह से हमारा नाश होने की संभावना पक्की थी।

'मैं तुम्हें सारे ख़तरे उठाने का अधिकार देता हूँ,' थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा।

'मैं कोई ख़तरा नहीं उठाऊँगा,' मैंने तुरत कहा; उसे ऐसे ही जवाब की अपेक्षा थी, हालाँकि मेरे लहजे से उसे आश्चर्य हुआ होगा।

'ठीक है, मैं तुम्हारे निर्णय को मानने को तैयार हूँ। तुम कप्तान हो,' उसने बड़ी सज्जनता से कहा।

मैंने उसकी बात का आभार मानते हुए अपना कंधा उसकी ओर किया और धुंध की ओर देखा। यह धुंध कितनी देर टिकेगी? जो दिख रहा था, उससे बदतर कुछ नहीं हो सकता था। इन निगोड़ी झाड़ियों में से हो कर हाथी दाँत की खोज में निकले इस कुर्त्ज़ तक पहुँचने की राह इतने ही ख़तरों से भरी थी मानो वह किसी शानदार क़िले में जादू के असर से बंद सोई हुई कोई राजकुमारी हो।

'क्या ख़याल है, क्या वो लोग हमारे ऊपर हमला कर सकते हैं?' मैनेजर ने गोपनीय स्वर में पूछा।

मुझे कई सीधे कारणों से लगता था कि वो हम पर हमला नहीं करने वाले थे। एक तो घनी धुंध छाई हुई थी। अगर वह अपनी नावों में किनारे से चलते तो वे खो जाते, जैसे कि हमारे साथ भी होना था अगर हम चलने की कोशिश करते। पर यह भी था कि मुझे दोनों ओर वह जंगल काफ़ी घना लग रहा था—और उसी में आँखें मौजूद थीं, आँखें जो हमारी निगरानी कर रही थीं। नदी किनारे की झाड़ियाँ बेशक काफ़ी घनी थीं; पर उसके पीछे जो निचली घास थी, उसमें से निकल पाना संभव था। पर जब धुंध थोड़ी देर के लिए हटी भी, मुझे पानी में कोई नाव नहीं दिखी थी—स्टीमर के पास तो कतई नहीं। पर जो चीख़ें हमने सुनी थीं—वह हल्ला जिस तरह का था, उसका ध्यान कर ही मुझे लग रहा था कि हमला नहीं होगा। उस शोर में तुरत ध्यान देने लायक़ कोई ख़ौफ़नाक बात न थी।....हालाँकि वह जंगली हिंसक शोर अचानक और बिना किसी चेतावनी के हुआ था, उसे सुनकर मुझे पीड़ा का ऐसा आभास हुआ था जिसे मैं नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। किसी वजह

से की जानी चाहिए। पर मैं इस सच के रूबरू था—समंदर के पानी के झाग-सा, किसी अनजान पहेली की उमड़ती लहर-सा यह सच, सोचने से समझ आता कि, धुंध की गाढ़ी सफ़ेदी के पीछे नदी के किनारे हमें झकझोर देने वाले जंगलियों के उस विचित्र चीख़-चीत्कारों भरे बेतुके शोर से भी अधिक रहस्यमय था।

दो एजेंट यात्री तेज़ फिसफिसाहट में बहस कर रहे थे कि किस किनारे पर से शोर आया था। 'बायीं ओर।' 'नहीं, नहीं, तुम भी यार? दायीं, दायीं ओर भई।'

'बड़ी गंभीर बात है,' मेरे पीछे से मैनेजर की आवाज़ आई; 'अगर हमारे पहुँचने से पहले मिस्टर कुर्त्ज़ को कुछ हो गया हो, तो मैं तो तबाह हो जाऊँगा।'

मैंने उसकी ओर देखा, और मुझे उसकी ईमानदारी पर ज़रा भी शक नहीं हुआ। वह ऐसा ही आदमी था जो कि परिस्थितियों को जैसी हैं वैसी ही रहने देना चाहता था। यही उसका संयम था। पर जब उसने बड़बड़ाते हुए कुछ ऐसा कहा कि हमें तुरंत तेज़ी से चल पड़ना चाहिए, मैंने उसे जवाब तक देना ज़रूरी न समझा। मैं जानता था, और वह जानता था कि ऐसा संभव न था। अगर हम लंगर उठा लेते, तो हम निश्चित ही हवा में उड़ जाते—हमारे लिए कहना मुश्किल हो जाता कि हम धार में आगे या पीछे की ओर या कि तिरछे—कहाँ चल पड़े हैं, जब तक कि हम एक या दूसरे किनारे से न जा टकराते, और वहाँ भी हमें तुरंत पता न चलता कि यह कौन सा किनारा है। मेरे चलने का सवाल ही न उठता था। मैं टक्कर के लिए तैयार न था। जहाँ हम थे, किसी नौका के टकरा कर डूबने की इससे ख़तरनाक जगह और नहीं हो सकती थी। चाहे हम तुरंत डूब न भी जाते, फिर भी तेज़ी से किसी न किसी तरह से हमारा नाश होने की संभावना पक्की थी।

'मैं तुम्हें सारे ख़तरे उठाने का अधिकार देता हूँ,' थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा।

'मैं कोई ख़तरा नहीं उठाऊँगा,' मैंने तुरत कहा; उसे ऐसे ही जवाब की अपेक्षा थी, हालाँकि मेरे लहजे से उसे आश्चर्य हुआ होगा।

'ठीक है, मैं तुम्हारे निर्णय को मानने को तैयार हूँ। तुम कप्तान हो,' उसने बड़ी सज्जनता से कहा।

मैंने उसकी बात का आभार मानते हुए अपना कंधा उसकी ओर किया और धुंध की ओर देखा। यह धुंध कितनी देर टिकेगी? जो दिख रहा था, उससे बदतर कुछ नहीं हो सकता था। इन निगोड़ी झाड़ियों में से हो कर हाथी दाँत की खोज में निकले इस कुर्त्ज़ तक पहुँचने की राह इतने ही ख़तरों से भरी थी मानो वह किसी शानदार क़िले में जादू के असर से बंद सोई हुई कोई राजकुमारी हो।

'क्या ख़याल है, क्या वो लोग हमारे ऊपर हमला कर सकते हैं?' मैनेजर ने गोपनीय स्वर में पूछा।

मुझे कई सीधे कारणों से लगता था कि वो हम पर हमला नहीं करने वाले थे। एक तो घनी धुंध छाई हुई थी। अगर वह अपनी नावों में किनारे से चलते तो वे खो जाते, जैसे कि हमारे साथ भी होना था अगर हम चलने की कोशिश करते। पर यह भी था कि मुझे दोनों ओर वह जंगल काफ़ी घना लग रहा था—और उसी में आँखें मौजूद थीं, आँखें जो हमारी निगरानी कर रही थीं। नदी किनारे की झाड़ियाँ बेशक काफ़ी घनी थीं; पर उसके पीछे जो निचली घास थी, उसमें से निकल पाना संभव था। पर जब धुंध थोड़ी देर के लिए हटी भी, मुझे पानी में कोई नाव नहीं दिखी थी—स्टीमर के पास तो कतई नहीं। पर जो चीख़ें हमने सुनी थीं—वह हल्ला जिस तरह का था, उसका ध्यान कर ही मुझे लग रहा था कि हमला नहीं होगा। उस शोर में तुरत ध्यान देने लायक़ कोई ख़ौफ़नाक बात न थी।....हालाँकि वह जंगली हिंसक शोर अचानक और बिना किसी चेतावनी के हुआ था, उसे सुनकर मुझे पीड़ा का ऐसा आभास हुआ था जिसे मैं नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। किसी वजह

से स्टीमबोट देख कर उन जंगली लोगों को बेइंतहा तकलीफ़ हुई थी। मैं सोच रहा था कि अगर कोई ख़तरा है तो वह इस बात का है कि हमलोग मानवीय भावनाओं की इस खुली अभिव्यक्ति के बिल्कुल निकट थे। तीव्र पीड़ा भी कभी-कभी हिंसा में बदल जाती है—हालाँकि आम तौर पर इससे उदासीनता ही पैदा होती है....

एजेंट यात्रियों की नज़रों को मैं कैसे बखानूँ! उनमें मुस्कराने या मुझे डाँटने लायक़ हिम्मत तो नहीं थी; पर मुझे लगा कि सोच रहे होंगे कि मैं डर के मारे पागल हो गया था। मैंने एक आम भाषण दिया। साथियो, परेशान होने की कोई बात नहीं। ध्यान रखें? हाँ, जैसा कि तुम सब सोच सकते हो, जैसे बिल्ली चूहे पर नज़र रखती है, मैंने पूरा ध्यान रखा कि धुंध कब साफ़ होती है; बाक़ी मीलों की ऊँचाई की रूई के ढेर तले दब जाने से जो दिख सकता था, हमारी आँखें उससे बेहतर उस धुंध में देख सकने के क़ाबिल न थीं। धुंध का ऐसा ही अहसास बदन पर भी हो रहा था—दमघोंटू, गर्म, जैसे गला दबा जा रहा हो। इसके अलावा, जो भी मैंने उनको कहा था, वह जितना भी ज़्यादा लगा हो, सब बिल्कुल सच था। बाद में जिसे हम हमला कहते रहे, वह महज हमें दूर रखने की कोशिश मात्र थी। उसमें हमले लायक़ कोई बात ही न थी—यहाँ तक कि ऐसा भी कुछ न था जिसे हम आम समझ के मुताबिक़, आत्म रक्षा के लिए उठाया उनका आक्रामक क़दम कह सकें। उन्होंने गहरी परेशानी से वह शोर मचाया था और उसके मूल में बस अपना बचाव भर था।

आख़िर, मेरे ख़याल से, धुंध के हटने के दो घंटों बाद हमला हुआ। शुरुआत कुर्त्ज़ के अड्डे के डेढ़ेक मील पहले हुई। हम किसी तरह हिलते-डोलते हुए एक घुमाव के पास से निकले ही थे, जब मुझे धार के बीच में घास भरा घना हरा छोटा द्वीप दिखा। बस एक ही वैसा द्वीप था, पर उसके पास जाने से समझ में आया कि वह रेत के लंबे किनारे की शुरुआत थी या यूँ समझो कि ऐसे कई सारे ज़मीन के टुकड़े नदी के बीच में बिखरे हुए थे। वे मटमैले थे; जैसे अभी ताज़ा धुले हों, और पानी के

नीचे उनकी पूरी शृंखला दिख रही थी, जैसे इंसान की पीठ में चमड़े के नीचे ऊपर से नीचे तक रीढ़ की हड्डी दिखती है। मेरी समझ के मुताबिक़ मैं इसके दायीं या बायीं किसी भी ओर जा सकता था। मुझे दोनों ओर के बारे में कुछ पता तो था नहीं। किनारे दोनों ओर एक ही जैसे थे, गहराई भी एक ही जैसी थी; पर चूँकि मुझे सूचना थी कि स्टेशन दायीं ओर है, इसलिए मैंने दायीं ओर जाना ही ठीक समझा।

बस उस ओर घुसते ही मुझे समझ में आ गया कि जितना मैंने सोचा था उससे भी ज़्यादा सँकरा जलपथ था। बायीं ओर दूर तक रेत फैली थी, और दायीं ओर सीधी ऊँची ढलान वाला किनारा था जिस पर घनी झाड़ियाँ थीं। झाड़ियों के ऊपर एक के बाद एक परस्पर सटे हुए पेड़ थे। धार के ऊपर घनी शाखाएँ छाई हुई थीं, और थोड़ी-थोड़ी दूर पर किसी पेड़ की लंबी शाखा धार पर मजबूती से टिकी हुई थी। देर दोपहर हो चुकी थी, जंगल के चेहरे पर उदासी थी, और पानी पर चौड़ी छाया की पट्टी फैल चुकी थी। इसी छाया में भाप से हमारी चाल बनी हुई थी, सोच ही सकते हो कि बहुत धीमी चाल थी। मैंने नौका को किनारे के पास ही रखा था, क्योंकि गहराई नापने के धातु की छड़ से मुझे यही समझ आया था कि पानी किनारे के पास ही गहरा था।

एक धीरज धरा भूखा साथी मेरे ठीक नीचे जहाज़ के अगले हिस्से की दिशा सँभाल रहा था। यह स्टीमबोट बिल्कुल ऊपरी मंज़िल के डैक के साथ बनी मालवाहक नौका जैसी थी। डैक पर सागौन की लकड़ी से बने दो कमरे थे, जिनके दरवाज़े और खिड़कियाँ भी थे। सामने के छोर पर भाप की भट्ठी थी और मशीनरी पीछे की ओर थी। इस सब के ऊपर हल्की छत थी, जिसे टेकों पर टिकाया गया था। उसी छत में से कीप निकली हुई थी, और कीप के सामने हल्की तख्तियों से बना एक छोटा कमरा चालक के कमरे का काम दे रहा था। इसमें एक बैठने की आरामकुर्सी थी, दो कैंप-स्टूल थे, एक कोने में कार्तूज़ भरी मार्टिनी-हेनरी बंदूक़ पड़ी थी, एक छोटी मेज़ और एक स्टीयरिंग ह्वील था।

सामने एक चौड़ा दरवाज़ा था और दोनों ओर चौड़ा शटर था। वैसे ये हमेशा खुले पड़े रहते थे। मैं अपने दिन उस छत के बिल्कुल सामने की ओर, दरवाज़े के पास, बैठे गुज़ारा करता था। रात को मैं आरामकुर्सी पर सोता या सोने की कोशिश करता। किसी तटीय क़बीले से आया एक तंदरुस्त काला आदमी मुख्य मल्लाह था, जिसे मेरे पूर्वाधिकारी बेचारे ने प्रशिक्षण दिया था। वह एक जोड़ा ताँबे के झुमके डाले हुए और कमर से एड़ियों तक एक नीली तहमद पहने हुआ था और अपने आप में ही ख़ुश रहता था। उस जैसा अस्थिर बेवकूफ़ मैंने कभी नहीं देखा था। उसके पास होने पर वह अकड़ के साथ इठलाता हुआ स्टीयरिंग चलाता, पर आँखों से ओझल होते ही वह तुरत किसी अजीब भुतहेपन का शिकार हो जाता और पल भर में यह निहायत कमज़ोर स्टीमबोट उसके वश में न रहती।

मैं गहराई मापने की छड़ को देख रहा था और हर बार उसे पानी से और ऊपर आते देख परेशान हो रहा था, जब मैंने देखा कि छड़ को सँभालने वाले आदमी ने अचानक अपना काम छोड़ दिया और वह डैक पर लंबा लेट गया। उसने छड़ को ऊपर खींचा तक न था। पर उसने उसे पकड़े रखा था और वह पानी में साथ बह रही थी। उसी वक़्त मैंने देखा कि मेरे ठीक नीचे आग झोंकने वाला भी झट से नीचे बैठ गया और अपना सिर बचाने लगा। मैं हतप्रभ था। फिर मुझे तुरत नदी की ओर देखना पड़ा क्योंकि सामने पेड़ के गिरे तने की वजह से कोई रुकावट थी। चारों ओर से काठियाँ, छोटी काठियाँ उड़ कर आ रही थीं—मेरे नाक के पास से साँय-साँय गुज़र रही थीं, मेरे सामने गिर रही थीं, मेरे पीछे चालक वाले कमरे में टकरा रही थीं। इस सारे वाकए के दौरान नदी, किनारे, जंगल, सब तरफ़ सन्नाटा था—बिल्कुल चुप। मैं सिर्फ़ पीछे के चक्के की भारी छपछपाहट और इन काठियों की ठक-ठक सुन पा रहा था। हम पानी में गिरे तने के पास से किसी तरह निकले। हम पर तीर चलाए जा रहे थे! अरे बाप रे, तीर! मैंने तुरंत अंदर आकर ज़मीन की तरफ़ के शटर गिरा दिए। वह बेवकूफ़ मुख्य

मल्लाह अपने हाथ आरों पर रखे, बँधे हुए घोड़े की तरह, घुटने ऊपर उठा-उठाकर पटक रहा था और अपने होंठ चबाते जा रहा था। वह जाए भाड़ में! हम किनारे के दस फीट पास डगमगा रहे थे। मुझे शटर लगाने के लिए बाहर झुकना पड़ा और मैंने अपने कद की सीध में पत्तों के बीच मेरी ओर सीधे ख़ौफ़नाक़ तरीक़े से देखता हुआ एक चेहरा देखा; और फिर जैसे कि मेरी आँखों से कोई परदा हटा दिया गया, मैंने उस घनी उदासी वाले जंगल में खुले सीने, बाँहे, टाँगें, चमकती आँखें देखीं। झाड़ियाँ चमकते तांबई रंग के इंसानी जिस्मों की हलचल से आबाद थीं। शाखाएँ हिल रही थीं, इधर से उधर होते हुए सरसराहट की आवाज़ कर रही थीं और उनमें से तीर उड़ते आ रहे थे, और फिर मैंने शटर गिरा दिया।

'नाव सीधी चलाओ,' मैंने मल्लाह से कहा।

उसने अपना सिर सीधा रखा, चेहरा सामने की ओर था; पर उसकी आँखें घूम रही थीं, वह अपने पैर उठाता और फिर धीरे से उन्हें नीचे रखता रहा, मुँह से झाग-सा निकल रहा था। 'शांत रहो!' मैंने गुस्से में कहा। मेरा कहना ऐसा था जैसे किसी दरख़्त से मैं हवा में हिलने से मना करता। मेरे नीचे लोहे के डैक पर कई लोगों की हलचल चल रही थी; तरह-तरह की घबराई आवाज़ें आ रही थीं; कोई चिल्लाया, 'वापस नहीं जा सकते क्या? मुझे आगे 'V' आकृति की लहर दिखी। अरे? पानी में एक और पेड़ का तना! मेरे पैरों के नीचे से गोलीबारी होने लगी। एजेंट यात्रियों ने अपनी मैनचेस्टर बंदूक़ें निकाल ली थीं और झाड़ियों पर शीशा बरसाने लगे थे। धुएँ का गुबार उठा और सामने की ओर बढ़ा। मैं उसे देख गालियाँ देने लगा। अब मैं उस उमड़ती लहर या तने को देख नहीं पा रहा था। मैं कमरे के दरवाज़े पर खड़ा बाहर की ओर देख रहा था और तीरों के झुंड आते रहे। हो सकता है उनमें जहर लगा हो, पर उन्हें देख कर लग रहा था कि उनसे कोई बिल्ली तक न मरती। झाड़ियों से चीख़ें आने लगीं। हमारे लकड़ी काटने वालों ने जंगी हमले जैसी हुंकार भरी; मेरे पीछे से

राइफिल चलने की आई आवाज़ से मेरे कान बहरे हो रहे थे। मैंने कंधा मोड़कर देखा, और जब मैं दौड़कर स्टियरिंग चरखी को सँभालने गया तो पायलट कमरा अभी भी शोर और धुएँ से भरा था। उस बेवकूफ़ निगर ने सब कुछ छोड़ दिया था, शटर खोल दिए थे और मार्टिनी हेनरी मशीन गन से फायरिंग करते जा रहा था। वह खुली जगह पर लाल आँखें लिए खड़ा था। मैंने चिल्लाकर उसे वापस आने को कहा और साथ ही हमारी स्टीमर की दिशा में अचानक आए मोड़ को सीधा किया। होश गँवाते धुएँ के बीच ही आगे कहीं पानी में वह तना पड़ा था और मैं चाहता भी तो नौका को मोड़ने के लिए जगह निकाल पाना संभव न था। हाथ में वक़्त बिल्कुल नहीं था, इसलिए मैं किनारे की ओर नौका ले गया—बिल्कुल किनारे के पास, जहाँ मुझे मालूम था कि पानी सबसे गहरा है।

किनारे से पानी पर लटकती झाड़ियों और टूटी शाखाओं और उड़ कर गिरे पत्तों के बीच में से हम धीरे से रास्ता बनाते रहे। जल्द ही नीचे से चल रही गोलीबारी रुक गई। मुझे पता था कि जब छर्रे ख़त्म हो जाएँगे तो गोलीबारी रुक जाएगी। मैंने चालक कक्ष की ओर ध्यान दिया जहाँ एक ओर के शटर के छेद से आकर दूसरी ओर के शटर में छेद बनाती निकलती साँय-साँय चल रही थी। राइफ़ल खाली कर किनारे की ओर देख चिल्ला रहे उस पागल मल्लाह के पार मैंने देखा पैरों तक झुके हुए, उछल रहे, फिसल रहे, कोई साफ़ तो कोई अधूरा, कोई ग़ायब होता हुआ, कई सारे अजीब से लोग दौड़ रहे थे। अचानक एक बड़ी सी चीज़ परदे के सामने हवा में दिखी, राइफ़ल हवा में उछली और वह आदमी तेज़ी से पीछे की ओर हटा, गर्दन मोड़ कर असाधारण, अर्थपूर्ण, जानी-पहचानी सी नज़र से उसने मेरी ओर देखा और मेरे पैरों पर गिर पड़ा। उसका माथा स्टीयरिंग चर्खी से दो बार टकराया और एक लंबा डंडा जैसा दिखते कुछ का एक छोर इधर-उधर टकराता रहा और आख़िर कैंप स्टूल को उलट दिया। ऐसा लग रहा था मानो किनारे पर खड़े किसी से वह डंडा छीनते हुए उसने इतनी ताक़त लगाई कि अपना संतुलन खो बैठा। धुएँ की पतली चादर हट गई

थी, हम पानी में पड़े तने से आगे निकल आए थे और सामने नज़रें डालते हुए मुझे दिख रहा था कि आगे कोई सौ गज़ की दूरी पर मैं आराम से मुड़ पाऊँगा और किनारे से दूर आ जाऊँगा। पर मेरे पैरों पर गीलेपन और ताप का अहसास इतना बढ़ रहा था, इसलिए मुझे नीचे झाँकना पड़ा। वह आदमी घूम कर अपनी पीठ पर लेट गया था और सीधे मेरी ओर देख रहा था। उसने दोनों हाथों से उस डंडे को पकड़ा हुआ था। वह एक भाले में जुड़ी लाठी थी, जो खुली जगह में से या तो फेंका या धकेला गया था और उसकी पसलियों से थोड़ा नीचे उसके जिस्म के एक तरफ़ धँस गया था। भाले की नोक भयानक रूप से सीना चीरते हुए अंदर चली गई थी। मेरे जूते खून से भर गए थे। स्टीयरिंग चर्खी के ठीक नीचे काफ़ी सारा गाढ़ा चमकता हुआ लाल खून पड़ा था। उसकी आँखों में अद्भुत लिश्कारे-सी चमक थी। गोलीबारी फिर शुरू हो गई। उसने घबराते हुए मेरी ओर देखा। उसने भाले को यूँ थामा हुआ था जैसे वह कोई मूल्यवान संपत्ति थी जिसे छीन लेने से वह मुझे रोकना चाहता हो। मुझे उसकी नज़र से बच कर स्टीयरिंग पर ध्यान देने के लिए कोशिश करनी पड़ी। एक हाथ से मैंने सिर के ऊपर भाप छोड़ने वाली सीटी को ढूँढ़ा और कई बार जल्दी-जल्दी झटकों में सीटी बजाई। ग़ुस्से वाली जंगी चीख़ों की हलचल तुरत रुक गई और जंगल की गहराई से पीड़ा भरी एक ऐसी काँपती हुई लंबी तीख़ी चीख़ सुनाई पड़ी मानो धरती पर जीवन की आख़िरी उम्मीद ख़त्म हो रही थी। झाड़ी में काफ़ी हलचल हुई; तीरों की बौछार रुक गई। तुरत कुछेक बार बंदूक़ें चलीं—उसके बाद सन्नाटा छा गया, और तब जाकर मैं पीछे वाले चक्के की सुस्त छपछपाती आवाज़ सुन सका। मैंने जल्दी से नाव को दायीं ओर घुमाया और ठीक तभी पाजामा पहने बड़ा उत्तेजित और तल्ख एक गोरा एजेंट दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ।

'मुझे मैनेजर ने भेजा है—' उसने औपचारिक सुर में बोलना शुरू किया, और फिर तुरत रुक गया। 'हे भगवान!' घायल आदमी को देखकर वह बोला।

हम दो गोरे उसके ऊपर खड़े थे। उसकी चमकती कुछ पूछती-सी आँखें हम दोनों को परेशान कर रही थीं। मैं कह सकता हूँ कि ऐसा लग रहा था कि वह जल्दी ही हमसे हमें समझ आने वाली भाषा में कुछ पूछेगा, पर वह बिना कोई आवाज़ निकाले, बिना किसी अंग में हलचल के, बिना किसी पेशी की फड़कन के ही मर गया। बस आख़िरी पल में मानो किसी अनदेखे अज्ञात संकेत या अनसुनी फिसफिसाहट के जवाब में उसने देर तक भौंहें उठाईं और उसके उस तेवर से मौत के उसके काले मुखौटे को मानो एक अकल्पनीय गंभीर, चिंताग्रस्त और भयावह अभिव्यक्ति मिल गई। उस उत्सुकता भरी दृष्टि की चमक खालीपन की पारदर्शिता में विलीन हो गई।

'क्या तुम स्टीयरिंग सँभाल लोगे?' मैंने अधीरता से उस एजेंट से पूछा।

उसे देखकर शक हो रहा था कि बह कर पाएगा कि नहीं, पर मैंने उसकी बाँह पकड़ ली और वह तुरत समझ गया कि कर पाए या नहीं मुझे स्टीयरिंग उसके हाथ थमानी है। सच बात यह है कि मैं अपने जूते-मोजे बदलने के लिए मरता जा रहा था।।

'वह मर गया है,' बंदे ने बड़ी गंभीरता से कहा।

'कोई शक नहीं,' मैंने पागलों की तरह जूते के फीतों को खींचते हुए कहा। 'और हाँ, अब तक तो मिस्टर कुर्त्ज़ भी मर गया होगा।'

उस वक़्त यही बात दिमाग़ में हावी थी। मैं बिल्कुल हताश हो चुका था, मानो मुझे यह अहसास था कि मैं ऐसी किसी चीज़ का पीछा कर रहा हूँ जिसका कोई अस्तित्व नहीं। अगर मेरा इतनी दूर आने का मक़सद सिर्फ़ मिस्टर कुर्त्ज़ से बातें करने का था, तो भी मुझे इससे अधिक हताशा न होती। बातें करने....मैने अपना एक जूता नौका के पार पानी में फेंका और मुझे समझ में आया कि अब तक मैं इसी उम्मीद में था कि—कि कुर्त्ज़ के साथ बात कर सकूँगा। मैं इस अजीब नतीजे

पर पहुँचा कि मैंने अब तक यह कल्पना भी न की थी कि वह आदमी विमर्श करने के अलावा कुछ काम भी करता होगा। मैंने ऐसे नहीं सोचा कि, 'अब मैं उससे मिल न पाऊँगा,' या 'मैं अब उससे कभी भी हाथ न मिला पाऊँगा,' पर मैंने सोचा कि 'मैं उसे कभी सुन न पाऊँगा।' वह आदमी मेरे लिए एक आवाज़ था। ऐसा नहीं कि मैंने उसके बारे सोचते हुए किसी कामकाज की कल्पना की ही न थी, आख़िर मुझे ईर्ष्या और प्रशंसा के कई सुरों में बतलाया गया था कि उसने सभी और एजेंटों को मिलाकर जितना हो सकता था, उसकी तुलना में और भी अधिक हाथी दाँत इकट्ठे किए थे, ख़रीदे थे, चुराए और हड़पे थे। बात यह नहीं थी। बात यह थी कि वह एक कुशल आदमी था, और उसके सभी गुणों में से सबसे अधिक उल्लेखनीय और उसे ऊँचे दर्जे पर रखने वाला कौशल उसकी बातें करने की कुशलता थी। अगम अँधेरे की गहराइयों से छलना का बहाव बन कर आती उसकी बातें चौंकाती, चौंधियाती, उल्लास से भरी होतीं, और साथ ही सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली भी थीं। वे किसी काँपती-फैलती रोशनी की तरह और साथ ही भ्रम में डालने की महारत से भरी भी थीं।

दूसरा जूता भी नदी के शैतान ईश्वर पर उड़ता फेंका गया। मैंने सोचा, 'हे प्रभु! अब बात ख़त्म हो गई, हम देर से पहुँचे हैं; किसी भाले, तीर या लाठी की मार से वह ख़त्म हो गया होगा, वह कौशल ख़त्म हो गया। अब मैं सचमुच कभी उस बंदे को सुन न पाऊँगा।' झाड़ियों के जंगली लोगों की चीख़ों में जो देखा था, उससे भी ज़्यादा चौंकाने वाली भावुकता के सागर में मैं डूबा जा रहा था। अगर मैं अपने जीवन की नियति तक न पहुँच पाता, या मेरे जज़्बात मुझसे छीन लिए जाते, तो भी मैं ऐसी अकेलेपन की पीड़ा से न तड़पता....अरे, कौन ऐसे जानवरों की तरह लंबी साँसें खींच रहा है? मेरी बातें बकवास लगती हैं? ठीक है, बकवास। हे प्रभु! एक इंसान क्या कभी—अरे लाओ, मुझे ज़रा तंबाकू दो।'....

थोड़ी देर के लिए गहरा सन्नाटा था। फिर एक सलाई जली और मार्लो का दुबला चेहरा दिखा। मार्लो की शक्ल में थकान और खालीपन था, पलकें झुकी थीं और चेहरे पर झुर्रियाँ लटकी थीं और शक्ल में एकाग्रता दिखती थी। लगातार पाइप की कशों से होती हल्की कंपन में उसकी शक्ल रात में जैसे आगे-पीछे होती जा रही थी। सलाई बुझ गई।

'बकवास!' वह चीख़ा, 'आपबीती सुनाने का यही सबसे बुरा पक्ष है....अब तुम्हें देखो, हरेक के दो-दो ठिकाने हैं, जैसे कोई बड़ा जहाज़ दो लंगर डाल कर खड़ा हो। एक कोने पर कसाई की दूकान है, दूसरे कोने पर पुलिस का सिपाही तुम्हारी सुरक्षा के लिए तैनात है। तुम स्वस्थ जीवन बिता रहे हो। साल की शुरुआत को आख़िर तक मौसम भी ख़ुशगवार रहता है। और तुम्हें मेरी बातें बकवास लगती हैं! होने दो बकवास—भाड़ में जाए बकवास! बकवास! मेरे दोस्तो, जिस आदमी ने घबराहट में नए जूतों का जोड़ा उतार नदी में फेंक दिए हों, उससे तुम और क्या उम्मीद रख सकते हो! अब सोचने पर कमाल लगता है कि मैं रोया नहीं था। कुल मिलाकर मैं जैसा भी रहा, मुझे उस पर गर्व है। गुणवान कुर्त्ज़ की बातें सुनने के अपरिमेय सौभाग्य से वंचित होने का गहरा झटका मुझे मिला था। वैसे सही है कि मैं ग़लत सोच रहा था। ख़ुशक़िस्मती मेरा इंतज़ार कर रही थी। हाँ जी, मैंने उसे ख़ूब सुना। और मैंने ठीक सोचा था, क्या आवाज़ थी! वह बस एक पुरज़ोर आवाज़ ही था। और मैंने सुना—उसे—वह आवाज़—और दीगर आवाज़ें—वे सारी बस आवाज़ों के सिवा कुछ न थीं—उस वक़्त की स्मृति मेरे इर्द-गिर्द मँडराती है, स्थिर, जैसे कि कोई अमूर्त्त, अनैतिक, बेमतलब, भयंकर, जघन्य, जंगली या कि बस शरारती गपशप का रुकता-सा कंपन। आवाज़ें, आवाज़ें—वह लड़की भी—अब—'

देर तक वह चुप रहा।

'आख़िरकार उसके गुणों के प्रेत को मैंने एक झूठ से दफ़ना दिया,' अचानक वह बोला। 'लड़की! अरे? मैंने क्या लड़की कहा। हाँ, उसे

इस सब के बीच नहीं लाना—बिल्कुल नहीं। वे—औरतें, मतलब—वे इसमें शामिल नहीं है—उन्हें अलग ही रहना चाहिए। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें अपनी ख़ूबसूरत दुनिया में रहने दें, ताकि हमारी दुनिया बदतर न हो जाए। जी, उसे इससे अलग रखना ही होगा। काश कि कुर्त्ज़ के उस बेजान दिखते शरीर को तुम सुन पाते, 'मेरी प्रिय।' फिर तुम ख़ुद समझ लेते कि वह इस सबसे अलग क्यों है। और मिस्टर कुर्त्ज़ के ललाट की वह उठती हड्डी! लोग कहते हैं कि कुछ देर तक शरीर पर बाल बढ़ते रहते हैं, पर यह तो कमाल का नमूना था—बिल्कुल गंजा। जंगल ने उसके सिर पर थापियाँ दी थीं और अरे वाह! वह गेंद सरीखा था—हाथी दाँत की गेंद-सा; जंगल ने उसे सहलाया और देखो कि वह सूख गया था; जंगल ने उसे समेटा, प्यार किया, गले लगाया, अपनी नसों में समाया, उसका मांस खाया और फिर किसी अनजान शैतानों वाली रस्म से उसकी आत्मा को अपनी आत्मा के अंदर बंद कर लिया। वह जंगल का शरारती बिगड़ैल बच्चा था। हाथी दाँत? मुझे यही लगता है। ढेरों, अंबार। मिट्टी की बनी पुरानी झोंपड़ी के हर चप्पे में हाथी दाँत भरे थे। देखकर लगता था कि सारे मुल्क में ऊपर से नीचे कहीं भी एक भी हाथी न बचा होगा, जिसके दाँत रह गए हों। मैनेजर ने उपेक्षा से कहा, 'ज़्यादातर मरे हुए जानवरों के हैं।'

असल में उनसे ज़्यादा जीवाश्म तो मैं दिखता था। पर ज़मीं से खोदकर निकालने पर उनको जीवाश्म कहा जाता है। पता चला कि स्थानीय काले लोग कभी-कभार हाथी दाँत दफ़ना देते हैं—ज़ाहिर है कि इस ढेर को वे इतनी ज़्यादा गहराई तक दफ़ना न सके थे कि मिस्टर कुर्त्ज़ अपनी नियति से बच सकें। हमने वह ढेर उठाकर स्टीमबोट में डाल दिया। बहुत सारा डैक पर ही डालना पड़ा।

उसने आँखें भर कर इस ढेर को देखा होगा और आख़िरी दम तक ऐसा कर पाने की ख़ुशी उसकें साथ रही थी। अगर तुम उसे सुन पाते, 'मेरे हाथी दाँत।' हाँ जी, मैंने उसे सुना, 'मेरी प्रिय, मेरे हाथी दाँत, मेरा अड्डा,

मेरी नदी, मेरा....', हर कुछ उसका अपना था। मैं इस उम्मीद से साँस रोके खड़ा था कि उसकी बातें सुनकर जंगल यूँ दहाड़ कर हँस पड़ेगा कि तारे अपनी तय जगह से हिल जाएँगे। हर कुछ उसकी संपत्ति था—पर यह सामान्य बात थी। जानने की असल बात तो यह थी कि वह ख़ुद किसकी संपत्ति था, अंधकार की कितनी ताक़तें उसे अपनी संपत्ति मानती थीं। यह बात थी, जिसे सोचकर हम काँपते जा रहे थे। इसकी कल्पना करना असंभव था—ऐसी बातों को सोचना सेहत के लिए अच्छा भी न था। सचमुच उसने उस ज़मीं के शैतानों के हाथ ख़ुद को बेच दिया था। यह बात तुम्हें समझ नहीं आ सकती। कैसे समझोगे?—तुम्हारे पैरों तले ठोस ज़मीं है, तुम्हारे पड़ोसी भले लोग हैं, जो तुम्हें ख़ुश देखने को तत्पर हैं। कसाई और पुलिस के सिपाहियों के बीच बदहाली और मौत के साए और पागलख़ानों से तुम्हें बचाने आए तुम्हारे पड़ोसी सावधानी से आकर तुम्हें सँभाल लेंगे। तुम सोच भी क्या पाओगे कि जब चारों ओर सन्नाटा हो, कहीं कोई पुलिस का सिपाही न हो, कहीं कोई पड़ोसी चेतावनी देने न आ पाए कि लोग क्या कह रहे हैं, ऐसे सन्नाटे में एक आदमी के खुले पैर उसे कैसी आदिम प्रवृत्तियों की ओर ले जा सकते हैं। इन छोटी बातों से दुनिया बदल जाती है। जब ये नहीं होतीं, तो अपनी अंदरूनी ताक़त और अपनी आस्थाओं पर ही आदमी निर्भर करता है। यह हो ही सकता है कि तुम्हें इतनी समझ ही न हो कि तुम ऐसी ग़लत स्थितियों में आ फँसो—तुममें इतनी क़ाबिलीयत न हो कि तुम्हें पता न चले कि तुम पर अंधकार की ताक़तों ने हमला कर दिया है। मेरा मानना है कि कोई नासमझ आदमी शैतान से समझौता नहीं कर सकता; या तो नासमझी हद दर्जे की होगी या शैतान ही ऐसी हदों के पार होगा। ऐसा भी हो सकता है कि कोई ऐसा कमाल का लाजवाब प्राणी हो कि उसे अलौकिक दृश्यों और आवाज़ों के अलावा और कुछ दिखता-सुनता न हो। ऐसे हाल में धरती महज एक पड़ाव है और यह हमारे लिए अच्छी या बुरी बात होगी, इस पर कुछ भी कहने का दावा मैं नहीं कर सकता।

पर हममें से अधिकांश लोग इन दो छोरों के बीच में कहीं टिके होते हैं। धरती पर हम जीने के लिए आए हैं, जहाँ सिर्फ़ देखने-सुनने ही नहीं, गंधाती चीज़ों से भी हमारा वास्ता पड़ता है, हे प्रभु!—ऐसा नहीं होता कि जैसे आपको मरे हुए दरियाई घोड़े की बदबू आए और आप प्रदूषित न महसूस करें। अब सोचो, है कि नहीं? यहाँ हमारी अंदरूनी ताक़त सामने आती है, कि हम इन तकलीफ़देह अहसासों को वक़्त के गुज़रते गड्ढ़ों में गाड़ते चलें और ख़ुदी को नहीं, बल्कि कठिन पीठ तोड़ ज़िंदगी के लिए अपनी बलि दें—और यह बड़ा कठिन काम है। ध्यान रखो कि मैं कोई बहाना या कुर्त्ज़ को बचाने का तरीक़ा नहीं ढूँढ़ रहा—मैं यह कोशिश कर रहा हूँ कि मिस्टर कुर्त्ज़ को—या मिस्टर कुर्त्ज़ की छाया सरीखे दिखते उस आदमी को बयाँ कर सकूँ। बिल्कुल ग़ायब हो जाने से पहले न जाने किस कोने से आया वह दीक्षा लिया हुआ प्रेत-सा आदमी मुझमें यह विपुल आत्म-विश्वास भर गया। ऐसा इसलिए हुआ कि वह मुझसे अंग्रेज़ी में बातें कर सकता था। अपने मौलिक रूप में कुर्त्ज़ की शुरुआती तालीम इंग्लैंड में हुई और—जैसा कि वह भले मन से ख़ुद ही कहता था—उसके जज़्बात सही जगह पर थे। उसकी माँ आधी अंग्रेज़ थी औरं पिता आधा फ्राँसीसी। कुर्त्ज़ के बनने में समूचे यूरोप की भागीदारी थी। और धीरे-धीरे मुझे पता चला कि 'द इंटरनैशनल सोसायटी फॉर द सप्रेसन ऑफ सैवेज कस्टम्स' (जंगली जीवन शैली को ख़त्म करने के लिए बनी अंतरराष्ट्रीय संस्था) ने उसको यह ज़िम्मेदारी दी थी कि वह भविष्य में काम आने लायक़ एक रिपोर्ट तैयार करे और उसने वह रिपोर्ट लिखी भी थी। मैंने देखी है। मैंने पढ़ी है। बहुत ही उम्दा लिखा था, भाषा की कुशलता उसके हर हिस्से में दिखती थी, पर मेरे ख़याल से उस लेखन में तनाव बहुत था। उसे छोटे अक्षरों में सत्रह पन्ने लिखने का वक़्त मिल गया था। पर यह सब उसके—कैसे कहें—दिमाग़ बिगड़ने से पहले की बात होगी, जिसके बाद वह आधी रात तक जंगलियों के साथ नृत्यों में अध्यक्षता करता

रहा और जहाँ ऐसी बतला न सकने वाली रस्में होती थीं, जैसा कि मैंने कई सूत्रों से न चाहते हुए कई बार सुना, उसे कुछ (नरमांस) खाने को दिया जाता था। उसे मतलब मिस्टर कुर्त्ज़ को ही—समझे न? पर वह लेखन लाजवाब था। बाद में मिली सूचना के अनुसार अब मुझे उस लेख का पहला अनुच्छेद अशुभ संकेत-सा देता लगता है। उसने इस तर्क के साथ शुरू किया था, कि जिस तरह के विकास के साथ हम गोरे वहाँ आए थे, 'उन्हें (जंगली मूल निवासियों को) हम अलौकिक प्राणी (देवता) लगते होंगे—हमें उनके साथ देवता की तरह पेश आना चाहिए', वग़ैरह-वग़ैरह। 'अपनी इच्छा शक्ति के सामान्य इस्तेमाल से हम उन्हें असीम भलाई के लिए प्रेरित कर सकते हैं,' आदि-आदि। वहीं से वह मुझे साथ ले उड़ा। वह भूमिका अद्‌भुत थी, हालाँकि उसे याद रखना मुश्किल है। उसे पढ़कर मुझे ऐसा अहसास हुआ कि विशाल मायावी प्रदेश पर दयालु शासकों का आधिपत्य हो सकता है। पढ़ते हुए उत्साह से मेरे शरीर में सनसनी फैल रही थी। यह शब्दों—धधकते सुंदर शब्दों से सधे सुभाषित कथ्य की असीम ताक़त थी। मुहावरों के जादुई प्रवाह को रोकती कोई व्यावहारिक सलाह नहीं थी, बशर्ते बहुत बाद में आख़िरी पन्ने के निचले हिस्से पर अस्थिर हाथों से लिखी टिप्पणी को किसी पद्धति की व्याख्या न माना जाए। बड़ी सरल शैली थी और भलमनसाहत की हर भावना को छू जाने वाली अपील के आख़िर में जैसे शांत आकाश में चौंधियाती हुई बिजली-सा डरावना धधकता संदेश था—'सब बदमाशों को मार डालो!' रोचक बात यह थी कि अपनी इस पुनश्च सलाह को वह भूल चुका लगता था, क्योंकि जब वह होश में आया, तो उसने बार-बार मुझे अपने 'मेरे पर्चे' (जैसा उसने कहा) को सावधानी से सँभाल रखने को कहा, क्योंकि उसका ख़याल था कि पेशे में उसके भविष्य पर इसका भारी असर पड़ेगा। इन सभी बातों की पूरी सूचना मेरे पास रह गई और फिर हुआ भी ऐसा कि उसके गुज़रने के बाद मुझे ही उसका सबकुछ सँभालना पड़ा। मैंने इस संबंध

में इतना कुछ किया है कि मुझे बेशक यह हक़ है कि मैं चाहूँ तो मैं इस पर्चे को विकास की कूड़े दानी में तमाम और कचरे के साथ या मुहावरे में कहें तो सभ्यता के मृत चौपायों के साथ फेंक दे सकता हूँ। पर बात यह है कि यह निर्णय मेरे हाथों में नहीं है। उसे भूला नहीं जाएगा। वह जो कुछ भी था, साधारण आदमी नहीं था। उसमें यह ताक़त थी कि वह चाहता तो अपने अनुयायिओं को शौक़ से या डरा-धमका कर अपनी मर्जी से तांडव नाच नचवा सकता था। उन यात्री एजेंटों के छोटे दिलों में क्षोभ भर सकता था। कम से कम एक आदमी उसका समर्पित मित्र था, और इस भले आदमी को, जो न नासमझ, न स्वार्थी था, उसने जीत लिया था। नहीं, मैं उसे भूल नहीं सकता, पर यह मैं नहीं कहूँगा कि उस तक पहुँचने के लिए हमारे एक आदमी का मारा जाना कोई बड़ी बात न थी। मैं अपने उस मर चुके मुख्य मल्लाह से बिछुड़ा हुआ महसूस कर रहा था। उसका शरीर पायलट वाले कमरे में पड़ा था, फिर भी उसका न होना मुझे कचोट रहा था। तुम्हें अजीब लग सकता है कि यह मानो सहारा के घने रेगिस्तान में किसी रेत कण के लिए मैं अफ़सोस कर रहा हूँ। अरे, इस बात को समझो कि उसने मेरे पीछे खड़े हो नौका को चलाया था—वह मेरी मदद कर रहा था—वह मेरे लिए एक ज़रूरी अंग-सा था। यह एक क़िस्म का जुड़ाव था। वह नौका चलाने में मेरी मदद करता था और मैं उसकी देखभाल करता था, उसकी कमज़ोरियों पर चिंतित रहता था और इस तरह हम दोनों के बीच एक सूक्ष्म बंधन गढ़ा जा चुका था और मुझे इसकी समझ तब आई जब यह संबंध अचानक टूटा। आज तक मेरी स्मृति में उसकी वह गहरी नज़दीकी भरी नज़र बँधी है जब उसे वह घातक चोट लगी थी—जैसे कि वह किसी अनोखे क्षण में दूर के रिश्ते का दावा कर रही हो।

बेचारा! अगर उसने शटर बंद रखा होता। ज़रा भी संयम न था—कोई संयम नहीं—बिल्कुल कुर्त्ज़ की तरह—जैसे कोई पेड़ हवा के बहाव में झुकता चला जाए। चप्पलें पहनते ही पहले उसके बदन के बायीं तरफ़

से झटकों से हिलाकर मैंने भाला निकाला और फिर उसे खींचकर बाहर निकाला। मुझे मानना पड़ेगा कि भाला निकालते हुए मैंने अपनी आँखें बिल्कुल बंद कर रखी थीं। चौखट के ऊपर से निकलती हुई उसकी एड़ियाँ उछलीं। उसके कंधे मेरे सीने से चिपटे थे; मैंने दम लगाकर उसे पीछे से खींचा। क्या बतलाएँ वह कितना भारी था, बहुत भारी, धरती पर किसी भी इंसान से ज़्यादा भारी। फिर बिना किसी आडंबर के मैंने उसे पानी में फेंक दिया। धार ने उसे ऐसे समेटा जैसे कि वह कोई घास का गुच्छा हो और हमेशा के लिए दृश्य से ओझल होने के पहले मैंने उस शरीर को दो बार कलाबाज़ियाँ खाते देखा। उत्तेजित नीलकंठ पक्षियों के झुंड की तरह आपस में बतियाते सारे एजेंट यात्री और मैनेजर परेशान थे और पायलट के कमरे के पास छत वाली डैक पर इकट्ठे हो गए थे। उनकी बड़बड़ाहट में परेशानी की एक लहर थी जो उनकी नज़रों में मेरी संवेदनाहीन जल्दबाज़ी की वजह से थी। मैं नहीं जानता कि वे लोग उस शरीर को वहीं पड़े रहने देना क्यों चाहते थे। हो सकता है कि वे इसे मरहम लगाकर रखना चाहते हों। पर मैं नीचे वाली डैक से एक और चिंताजनक बड़बड़ाहट सुन पा रहा था। हमारे लकड़ी काटने वाले साथी भी परेशान थे और उनके पास बेहतर वजह थी—पर मुझे कहना पड़ेगा कि उनकी वह वजह हमें स्वीकार न थी। बिल्कुल जी! मैंने तय कर लिया था कि अगर मेरे बिछुड़े मल्लाह को भोजन बनना ही है तो वह केवल मछलियों के लिए है। जब वह ज़िंदा था तो दोयम दर्जे का मुख्य मल्लाह था, पर अब मरने के बाद शायद वह अव्वल दर्जे का प्रलोभन बन गया था और इस वजह से कुछ चौंकाने वाली गड़बड़ होने की संभावना बढ़ चली थी। दूसरी बात यह कि मैं वापस स्टीयरिंग चर्खी पर जाने को अधीर हो चला था; गुलाबी पाजामे वाला बंदा इस काम में बिल्कुल निकम्मा साबित हो रहा था।

उस सामान्य शव-संस्कार के तुरंत बाद मैंने यही किया। हम आधी गति से चल रहे थे, धार के बिल्कुल बीच में थे, और मैं अपने बारे में चल रही बातचीत सुन रहा था। उन्होंने कुर्त्ज़ की उम्मीद छोड़ दी थी।

उन्होंने अड्डे को देख पाने की उम्मीद छोड़ दी थी। उनके ख़याल से कुर्त्ज़ मर चुका था और अड्डा जला दिया जा चुका था—वग़ैरह वग़ैरह। लाल बालों वाला एजेंट यात्री इस ख़याल में उत्तेजित हुआ जा रहा था कि कम से कम बेचारे कुर्त्ज़ का सही-सही बदला तो चुका लिया गया। 'क्यों, हमने झाड़ियों में उन सालों में कइयों को तो ज़िबह कर दिया होगा, है न? तुम्हें क्या लगता है? हाँ!'

ख़ून का प्यासा वह अदरक-सा दिखता भिखमंगा उत्साह से नाच रहा था। और यही बंदा घायल मल्लाह को देखकर बेहोश होने वाला था! मुझसे कहे बिना न रहा गया, 'हाँ, धुआँ तो तुम्हारी बंदूक़ से ख़ूब निकला था।'

झाड़ियों के हिलने-डुलने और ऊपर-नीचे होने से मैंने यह देख लिया था कि ज़्यादातर गोलियाँ निशाने से कहीं ज़्यादा ऊपर को जा रही थीं। कंधे पर बंदूक़ धर निशाना लिए बिना किसी को भी मार गिराना संभव नहीं है। पर ये बंदे आँखें मूँद कर कूल्हों से गोलियाँ चला रहे थे। मैं कहता रहा कि उनका भागना—और मैं सही कह रहा था—भाप की सीटी की विकट आवाज़ की वजह से था। यह सुनकर वे कुर्त्ज़ को भूल गए और अप्रिय ढंग से मेरा विरोध करते हुए शोर मचाने लग गए।

मैनेजर चर्खी के पास ही खड़ा था। उसने गोपनीय ढंग से बड़बड़ाते हुए कहा कि किसी भी हाल में अँधेरा होने से पहले ही हमें धार पर जितनी दूर हो सके पहुँचना होगा। तभी मुझे थोड़ी दूर पर नदी के किनारे साफ़ मैदान-सा और एक मकान का ढाँचा-सा दिखा। मैंने पूछा, 'वह क्या है?' वह अचंभित होकर तालियाँ बजाने लगा। मैंने तुरंत आधी स्पीड पर ही किनारे की ओर नौका बढ़ाई।

दूरबीन से मुझे कम पेड़ों वाली एक चट्टान की ढलान और जंगली घास की कटाई की हुई ज़मीन दिखलाई दे रही थी। चोटी पर एक जर्जर-सी इमारत ऊँची घास में आधी दबी हुई दिख रही थी। दूर से शिखर-सी

दिखती छत में बड़े छेद दिख रहे थे; जंगल और दरख़्त इसके पीछे का दृश्य-सा लग रहे थे। कोई बाड़ा या घेरा नहीं था। पर पहले रहा होगा, क्योंकि वहाँ सँकरे खंभे लगे दिख रहे थे। इन खंभों की लकड़ी बिना किसी हिसाब के काटी गई दिखती थी। उनके ऊपरी हिस्सों को कढ़ाई किए गए गोलकों से सजाया गया था। उनके बीच पटरियाँ या सलाख़ें, जो भी थीं, ग़ायब हो गई थीं। बेशक इसके चारों ओर जंगल घिरा था। नदी का किनारा साफ़ दिख रहा था। और पानी के बिल्कुल पास गड्डे के चक्के जैसी दिखती टोपी के नीचे मुझे एक गोरा आदमी दिखा जो लगातार अपनी पूरी बाँह हिलाता हमें बुलाता जा रहा था। ऊपर और नीचे जंगल की सीमा पर ध्यान से देखने पर मुझे पक्का लग रहा था कि मुझे हलचल—यानी इधर-उधर होती मानव आकृतियाँ दिख रही थीं। मैं बिना झिझके उनके आगे बढ़ता गया और नौका आगे बढ़ाता चला। फिर इंजिन बंद कर दिए और उसे अपने आप आगे बढ़ने दिया। वह आदमी अब चिल्लाने लगा और हमें वहाँ रुकने को कहने लगा। 'हम पर हमला हुआ था,' मैनेजर चीख़ा।

दूसरी ओर से ख़ुशी के साथ ऊँची आवाज़ में जवाब आया, 'हाँ, हाँ, मुझे मालूम है। चिंता की कोई बात नहीं। आ जाओ। सब ठीक है। मुझे ख़ुशी है।'

उसकी शक्ल देख कर मुझे पहले कभी देखा कुछ—अतीत का कोई मजेदार वाक़या याद सा आने लगा। जब मैं नौका और पास लाते जा रहा था, मैं ख़ुद से पूछ रहा था, 'यह बंदा कैसा दिखता है?' अचानक मुझे याद आ गया। वह मुझे तमाशा नाटकों के मसख़रों जैसा लग रहा था। उसके कपड़े शायद ब्राउन हॉलैंड कंपनी के थान के बने सिले थे, पर उन पर हर ओर पट्टियों की पैबंदकारी थी। चमकती नीली, लाल और पीली पट्टियाँ थीं—पीठ पर, सामने की ओर, घुटनियों पर पट्टियाँ, जैकट पर गोल सिली रंगीन पट्टियाँ, पतलून के नीचे की ओर गहरी लाल पट्टी का किनारा। धूप में वह बड़ा ख़ुश और बहुत साफ़ दिख रहा था। यह साफ़ दिख रहा था कि

कितनी ख़ूबसूरती के साथ पट्टियाँ सिली गई थीं। उसका गोरा रंग निखरा हुआ था, उसके चेहरे पर कोई दाढ़ी न थी, शक्ल में कहने लायक़ कोई ख़ासियत न थी, नाक पर छिलके दिख रहे थे। किसी खुले मैदान में चलती हवा के साथ धूप और छाया की तरह उसके खुले चेहरे पर मुस्कान और भृकुटियाँ एक दूसरे का पीछा कर रही थीं। 'देख कर, कप्तान!' उसने ऊँची आवाज़ में कहा, 'कल रात पानी में एक बड़ी डाल गिर गई थी।'

'फिर एक डाल?' मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने गंदी गालियाँ निकालीं। इस अद्‌भुत यात्रा को पूरा करते हुए मैंने पंगु वाहन में बड़ा-सा छेद ही कर डालना था। किनारे बैठे मसख़रे ने अपनी चपटी नाक मेरी ओर करते हुए कहा, 'तुम अंग्रेज़ हो क्या?'

वह खुल कर मुस्करा रहा था। मैं चर्खी पर से चिल्लाया, 'तुम हो क्या?'

उसकी मुस्कान ग़ायब हो गई। उसने ऐसे सिर हिलाया जैसे कि मेरी हताशा पर खेद जता रहा हो। फिर वह वापस दुरुस्त हो गया। उसने उत्साह के साथ कहा, 'कोई बात नहीं।'

मैंने पूछा, 'क्या हम ठीक समय पर पहुँच गए हैं?' 'वह वहाँ ऊपर हैं', उसने चट्टान की चोटी की ओर सिर उठाते हुए कहा और उसके चेहरे पर अचानक उदासी-सी छा गई। उसका चेहरा शरद के आस्मान जैसा था, कभी बादलों से भरा तो अगले ही पल खुला साफ़।

जब यात्री एजेंटों की पहरेदारी में मैनेजर, सारे के सारे बंदूक़ों से लैस, उस मकान में गए तो यह बंदा नौका पर चढ़ आया। मैंने कहा, 'भाई, मुझे ठीक नहीं लग रहा, ये जंगली लोग झाड़ियों में मौजूद हैं।'

उसने पुरज़ोर कोशिश करते हुए मुझे समझाया कि चिंता की कोई बात न थी।

'ये सरलमना लोग हैं,' उसने आगे कहा, 'चलो मुझे ख़ुशी है कि तुम लोग पहुँच गए। मुझे उन सबको दूर रखने में बड़ी कोशिश करनी पड़ी।'

मैं चीख़ा, 'पर आपने तो यह कहा कि सब ठीक है।'

'अरे, वे आपको कोई नुकसान पहुँचाना नहीं चाहते थे।' उसने कहा। और जब मैं उसे घूरने लगा तो उसने बात बदलते हुए कहा, 'हाँ, बिल्कुल ऐसा भी नहीं।' फिर जोश के साथ कहा, 'लगता है कि तुम्हारे पायलट कमरे में सफ़ाई करनी पड़ेगी।'

अगली ही साँस में उसने मुझे भट्ठी में पर्याप्त भाप तैयार रखने को कहा, ताकि कोई आफ़त आए तो उसका सामना किया जा सके।

'आपकी बंदूक़ों की तुलना में एक सीटी ज़्यादा फ़ायदेमंद होगी। ये सरल स्वभाव के लोग हैं।' उसने अपनी बात दुहराई। वह इतनी जल्दी बोलता जा रहा था कि मुझसे सँभाला नहीं जा रहा था। लंबे समय तक चुप रहने की वजह से अब उसकी बोलती बंद नहीं हो रही थी। और उसने हँसते हुए इस बात की ओर संकेत भी किया।

'आप मिस्टर कुर्त्ज़ के साथ बातें नहीं करते क्या?' मैंने पूछा।

उसने गंभीर उत्तेजना के साथ जवाब दिया, 'उस आदमी के साथ हम बातें नहीं करते, सिर्फ़ उसकी सुनते हैं। पर अब....', उसने अपने हाथ हिलाए। उसकी आँखों के झपकने में निराशा की अतल गहराई झलकी। अगले ही पल उसने उछल कर मेरे दोनों हाथ थामे और उन्हें लगातार हिलाते हुए वह बड़बड़ाने लगा, 'मेरे नाविक भाई, ...मुझे बड़ी ख़ुशी है,....गर्व है....प्रसन्नता.... मैं अपना परिचय दे दूँ....रूसी, वरिष्ठ पादरी का बेटा....तांबोव की सरकार*....क्या? तंबाकू पीता हूँ या नहीं? अंग्रेज़ी तंबाकू; लाजवाब अंग्रेज़ी तंबाकू! यह हुई न संग साथ की बात। धूम्रपान? वह कैसा नाविक होगा जो तंबाकू न पीता हो?'

पाइप पीते हुए वह शांत हुआ और धीरे-धीरे मैं जान पाया कि वह स्कूल से भाग गया था, एक रूसी जहाज़ में समुद्र में पहुँचा। फिर भागा,

* तांबोव की सरकार : रूसी साम्राज्य, रूसी गणतंत्र और बाद में रूसी सोवियत की एक प्रशासनिक इकाई, जिसका केंद्र तांबोव शहर में था।

कुछ समय के लिए अंग्रेज़ी जहाज़ों पर काम करता रहा; फिर उसने अपने वरिष्ठ पादरी पिता के साथ समझौता कर लिया। इस बात पर उसने ज़ोर देते हुए कहा, 'पर जवानी में दुनिया देखनी चाहिए, तज़ुर्बा और विचार इकट्ठे करने चाहिए, दिमाग़ को खुलने देना चाहिए।'

'यहाँ, खुला दिमाग़?' मैंने उसे रोका।

'कौन जानता है कि कहाँ नई दुनिया मिलेगी! यहाँ मेरी मुलाक़ात मिस्टर कुर्त्ज़ से हुई,' उसकी आवाज़ में युवाओं की गंभीरता और उलाहना दोनों थे।

इसके बाद मैं चुप रहा। पता चला कि उसने तट पर एक डच घराने को मना लिया था कि उसे सौदा लाने-ले जाने के काम में लगा लें और वह सादे मन से अंदरूनी इलाक़ों की ओर चल पड़ा था। उसे एक बच्चे से ज़्यादा कोई अंदाज़ा न था कि उसके साथ क्या कुछ होगा। दो साल सारी दुनिया से कटा हुआ वह अकेले इस नदी के आस-पास भटकता रहा।

'मैं जैसा दिखता हूँ, उतना छोटा नहीं हूँ,' उसने कहा, 'मेरी उम्र पचीस साल है। पहले पहल फान शुइटेन मुझे फटकार कर भगा देता था,' उसने मजा लेते हुए अपनी कहानी सुनाई। 'पर मैं उसके साथ लगा रहा और उससे लगातार बातें करता रहा, और आख़िरकार वह घबरा गया कि मेरी बातों से परेशान होकर उसका पसंदीदा कुत्ता अपनी पिछली टाँग न खो बैठे। तो उसने मुझे कुछ सस्ते सौदे और कुछ बंदूक़ें दीं और कहा कि आइंदा वह कभी मेरी शक्ल नहीं देखना चाहता। वह भला डच बंदा फान शुइटेन। एक साल पहले मैंने उसे थोड़ी-सी हाथीदाँत की सामग्री भेजी है, ताकि मेरे लौटने पर मुझे वह चोर-उचक्का न कहे। मुझे उम्मीद है कि उसे सामान मिल गया होगा। और बाक़ी लोगों की कोई चिंता मुझे नहीं है। मैंने तुम लोगों के लिए कुछ लकड़ी इकट्ठी कर छोड़ी हुई थी। वह मेरा पुराना घर था। तुमने देखा था?'

मैंने उसे टाउसन की किताब दी। वह हिला तो लगा कि वह मुझे चूमना चाहता है, पर उसने ख़ुद को सँभाल लिया।

'बस यही एक किताब मेरे पास बची थी और मैंने सोचा कि यह खो गई है,' उसने किताब ली और उल्लास भरी नज़र से देखते हुए कहा, 'अकेले आदमी के साथ इतनी दुर्घटनाएँ होती हैं, क्या कहें! कभी नावें उलट जाती हैं—और कभी लोग नाराज़ हो रहे हों तो जल्दी भागना पड़ता है।' उसने अंगूठे से पन्ने पलटे।

'तुमने रूसी भाषा में टिप्पणियाँ लिखी थीं?' मैंने पूछा। उसने स्वीकृति में सिर हिलाया।

'मैंने समझा कि सांकेतिक भाषा में लिखे हैं,' मैंने कहा।

वह हँसने लगा, फिर अचानक गंभीर हो गया। 'इन लोगों को अपने से दूर रखने में मुझे बड़ी दिक्कतें आईं।'

'क्या वे तुम्हें मार डालना चाहते थे?' मैंने पूछा।

'अरे नहीं!' वह चीख़ा, फिर संयत हुआ।

'उन्होंने हम पर हमला क्यों किया?' मैंने सवाल ज़ारी रखा।

वह झिझका, फिर शर्माता हुआ बोला, 'वे नहीं चाहते कि वह यहाँ से जाएँ।'

'ऐसा है क्या?' मैंने उत्सुक होते हुए पूछा। उसने रहस्यमय ढंग से समझदारों की तरह सिर हिलाया।

'मेरी बात मानो,' वह आवेश में बोला, 'इस आदमी ने मेरी सोच फैला दी है।' उसने अपनी बाँहें फैलाईं।

अपनी बिल्कुल गोल छोटी आँखों से वह मुझे घूर रहा था।

तीसरा अध्याय

'मैं अचंभित खोया हुआ उसे देख रहा था। विविध रंगों के साथ वह आदमी मेरे सामने मौजूद था, अद्‌भुत, उत्साह से भरा हुआ, मानो मसख़रों के नौटंकी दल से भाग कर आया हो। उसका होना ही असंभव-सी कोई बात थी, जैसे कोई अजूबा था, जिसकी कोई व्याख्या न हो। वह ऐसा सवाल था, जिसका कोई हल न था। यह सोचना भी मुश्किल था कि वह कैसे वहाँ मौजूद था, इतनी दूर आ पाने में वह कैसे सफल हुआ, अब तक वह कैसे बचा रहा—पल भर में ग़ायब कैसे नहीं हो गया।

'मैं ज़रा और आगे तक गया,' उसने कहा, 'फिर और आगे—और फिर इतनी दूर पहुँच गया कि अब मुझे पता नहीं कि मैं वापस कैसे लौटूँ। कोई बात नहीं। बहुत दिन बचे हैं। मैं कुछ कर लूँगा। आप जल्दी कुर्त्ज़ को यहाँ से ले जाइए—जल्दी—मेरी बात मानिए।'

उसकी बेमतलब घुमक्कड़ी की गहरी वीरानगी, उसके अकेलपन, उसकी ग़रीबी और उसके रंग-बिरंगे चीथड़े, जवानी के जोश में शामिल थे। महीनों—सालों तक उसके जीवन में एक दिन के सौदे लायक़ भी कोई बात नहीं हुई थी और यहाँ बिना किसी चिंता के, बहादुरी के साथ जीता-जागता वह मौजूद था। कम उम्र और लापरवाह गर्व में उसे देख कर लगता था कि वह कभी हार नहीं मानेगा। धीरे-धीरे मेरे मन में उसके प्रति प्रेम या सम्मान जैसा—ईर्ष्या जैसा कुछ बढ़ता जा रहा था। जवानी का जादू उसे आगे बढ़ाता गया, इसी जादू ने उसे अक्षत रखा। जंगल से उसे बस अपनी साँस लेने और आगे बढ़ते रहने की जगह भर के अलावा कुछ भी न चाहिए

था। उसकी ज़रूरत बस इतनी थी कि उसका अस्तित्व बना रहे, और कम से कम संसाधनों के रहते भी अधिक से अधिक ख़तरा मोलकर वह आगे चलता रहे। अगर बिल्कुल बेहिसाबी, अव्यावहारिक, ख़ालिस साहस की भावना से कोई इंसान प्रेरित हो सकता है, तो वह पट्टियाँ पहना हुआ यह युवक ही था। उसमें ऐसी सादगी भरी और विनम्र ललक देख कर मुझे ईर्ष्या होने लगी थी। लगता था कि उसमें से स्वार्थ की भावना बिल्कुल ख़त्म हो चुकी थी—यहाँ तक कि जब वह हमसे बातें करता तो हम भूल जाते कि यह वही है—आँखों के सामने मौजूद यह आदमी—जो इतनी विपदाओं में से गुज़र चुका था। पर कुर्त्ज़ के प्रति उसकी समर्पण की भावना को लेकर मुझे कोई ईर्ष्या न थी। उसने इस पर गहराई से सोचा न था। बस यह भावना उसके अंदर पनपी थी और उसने इसे क़िस्मत का लिखा संयोग मान कर अपना लिया था। सचमुच मुझे लग रहा था कि उसके साथ अब तक होने वाला किसी भी तरह का सबसे ख़तरनाक वाक़या यही हुआ होगा।

उनका आपस में मिलना लाज़िम था। जैसे दो जहाज़ हवा के न चलने से एक दूसरे के पास फँस जाते हैं और आख़िर उनके ढाँचे एक दूसरे को किनारे से छू जाते हैं। शायद कुर्त्ज़ को अपनी बातें सुनाने के लिए कोई चाहिए था, क्योंकि एक बार ऐसा हुआ कि वे सारी रात बातें करते रहे थे या ज़्यादा संभावना है कि कुर्त्ज़ बोलता रहा था।

'हम हर तरह के विषय पर बातें करते रहे,' वह बोला। उस घटना को याद करते हुए वह कहीं और खो गया था। 'मैं भूल ही गया था कि हमें सोना भी है। सारी रात गुज़र गयी और उस के गुज़रने का अहसास भी न हुआ। हर तरह की बात! हर कुछ! इश्क़ पर भी।'

'आ हा! तो उसने तुमसे इश्क़ पर भी बात की!' मैंने मज़ा लेते हुए कहा।

'अरे, आप जो सोच रहे हैं वैसा कुछ भी नहीं,' वह जैसे आवेग में चीख़ा। 'वैसे ही आम बातें थीं। उन्होंने मेरी दृष्टि खोल दी थी—और मैं नई तरह से कई चीज़ों को देखने लगा।'

उसने अपनी बाँहें ऊपर की ओर उछालीं। उस वक़्त हम नौका की डैक पर थे और पास ही घूम रहा मेरे लिए लकड़ी काटने वालों का मुखिया मुड़कर अपनी चमकती आँखों से उसे देखने लगा। मैंने चारों ओर देखा और यक़ीन मानो कि इसके पहले कभी यह ज़मीं, यह नदी, चौंधियाते आस्मान की छत मुझे इतने निराशाजनक और इतने अनजान, इंसान की कल्पना से इतने दूर, उस की कमज़ोरियों के प्रति इतने बेरहम न लगे थे।

मैंने पूछा, 'और फिर तभी से तुम उनके साथ हो, है न?'

हुआ इसके बिल्कुल उल्टा था। पता चला कि कई वजहों से उनका आपसी संबंध टूट गया। उसने बड़े गर्व के साथ मुझे बतलाया कि उसने दो बीमारियों के दौरान कुर्त्ज़ की सेवा की थी (इस बारे में उसने ऐसे बात की जैसे कि यह कोई ख़तरनाक कारवाई थी), पर आम तौर पर कुर्त्ज़ अकेले घने जंगलों में घूमने चला जाता।

'कई बार इस अड्डे पर आकर मुझे कई-कई दिनों तक इंतज़ार करना पड़ता और तब जाकर उनकी शक्ल दिखती,' उसने कहा। 'आह! वह इंतज़ार सार्थक होता!—कभी-कभी!'

'वह क्या करने जाते थे, जंगल के बारे में जानकारी लेने या कोई और वजह थी?' मैंने पूछा।

'हाँ, हाँ, बिल्कुल, उन्होंने कई सारे गाँव ढूँढ़ लिए थे—एक झील भी—उन्हें यह पता न था कि वे ठीक किस दिशा में थे। बहुत ज़्यादा पूछना ख़तरनाक था, पर उनके ज़्यादातर अभियान हाथीदाँत के लिए ही थे।'

'पर उनके पास सौदा करने लायक़ तो कुछ भी न था,' मैंने आपत्ति जताते हुए कहा।

'अभी भी कई सारे बक्से पड़े हुए हैं,' उसने नज़र हटाकर दूसरी ओर करते हुए कहा।

'सीधी भाषा में कहें तो उन्होंने इस प्रदेश में धावा बोला हुआ था,' मैंने कहा।

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया।

'बेशक वह अकेले ऐसा नहीं कर रहे!' उसने झील के चारों ओर बसे गाँवों के बारे में बड़बड़ाते हुए कुछ कहा।

'कुर्त्ज़ ने क़बीले को साथ लगा लिया होगा। ऐसा था क्या?' मैंने बात आगे बढ़ाई।

वह झिझकता रहा, 'वे उन्हें पूजा करते थे,' उसने कहा।

ये शब्द ऐसे ग़ैरमामूली स्वर में कहे गए थे कि मैंने उसकी ओर सवालिया नज़रों से देखा। अजीब बात थी कि वह कुर्त्ज़ के बारे में कहना भी चाहता था और छिपाना भी चाहता था। उस आदमी ने उसके जीवन के हर कोने में, उसके विचारों में, उसकी भावनाओं में, जगह बना ली थी। 'उनसे हम क्या उम्मीद रख सकते हैं?' वह चिल्ला उठा। 'वह उनके पास गर्जना और बिजली लेकर आए, सोचिए—और उन्होंने ऐसा कुछ और इतना भयानक कभी कुछ नहीं देखा था। वह ख़ुद भी काफ़ी भयानक हो सकते थे। हम मिस्टर कुर्त्ज़ को एक साधारण आदमी की तरह नहीं देख सकते, ना, न ना! जैसे एक उदाहरण देता हूँ—आपको बतलाने में मुझे कोई परहेज़ नहीं—एक बार वह मुझ पर गोली चलाने वाले थे! पर मैं इसके लिए उन्हें बुरा नहीं कहूँगा।'

'तुम पर गोली चलाने वाले थे!'—मैं चीख़ा, 'किस लिए?'

'ऐसा था कि मेरे घर के पास के गाँव के मुखिया ने मुझे थोड़ा-सा हाथीदाँत दिया था। क्या है कि मैं उनके लिए जानवरों का शिकार कर दिया करता था। अब उन्हें वह हाथीदाँत चाहिए था और वह कोई भी बात सुनने को तैयार न थे। उन्होंने कह दिया कि अगर मैं उन्हें वह हाथीदाँत देकर उस इलाक़े से भाग न जाऊँ तो वह मुझे गोली से उड़ा देंगे, क्योंकि वह ऐसा कर सकने के क़ाबिल हैं, ऐसी वारदातें कर उन्हें

ख़ुशी मिलती है और दुनिया में कोई भी ताक़त उन्हें जिसे मर्ज़ी क़त्ल करने से रोक नहीं सकती। और यह सच भी था। मैंने उन्हें वह हाथी-दाँत दे दिया। मुझे क्या फ़र्क़ पड़ना था! पर मैं भागा नहीं। नहीं, नहीं, मैं उन्हें छोड़कर नहीं जा सकता था। मुझे सावधानी ज़रूर बरतनी पड़ी, जब तक कि दुबारा हम दोस्त न बन गए। फिर उन्हें दूसरी बार बीमारी का दौरा पड़ा। बाद में मुझे उनसे दूर रहना पड़ा था, पर मैंने इसका बुरा न माना। अधिकतर वह झील पर बसे गाँवों में ही रह रहे थे। जब वह नदी किनारे आते तो कभी-कभार मुझे देख कर ख़ुश होते और कभी कभी मुझे सावधानी बरतनी पड़ती। इस आदमी ने काफ़ी पीड़ा सही थी। उन्हें यहाँ की हर बात से नफ़रत थी और किसी वजह से वह यहाँ से जा भी न सकते थे। जब भी मुझे मौक़ा मिला, मैंने उनसे कहा कि वक़्त रहते वह यहाँ से कोशिश कर चले जाएँ; मैंने यह भी कहा कि मैं भी साथ चलूँगा, और वह कहते कि हाँ चलेंगे, फिर वह यहीं रह जाते। फिर हाथीदाँत की खोज में निकल पड़ते, हफ़्तों तक न दिखते; इन लोगों के बीच ख़ुद को खो देते—अपने आप को भूल जाते—मानो मेरी बात।'

'अरे! वह तो पागल हैं,' मैंने कहा।

उसने पुरज़ोर प्रतिवाद किया। मिस्टर कुर्त्ज़ पागल नहीं हो सकते। अगर दो दिन पहले भी उन्हें बोलते सुना होता, तो ऐसा संकेत तक मैं नहीं कर पाता.... बातें करते हुए मैंने दूरबीन उठा ली थी और किनारे की ओर देख रहा था। दोनों ओर जंगल की सीमाओं से लेकर घर के पिछवाड़े तक मैं दूरबीन से देख पा रहा था। झाड़ियों में बिल्कुल चुपचाप बिना किसी आवाज़ किए लोगों का होना—वैसा ही जैसे वह टूटा हुआ घर सन्नाटे में खड़ा था—यह जानते हुए मुझे बेचैनी हो रही थी। कंधे उचकाते हुए, टुकड़े-टुकड़े वाक्यों में, अंत में लंबी साँसों में बदलते संकेतों में पूरा होती हुई, खालीपन के उद्गारों में कही गई कम और ज़्यादा समझाई जाती हुई इस अद्भुत कहानी का कुदरत के चेहरे पर कहीं

कोई चिह्न नहीं दिखता था। जंगल के दरख़्त निस्तब्ध खड़े थे, जैसे कि कोई भारी नक़ाब हो या कि किसी क़ैदख़ाने का बंद दरवाज़ा हो—वे धीरज से कुछ होने की अपेक्षा के, अभेद्य सन्नाटे के, गोपनीय सूचनाओं के, अपने घमंड में, देखते जा रहे थे।

रूसी बंदा मुझे समझा रहा था कि अभी हाल में ही मिस्टर कुर्त्ज़ नदी किनारे पहुँचा था और उसके साथ झील के इलाक़े के सभी लड़ाकू मर्द आए थे। वह कई महीनों तक ग़ायब था—शायद उसकी भक्ति-सेवा चल रही थी—और अचानक ही यहाँ आ पहुँचा था। देखकर लगता था कि या तो नदी के पार या धार पर ही आगे कहीं धावा बोलने का इरादा है। ज़ाहिर है कि और ज़्यादा हाथीदाँत के लालच ने—क्या कहें—कम महत्त्वपूर्ण भौतिक कामनाओं को पीछे छोड़ दिया था। पर अचानक ही उसकी तबियत बहुत ज़्यादा बिगड़ गई थी।

'मैंने सुना कि वह असहाय लेटे हुए हैं, इसलिए मैं आ पहुँचा—सोचा कि देखें क्या होता है,' रूसी ने कहा, 'उनकी हालत बड़ी ख़राब है, सचमुच ख़राब।'

मैंने दूरबीन को मकान की ओर घुमाया। कहीं जीवन के कोई आसार न थे, पर बदहाल छत, अलग-अलग आकार के तीन छोटे वर्गाकार छेद से बनी खिड़कियों वाली लंबी मिट्टी की दीवार, मानो बिल्कुल मेरे हाथ के पास ही दिख रही थी। फिर मैं एक झटके से घूमा और उस ग़ायब हो चुके बाड़े का एक खंभा मेरी दूरबीन से दिखते दृश्य में उछला। याद है न कि मैं इस जगह की ख़स्ताहाल स्थिति में भी कुछ दूरी पर सजावट की कोशिशें देखकर प्रभावित हुआ था। अब मुझे जैसे बिल्कुल नज़दीक से दिख रहा था और तुरंत उसका असर तो यह हुआ कि मैंने अपना सिर यूँ झटका जैसे किसी ने डंडा मारा हो। फिर मैंने दूरबीन से एक एक खंभे को देखा और मुझे मेरी ग़लती समझ में आई। ये गोल लोंदे सजावट के लिए नहीं थे, बल्कि वे संकेत थे; वे कुछ कह रहे थे और वे पहेली भी थे, वे

चौंकाते थे और साथ ही परेशान भी करते थे—वे दिमाग़ के लिए ख़ुराक थे और साथ ही उन गिद्धों के लिए भी जो आस्मान से इधर की ओर देख पा रहे थे; उन चींटियों के लिए तो अवश्य ही जो खंभों पर चढ़ने का उद्यम कर रही थीं। शूलियों पर लगी वे खोपड़ियाँ और भी प्रभाव डालतीं अगर उनके चेहरे घर की ओर मुड़े न होते। केवल एक, मैंने देखा कि वही सबसे पहला था, मेरी ओर झाँक रहा था। जितना तुम लोग सोच रहे होगे, वैसा झटका मुझे नहीं लगा था। मैंने जब झटके से सिर पीछे किया था, वह महज एक अचंभे की वजह से सिर का हिलना था। मैं वहाँ लकड़ी का गोलक होने की अपेक्षा कर रहा था। जो सबसे पहले देखा था जान-बूझकर मैं उस पर लौटा—और वह वहीं मौजूद था, काला, सूखा, सिकुड़ा, बंद पलकें—जैसे कि खंभे के ऊपर कोई सिर सोया पड़ा हो। सिकुड़े सूखे होंठों में से सफ़ेद दाँतों की सँकरी कतार के दिखने से वह चेहरा मुस्कराता हुआ लगता था, उस अनंत निद्रा में किसी अंतहीन मज़ेदार सपने को देखता हुआ लगातार मुस्कराता जा रहा था।

मैं कोई व्यापार संबंधी गोपनीय सूचना नहीं बतला रहा। दरअसल बाद में मैनेजर ने कहा कि मिस्टर कुर्त्ज़ के तौर-तरीक़ों से वह इलाक़ा तबाह हो गया था। इस बारे में मेरा अपना कोई विचार नहीं है, पर मैं चाहता हूँ कि यह बात तुम साफ़ समझ लो कि उन खोपड़ियों के वहाँ होने से कोई फ़ायदा नहीं मिलने वाला था। उनसे बस यही पता चलता था कि मिस्टर कुर्त्ज़ अपनी विभिन्न वासनाओं को पूरा करने में संयम बरतना नहीं जानता था; कि उसमें कहीं कुछ कमी थी—कोई छोटी-सी बात जो ज़रूरत पड़ने पर उसकी कमाल की वाक्पटुता के तले ढूँढ़े नहीं मिलती थी। उसे अपनी इस कमी का अंदाज़ था या नहीं, मैं नहीं कह सकता। शायद यह बात उसे आख़िरकार समझ आ गई होगी, पर बिल्कुल आख़िर में। पर जंगल ने उसे जल्दी ही जान लिया था और उसके लाजवाब हमले का जंगल ने जम कर बदला लिया था। मेरे ख़याल से जंगल ने कानों-कान उसे ऐसी बातें बताई थीं जिनके बारे में

उसे गहरे एकांत में मनन करने के पहले तक ख़ुद कोई समझ नहीं थी—और उस फिसफिसाहट में अदम्य आकर्षण था। चूँकि उसके अंदर गहराई में खोखलापन था, इसलिए वे आवाज़ें वहाँ ज़ोर से गूँजती रहीं.... मैंने दूरबीन नीचे उतारी, और वही खोपड़ी जो मेरे इतने क़रीब दिख रही थी कि हम उससे बतिया सकते थे, तुरंत उछलकर इतनी दूर पहुँच गई जहाँ तक जा पाना संभव न था।

मिस्टर कुर्त्ज़ का भक्त ज़रा हताश दिख रहा था। जल्दी में अटपटी आवाज़ में उसने मुझे आश्वस्त किया कि उसमें यह हिम्मत नहीं थी कि वह इनको—संकेतों को उतार ले। वह जंगली लोगों से डरता नहीं था; वे मिस्टर कुर्त्ज़ के कहने से पहले हिलेंगे तक नहीं। उनकी पहुँच असाधारण थी। इन लोगों के तंबू चारों ओर से घेरा डाले हुए थे और सभी मुखिया हर दिन उनसे मिलने आते थे। वे रेंगते हुए आते.... 'मिस्टर कुर्त्ज़ के पास आने के लिए की जाने वाली रस्मों के बारे में मैं कुछ नहीं जानना चाहता,' मैं चीख़ा।

अजीब बात थी, अचानक मुझे यह अहसास हुआ कि मिस्टर कुर्त्ज़ की खिड़कियों के नीचे शूलियों पर सूख रही उन खोपड़ियों से भी इन रस्मों के विवरण ज़्यादा असहनीय होंगे। आख़िर वह तो बस एक हिंसक दृश्य था, जबकि एक छलाँग में ही मुझे सूक्ष्म आतंकों की अँधेरी दुनिया में ले जाया जा रहा था, जहाँ जघन्य हिंसा एक तरह की बड़ी राहत थी, ऐसा कुछ जो ज़ाहिरा तौर पर दिनदहाड़े सही होने का दावा कर रही थी। वह युवा मेरी ओर आश्चर्य से देख रहा था। शायद उसे समझ नहीं आ रहा था कि मिस्टर कुर्त्ज़ मेरे लिए एक सम्माननीय व्यक्तित्व नहीं था। वह भूल गया था कि मैंने उन एकालापों को नहीं सुना था—कौन से—जो प्रेम, न्याय, जीने के सलीक़े पर—और पता नहीं क्या-क्या पर, थे। जहाँ तक मिस्टर कुर्त्ज़ के सामने रेंगने की बात थी, वह उन में से सबसे जंगली इंसान से भी ज़्यादा रेंग रहा था। उसने कहा कि मुझे हालात की ख़बर न थी; ये खोपड़ियाँ विद्रोहियों के सिर थे। मेरे हँस उठने पर उसे

ज़ोरों का झटका लगा। विद्रोही! आगे और कौन सा नाम मुझे सुनाया जाएगा? मैंने दुश्मन, अपराधी, कामगार सुने थे—और अब विद्रोही। ये विद्रोही खोपड़ियाँ मुझे उन खूँटियों पर बिल्कुल शांत दिख रही थीं।

'तुम नहीं जानते कि इस तरह की ज़िंदगी का कुर्त्ज़ जैसे आदमी पर क्या असर पड़ता है,' कुर्त्ज़ का आख़िरी चेला तड़प रहा था।

'अच्छा, और तुम पर?'

'मैं! मैं! मैं एक सरल आदमी हूँ। मेरे विचार गंभीर नहीं होते. मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। आप मेरी तुलना....से कैसे कर सकते हैं?'

उसकी भावनाएँ उसे बोलने न दे रही थीं। और अचानक वह रोने लग गया।

'मेरी समझ में नहीं आता, और मैं क्या कर सकता हूँ? मैंने तो बस उन्हें ज़िंदा भर रखने की कोशिश की है। इस सब में मेरा कोई हाथ नहीं है। मेरी कोई ताक़त नहीं है। अरसे से यहाँ कोई दवा की बूँद और सड़ा खाना तक नहीं था। उन्हें शर्मनाक ढंग से त्याग दिया गया था। ऐसा आदमी, ऐसे ऊँचे ख़यालों वाला। शर्मनाक! शर्मनाक! मैं—मैं—पिछली दस रातों से मैं सो नहीं पाया हूँ....'

शाम के सन्नाटे में उसकी आवाज़ गुम होती गई। हमारी बातचीत के दौरान जंगल के दरख़्तों की लंबी छायाएँ चट्टान से उतरकर दूर तक पहुँच गई थीं। वे उस बदहाल घर से काफ़ी आगे, उस संकेतों वाले शूलियों की कतार से दूर जा चुकी थीं। यह सब कुछ साए में था, जबकि हमारे पास अभी तक धूप थी और उस खुली जगह के पास नदी का फैलाव शांत चौंधियाती चमक के साथ छलक रहा था। उसके ऊपर और नीचे छाया से पूरी तरह ढँके गंदे घुमाव दिख रहे थे। किनारे पर कोई ज़िंदा रूह न दिखती थी। झाड़ियों में कोई सरसराहट न थी।

अचानक घर के एक कोने की तरफ़ से कुछ लोग दिखे, मानो वे ज़मीन से उग आए हों। अपने बीच एक कामचलाऊ स्ट्रेचर ढोते हुए वे

सब घास में से यूँ चल रहे थे जैसे पानी में से निकल रहे हों। उसी पल उस दृश्य के खालीपन में रुकी हवा को चीरती हुई एक तीख़ी चीख़ गूँजी जैसे कि ज़मीं के दिल को ठीक बीचों-बीच नुकीले तीर से बींध दिया गया हो। लगा जैसे कि काली शक्ल वाले घने जंगल ने किसी मंत्र के वशीभूत हाथों में भाले, तीर-धनुष, बरछियाँ लिए हुए ख़ुँख़ार नज़रों और बर्बर मुद्राओं वाले इंसानों के झुंड—नंगे इंसान—उस जगह उड़ेल दिए हों। थोड़ी देर तक झाड़ियाँ हिलीं, घास लहराई, और फिर हर चीज़ यूँ थम गई जैसे किसी बात को ध्यान से देख सुन रही हो।

'अब अगर वह उनसे सही बात नहीं कहते तो हम सबकी शामत आ गई।' मेरी कोहनी के पास से रूसी ने कहा।

स्ट्रेचर थामे हुए लोगों का गुट स्टीमर की ओर रास्ते के अधबीच रुक गया था, जैसे कि वे पत्थर हो गए हों। मैंने देखा कि स्ट्रेचर पर लेटा आदमी सीधा उठ बैठा, उसकी बाँह वाहकों के कंधे के ऊपर उठी।

'उम्मीद करें कि जो आदमी आम तौर पर प्यार की बढ़िया बातें करता है, वह हमें इस बार छोड़ देने के लिए कोई ख़ास वजह ढूँढ़ ही लेगा,' मैंने कहा।

मैं हमारी इस बेमतलब की ख़तरनाक स्थिति से परेशान था, मानो उस अत्याचारी भूत के रहम पर होना कोई अपमानजनक बात थी, जिससे हम छूट नहीं सकते थे। मुझे कुछ सुनाई नहीं पड़ा, पर दूरबीन से मैंने देखा कि वह दुबली बाँह आदेश देती हुई तनी थी, मुँह का निचला जबड़ा चल रहा था, भद्दे झटकों के साथ हिलती हड्डियों वाली खोपड़ी में दूर कहीं उस ढाँचे की काली आँखें चमक रही थीं। कुर्त्ज़—कुर्त्ज़—जर्मन भाषा में इसका मतलब 'छोटा' होता है, है न? वाह, उसके जीवन—और मृत्यु—में हर दूसरी चीज़ की तरह यह नाम भी बिल्कुल सटीक था। वह कम से कम सात फीट लंबा दिखता था। उसकी चादर नीचे गिर गई थी और उसमें से जैसे कफ़न से निकलता हुआ उसका बदहाल और दयनीय शरीर दिखा।

मुझे उसकी पसलियों का हिलता हुआ ढाँचा दिख रहा था। उसकी बाँहों की हड्डियाँ हिल रही थीं। ऐसा लगता था मानो पुराने हाथीदाँत से काढ़ा गया मौत का हिलता-डुलता बुत काले पड़ गए चमकते काँसे के बने लोगों की थमी हुई भीड़ को डराता हुआ उनसे हाथ मिला रहा था। मैंने उसे अपना मुँह चौड़ा खोलते देखा—उसे देख कर लगता था कि वह बहुत ज़्यादा खाना खाता होगा—जैसे कि वह सारी हवा, मिट्टी, सामने खड़े सारे लोग, सब कुछ खा जाना चाहता हो। एक गहरी आवाज़ मुश्किल से मुझ तक पहुँची। वह शायद चिल्ला रहा था। अचानक वह वापस लेट गया। वाहक आगे की ओर चले तो स्ट्रेचर हिलने लगा, और तक़रीबन तुरंत मैंने देखा कि जंगली लोगों की भीड़ बिना किसी पीछे जाने के संकेत के ग़ायब होने लगी, मानो जिस जंगल ने अचानक ही इन लोगों को उड़ेल फेंका था, वही अब उन्हें वापस ले जा रहा था, जैसे लंबी साँस वापस खींची जाती है।

स्ट्रेचर के पीछे कुछ यात्री एजेंटों के पास उनकी बंदूक़ें थीं—उस रहमदिल जुपीटर देवता की गर्जना—दो शॉटगन, एक भारी राइफिल, और एक लाइट रिवॉल्वर कार्बाइन। मैनेजर ने उसके बिस्तर के पास से गुज़रते हुए उसके कानों में फिसफिसाते हुए कुछ कहा। उन्होंने उसे छोटे कमरों में से एक में लिटा दिया—जहाँ बस बिस्तर के लिए और एक या दो कैंप स्टूल्स के लिए जगह थी। उसकी कई दिनों की चिट्ठियाँ हम लोग साथ लेकर आए थे, और कई सारे फटे लिफ़ाफ़े और खुली चिट्ठियाँ उसके बिस्तर पर बेतरतीब बिखरे पड़े थे। उसका हाथ इन काग़ज़ों में कमज़ोरी से घूमता रहा। उसकी आँखों की लपट और उसके बातचीत के संतुलित धीमेपन से मैं प्रभावित हुआ। यह थकान मात्र रोग की वजह से आने वाली थकान न थी। लगता नहीं था कि उसे कोई तकलीफ़ हो रही थी। वह साया शांत और नीमबेहोशी में लग रहा था, मानो उस वक़्त सभी भावनात्मक आवेगों से वह उबर चुका था।

उसने एक चिट्ठी के काग़ज़ हिलाए और मेरे चेहरे की ओर सीधे देखते हुए कहा, 'मुझे ख़ुशी है।'

कोई उसे मेरे बारे में लिख रहा था। ये विशेष सिफ़ारिशें फिर से चल पड़ी थीं। बिना किसी कोशिश के, तक़रीबन होंठों को बिना हिलाए, उसने जितनी ऊँची आवाज़ में बात की, उससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या आवाज़ थी—क्या आवाज़—गंभीर, भावपूर्ण, काँपती हुई, जबकि देख कर लगता था कि यह आदमी फिसफिसाकर भी बात न कर पाएगा। पर उसमें काफ़ी ताक़त बची थी—बेशक अस्वाभाविक—जिससे वह हम सबको क़रीब क़रीब सबको ख़त्म कर सकता था। यह बात तुम ख़ुद ही जान पाओगे।

मैनेजर चौखट पर चुपचाप आया। मैं तुरत निकल आया और उसने मेरे पीछे परदा खींच लिया। एजेंट यात्रियों की उत्सुक निगाहों के बीच रूसी युवा नदी के किनारे की ओर देख रहा था। मैंने उसकी नज़र की दिशा में आँखें घुमाईं।

दूर काले इंसानों की आकृतियाँ दिख रही थीं। वे जंगल की मटमैली सीमा पर अस्पष्ट से मँडरा रहे थे, और नदी के पास सिर पर चितकबरे चमड़े की अद्‌भुत पगड़ियाँ पहने दो कांस्य आकृतियाँ लंबे बरछों पर पीठ टिकाए जंगी मुद्राओं में, पर बुतों जैसी स्थिर, धूप में खड़ी थीं। और रोशनी में तट पर एक स्त्री की जंगली ख़ूबसूरत विचित्र आकृति दाएँ से बाएँ टहल रही थी।

धारियों वाले और किनारीदार कपड़े पहनी वह ज़मीं पर गर्व के साथ चल रही थी। उसके चलने से जंगली गहनों की झनझनाती आवाज़ और चमक फैल रही थी। उसका माथा ऊँचा था; बाल हेलमेट की तरह जूड़े में बँधे थे; टाँगों पर घुटनों तक ताँबा जड़ा था, भूरे गालों पर एक गहरा लाल धब्बा था। उसकी गर्दन पर काँच की मोतियों की कई सारी मालाएँ थीं। हर क़दम पर बदन पर लटकती ताबीज़ें, ओझाओं के दिए उपहार, काँपते और चमकते दिख रहे थे। उसके बदन पर कई सारे हाथियों के दाँतों से बनी चीज़ें लटकी होंगी। वह ख़ूँखार और शानदार थी, उसकी आँखें चंचल थीं

और वह भव्य दिखती थी। उसके नपे-तुले आचरण में कुछ डरावना और शाहाना-सा दिखता था। ऐसा लगता था कि उस ग़म में खोए प्रदेश पर अचानक फैले सन्नाटे में वह उपजाऊ और तिलिस्मी जानदार महाकाय विशाल जंगल गंभीर ख़यालों में खोया हुआ उसकी ओर देख रहा है, मानो वह अपने ही ग़मगीन और भावुक अंतर्मन की तस्वीर को देख रहा हो।

वह स्टीमर के पास आई, स्थिर खड़ी हो गई और हमारी ओर देखने लगी। पानी के किनारे पर उसकी लंबी छाया पड़ी। उसके चेहरे पर उन्मत्त दर्द और मूक पीड़ा की त्रासद और भयानक छवि थी और साथ ही वहाँ कुछ तय न कर पा रही जूझती हुई सोच का भय भी था। थोड़ी देर वह बिना हिले किसी अनिर्दिष्ट उद्देश्य से उस जंगल की तरह ही ख़यालों में खोए होने के आभास के साथ हमें देखती रही। पूरा एक मिनट गुज़र गया और तब वह एक क़दम आगे बढ़ी। हल्की-सी झनझनाहट हुई, पीले धातु की चमक झलकी, किनारीदार कपड़े हिले, और जैसे उसके दिल की गति रुक गई हो, वह रुकी। मेरे बगल में युवा गुर्राया। मेरे पीछे यात्री एजेंटों ने बड़बड़ाते हुए कुछ कहा। उसने हमारी ओर ऐसे देखा जैसे कि उसकी नज़र की अटल दृढ़ता पर उसका जीवन निर्भर हो। अचानक उसने अपनी नंगी बाँहें फैलाईं और मजबूती से सिर के ऊपर उछालीं, मानो वह आस्माँ छूना चाहती हो और साथ ही ज़मीं पर चलती छायाएँ तेज़ी से हिलती हुई बढ़ीं, नदी पर फैल गईं और स्टीमर को एक छाया-आलिंगन में जकड़ लिया। पूरे दृश्य पर एक विकट सन्नाटा छाया हुआ था।

वह धीरे से मुड़ी, नदी के किनारे पर चलती चली और बायीं ओर झाड़ी में समा गई। ग़ायब होने के पहले बस एक बार झाड़ियों में पसर रहे शाम के धुँधलके में से उसकी आँखें वापस हमारी ओर देखती चमक उठीं।

पट्टियों वाले बंदे ने घबराते हुए कहा, 'अगर वह स्टीमर पर चढ़ने लगती तो सचमुच मैंने तो गोली चलाने की कोशिश करनी थी। पिछले पंद्रह दिनों से मैं उसे उस घर से बाहर रखने में अपनी जान ख़तरे में

डालता रहा हूँ। एक दिन वह अंदर आ ही गई और यह देख कर कि मैंने अपने कपड़े सीने के लिए भंडारे से इन चीथड़ों को इकट्ठा किया है, उसने बहुत शोर मचाया। मैंने कुछ अशालीन किया होगा। लगता तो यही है कि ऐसा ही कुछ होगा, क्योंकि वह घंटे भर मेरी ओर संकेत करती हुई भयंकर ग़ुस्से में कुर्त्ज़ से बातें करती रही। मुझे इस क़बीले की बोली नहीं आती। मेरी क़िस्मत अच्छी थी कि उस दिन कुर्त्ज़ बहुत बीमार थे और वह उसकी बातों पर ध्यान नहीं दे पा रहे थे, नहीं तो कई गड़बड़ होनी थी। मेरी समझ में नहीं आता....नहीं बाबा—यह सब मेरे लिए बड़ा मुश्किल है। चलो खैर, अब बात ख़त्म हुई।'

अब मुझे परदे के पीछे से आती कुर्त्ज़ की गंभीर आवाज़ सुनाई पड़ी। 'मुझे बचाओगे! तुम्हारा मतलब है हाथीदाँत को बचाओ, यह बकवास मुझे मत सुनाओ। मुझे बचाओगे! मैं तुम्हें बचाता रहा हूँ। अब तुम मेरी योजनाओं में अड़ंगे डाल रहे हो। बीमार! बीमार! अरे मैं इतना बीमार नहीं हूँ, जितना तुम समझते हो। खैर छोड़ो, मैं वापस लौटूँगा और अपनी योजनाओं को पूरा करूँगा। मैं दिखा कर रहूँगा कि क्या कुछ किया जा सकता है। तुम और तुम्हारी फालतू की सौदेबाजी—तुम टाँग अड़ा रहे हो। मैं लौटूँगा। मैं....'

मैनेजर बाहर निकला। मुझे महत्त्व देते हुए मेरी बाँह पकड़कर वह मुझे अलग ले गया। 'वह बहुत बीमार हैं, बहुत बीमार', उसने कहा। उसे लंबी साँस लेना ज़रूरी लग रहा था। पर ग़मगीन बने रहना उससे नहीं हो पा रहा था। 'उनके लिए जो कुछ भी हो सकता था हमने किया, है कि नहीं? पर अब सचाई से तो छिप नहीं सकते। मिस्टर कुर्त्ज़ ने कंपनी को फ़ायदे से अधिक नुकसान पहुँचाया है। उन्हें ऐसा नहीं लगता था कि त्वरित कारवाई के लिए यह उचित वक़्त नहीं है। मेरा अपना सिद्धांत यह है कि सावधानी से—सावधानी से क़दम उठाए जाएँ। हमें अभी सावधान होना चाहिए। कुछ समय तक यह इलाक़ा हमारे लिए बंद है। बड़ी खेद की बात है, कुल मिलाकर सौदे में नुकसान होगा। यह

सच है कि बहुत सारा हाथीदाँत इकट्ठा हो गया—पर अधिकतर जीवाश्म है। जैसे भी हो, हमें इसे बचा रखना होगा—पर देखो कैसी ख़तरनाक स्थिति है—और क्यों? क्योंकि ग़लत तरीक़ा अपनाया गया।'

'क्या आपको,' मैंने नदी के किनारे की ओर देखते हुए पूछा, 'ये 'ग़लत तरीक़ा' लगता है।'

'बेशक', वह उत्तेजित होते हुए बोला, 'तुम्हें ऐसा नहीं लगता?'....

'मुझे लगता है कि कोई तरीक़ा अपनाया ही नहीं गया,' मैं थोड़ी देर के बाद बड़बड़ाया।

'सही बात है,' वह ख़ुशी से बोला, 'मुझे अंदाज़ा था कि ऐसा होगा। यह दिखता है कि स्थिति को परखने में ज़रा भी समझदारी नहीं बरती गई। यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं इस बात को सही जगह तक पहुँचाऊँ।'

'ओह!' मैंने कहा, 'वह जो बंदा, क्या नाम है उसका?—वह जो ईंटें बनाता है, वह तुम्हारे लिए ऐसी रिपोर्ट तैयार कर देगा, जो पढ़ने में बेहतर होगी।'

पल भर के लिए वह दंग-सा रह गया। मुझे लग रहा था कि मैंने पहले कभी ऐसी जहरीली हवा में साँस नहीं लिया था और मानसिक रूप से राहत—निश्चित राहत के लिए मैं कुर्त्ज़ की ओर मुड़ा।

मैंने ज़ोर देते हुए कहा, 'जैसा भी है, मिस्टर कुर्त्ज़ कमाल के आदमी हैं।'

वह चलने को हुआ, मुझ पर एक ठंडी भारी नज़र डाल कर धीरे से बोला, 'हैं नहीं, थे' और फिर मेरी तरफ़ पीठ मोड़ते हुए चल पड़ा। मेरे प्रति उसकी सहानुभूति न बची थी। मुझे भी कुर्त्ज़ का सहयोगी मान लिया गया था कि उसके उन तरीक़ों में मेरी भी सहमति है जिनके लिए अभी सही वक़्त आया नहीं था। मेरे तरीक़े ग़लत थे! आह! पर कम से कम दुस्वप्नों के चयन की आज़ादी होना भी तो कोई बात थी।

मैं मिस्टर कुर्त्ज़ की ओर नहीं, जंगल की ओर आकर्षित था। मैं मानने को तैयार था कि कुर्त्ज़ अब क़ब्र में पहुँचने वाला था। एक पल के लिए मुझे लगा मानो मैं भी अकथ्य गोपनीयताओं से भरी विशाल क़ब्र में दफ़नाया जा चुका हूँ। नम मिट्टी की गंध, जीत रहे भ्रष्टाचार की अदृश्य उपस्थिति, घनी रात का अँधेरा....इन सब से मुझे सीने पर असहनीय वज़न का अहसास होने लगा। रूसी युवा ने मेरे कंधे पर थापी दी। उसकी तुतलाहट भरी बड़बड़ाहट मुझे सुनाई पड़ी, 'नाविक भाई—मैं मिस्टर कुर्त्ज़ की छवि बिगाड़ने वाली बातों की जानकारी—छिपा न पाया।'

मैं सुनता रहा। उसके लिए मिस्टर कुर्त्ज़ क़ब्र में नहीं था; मुझे लगता है कि उसके लिए मिस्टर कुर्त्ज़ अमर था। 'चलो,' आख़िरकार मैंने कहा, 'कह दो। सच यह है कि मैं एक तरह से मिस्टर कुर्त्ज़ का दोस्त हूँ।'

बड़ी औपचारिकता के साथ उसने बात शुरू की। अगर हम 'एक ही पेशे' के न होते तो चाहे कैसा भी नतीज़ा होता, उसने बातें अपने तक ही रखनी थीं।

'उन्हें शक था कि उनके प्रति बुरी मंशा रख रहे थे ये गोरे लोग जो—'

'तुम बिल्कुल सही कह रहे हो,' मैंने कहा, 'मुझे वह बातचीत याद थी, जो मैंने कभी छिपे-छिपे सुनी थी। 'मैनेजर का ख़याल है कि तुम्हें फाँसी चढ़ा देना चाहिए।' यह बात जानकर वह चिंतित हुआ। पहले मुझे उसकी चिंता पर हँसी आई।

वह परेशान होता हुआ बोला, 'मुझे चुपचाप यहाँ से निकल जाना चाहिए। कुर्त्ज़ के लिए अब मैं और कुछ नहीं कर सकता और उन्हें मेरे ख़िलाफ़ कोई न कोई बहाना जल्दी ही मिल जाएगा। उनको रोकने वाला कौन है? यहाँ से तीन सौ मील दूर जाकर एक फ़ौजी चौकी है।'

'अरे, नहीं भाई, अगर पास के जंगली लोगों में तुम्हारे दोस्त हैं, तो फिर जाओ।'

'कई हैं,' उसने कहा, 'ये भले लोग हैं—और मुझे कुछ चाहिए तो है नहीं, आप जानते ही हैं।' वह होंठ चबाते हुए खड़ा हो रहा था, फिर बोला, 'मैं नहीं चाहता कि यहाँ इन गोरे लोगों को कोई चोट पहुँचे, पर वैसे मैं मिस्टर कुर्त्ज़ की छवि के बारे में सोच रहा था—पर आप एक साथी नाविक हैं और '

'ठीक है,' थोड़ी देर बाद मैंने कहा, 'मिस्टर कुर्त्ज़ की छवि मेरे साथ सुरक्षित रहेगी।'

मुझे अंदाज़ा नहीं था कि मेरी बात कितनी सही निकलेगी। उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए मुझे बतलाया कि कुर्त्ज़ ने ही स्टीमर पर हमले का आदेश दिया था। 'कभी-कभी उन्हें इस बात से चिढ़ होती थी कि लोग उन्हें अपने साथ ले जाएँगे—फिर कभी....पर मुझे इन बातों की कोई समझ नहीं। मैं सीधा-सादा आदमी हूँ। उन्होंने सोचा कि हमला होने पर आपलोग डर जाएँगे—और यह मानकर कि उनकी मौत हो गई होगी, आगे की यात्रा रद्द कर देंगे। मैं उन्हें रोक नहीं पाया। ओह! इस प्रसंग में पिछले माह मेरे साथ बड़ी बुरी बीती। '

'ठीक है,' मैंने कहा, 'अब उनका दिमाग़ ठीक है।' 'हाँऽऽऽ,' वह बड़बड़ाया, पर लगता था कि उसे पक्का विश्वास नहीं है।

'शुक्रिया,' मैंने कहा, 'मैं आँखें खुली रखूँगा।'

'पर किसी को कहना मत, ठीक है न?' उसने बेचैनी से ज़ोर देते हुए कहा, 'उनकी छवि को बड़ा नुकसान पहुँचेगा अगर यहाँ कोई'।

मैंने बड़ी गंभीरता से कहा कि बिल्कुल बात इधर-उधर न होगी।

'यहाँ से थोड़ी दूर एक नाव है और तीन काले बंदे मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। मैं चलता हूँ। आप मुझे कुछ मार्टिनी-हेनरी कार्तूज़ दे सकते हैं?'

मैं दे सकता था, मैंने दिए भी, पूरी गोपनीयता के साथ। उसने कनखी मारते हुए मुट्ठी भर तंबाकू भी ले लिया, 'नाविकों के बीच की बात है—क्यों—उम्दा अंग्रेज़ी तंबाकू।'

पांयलट कमरे के दरवाज़े पर वह मुड़ा—'क्यों, आपके पास अतिरिक्त जूते होंगे क्या?' उसने एक टाँग उठाई। उसके नंगे पैरों के नीचे धागों से चप्पल जैसे तलवे बँधे हुए थे। मैंने उसे अपने जूतों का एक पुराना जोड़ा दे दिया। अपनी बाँहों तले उन्हें सँभालने से पहले उसने ख़ुश होकर उन्हें देखा। उसकी एक जेब (गाढ़ी लाल) कार्तूज़ों से भरी थी। दूसरी से (गाढ़ी नीली) 'टाउसन की पड़ताल' किताब झाँक रही थी, इत्यादि, इत्यादि। लग रहा था कि जंगल में वापस लौटने के लिए वह बिल्कुल तैयार था।

'आह! मुझे ऐसा आदमी फिर कभी नहीं मिलेगा। काश कि तुमने उसका कविता पाठ सुना होता—उसने बतलाया था कि वे उसकी अपनी कविताएँ थीं। कविताएँ!' इन ख़ुशियों को याद करते हुए उसने आँखों की पुतलियाँ घुमाईं। 'ओह! उसने मेरी सोच को इतना आगे बढ़ाया।'

'अलविदा,' मैंने कहा। उसने हाथ मिलाए और रात के अँधेरे में वह गुम हो गया। कभी-कभी मैं ख़ुद से पूछता हूँ कि क्या सचमुच मैं उससे मिला था—क्या ऐसे कमाल के किसी आदमी से मिलना संभव भी था!

आधी रात के बाद जब अचानक मेरी आँख खुली तो मुझे ख़तरे का संकेत करती उसकी चेतावनी याद आई। तारों भरे अँधेरे में यह ख़तरा ऐसा वास्तविक था कि मैंने उठ कर आस-पास घूम आने की सोची। चट्टान पर आग की बड़ी धूनी जमी थी, जिसकी रोशनी अड्डे की इमारत के एक कोने पर बख़ूबी पड़ रही थी। हमारे काले लोगों की एक सशस्त्र टुकड़ी के साथ एक एजेंट हाथीदाँत की पहरेदारी कर रहा था; पर जंगल की गहराई में, काँपती लाल किरणें गहरे काले रंग की स्तंभों जैसी बिखरी आकृतियों के बीच उठती-गिरती लग रही थीं और उन शिविरों की स्थिति दिखला रही थीं, जहाँ मिस्टर कुर्त्ज़ के भक्त बेचैनी के साथ चौकीदारी कर रहे थे। नगाड़े की एकरस आवाज़ हवा में दबे-दबे झटके और निरंतर कंपन लाती मँडरा रही थी। बहुत सारे लोगों में हरेक अपने ही गरज में अजीब

मंत्रोच्चारण-सा कर रहा था और इससे ऐसी एक भिनभिनाती आवाज़ जंगल की अँधेरी सपाट दीवारों में से आ रही थी जैसे बर्रों के छत्ते से आती है और मेरी अधजगी इंद्रियों पर इसका अजीब नशीला प्रभाव पड़ रहा था। मुझे लगता है कि मैं जंगले पर बदन टिकाए सो ही पड़ा था, जब अचानक किसी दबे हुए और रहस्यमय उन्माद के ज़बर्दस्त विस्फोट, फूटती चीख़ों से मेरी नींद बौखलाहट भरे अचंभे के साथ टूट गई। झट से वह शोर रुक भी गया और फिर भिनभिनाहट चलती रही, जिससे वही सन्नाटा सुनाई पड़ने लगा और सुकून देता हुआ छा गया। मैंने यूँ ही छोटे कमरे में नज़र दौड़ाई। अंदर प्रकाश जल रहा था, पर मिस्टर कुर्त्ज़ वहाँ नहीं था।

अपनी आँखों पर मुझे यक़ीन होता तो मैंने ज़रूर शोर मचाया होता। पर पहले मुझे उन पर विश्वास नहीं हुआ—मिस्टर कुर्त्ज़ का न होना बिल्कुल नामुमकिन लग रहा था। सच यह है कि किसी भी स्पष्ट शारीरिक तकलीफ़ लाने वाले ख़तरे से अलग बिल्कुल सादा डर, किसी अमूर्त्त आतंक, से मैं घबरा गया था। यह भावना इतनी गहरी थी—कैसे कहूँ—इसलिए कि मुझे नैतिक झटका लगा था, मानो बिना किसी पूर्व आशंका के, सचमुच भयानक कुछ, जिसकी कल्पना भी असहनीय हो और जो आत्मा को कुत्सित लगता हो, मेरे ऊपर थोप दिया गया हो। वैसे यह मनस्थिति बस पल भर को रही और फिर सामान्य कहीं कभी भी हो सकने वाला घातक ख़तरा, अचानक हमला और हत्या या ऐसा ही कुछ का अहसास आ बैठा। मुझे यह आशंका हुई कि ऐसा कुछ होने ही वाला है। यह सोचना बिल्कुल ठीक और दिलासा देता लगा। सचमुच ऐसा सोचते हुए मैं इतना शांत हो गया कि मैंने शोर तक नहीं मचाया।

मुझसे तीन फीट की दूरी पर ही अपने ढीले चोगे में बंद एक एजेंट कुर्सी पर सो रहा था। उन चीख़ों से वह जगा नहीं था। वह हल्के खर्राटे मार रहा था। मैंने उसे नींद में छोड़ा और उछलकर किनारे उतरा। मैंने मिस्टर कुर्त्ज़ के साथ गद्दारी न की—आदेश था कि मैं उसके साथ विश्वासघात न करूँ—लिखित निर्देश था कि मैं अपनी पसंद के दुःस्वप्न के प्रति

वफ़ादार रहूँ। इस साए से अकेले जूझने के लिए मैं बेचैन था—और आज तक मैं नहीं जानता कि मुझमें इतनी ईर्ष्या क्यों थी कि मैं उस अनुभव के विचित्र अँधेरे पक्ष को किसी के साथ साझा नहीं करना चाहता था।

किनारे पर जाते ही मुझे पगडंडी दिखी—घास में से निकलती चौड़ी पगडंडी। याद आता है कि मैंने ख़ुद से कहा, 'वह पैदल नहीं चल पा रहा। वह चारों पाए चल रहा है—अब मैं उसे पकड़ लूँगा।' घास ओंस से गीली पड़ी थी। मैं मुट्ठियाँ भींच कर तेज़ी से चला। मुझे लगता है कि मेरे मन में उससे टकराने का और उसकी पिटाई करने का अधकचरा ख़याल-सा था। मुझे नहीं मालूम। कुछ कच्चे-पक्के विचार मन में थे। इस पूरे मामले में दूसरी ओर बिलाव के साथ कपड़ा बुनती बुढ़िया मेरी स्मृति में बड़ी बाधा बनकर सबसे ग़लत इंसान-सी बैठी थी। मैंने कई एजेंट यात्रियों को कूल्हों पर रखी बंदूक़ों से हवा में गोलियाँ चलाते देखा। मुझे लगा कि मैं स्टीमर पर वापस नहीं जा पाऊँगा और मैंने कल्पना में सोचा कि अब तो बंदूक़ के बिना ही बड़ी उम्र तक जंगल में रहना है। ऐसी अजीब बातें—अब क्या बताएँ। और मुझे याद है कि मैंने नगाड़ों की ताल का सामना अपने दिल की धड़कनों से किया, और मैं ख़ुश था कि वे बेरोक नियमित ढंग से चल रही हैं।

पर मैं उसी पगडंडी पर चलता रहा—फिर रुक-रुक कर सुनता रहा। रात बिल्कुल साफ़ थी। ओस और तारों के प्रकाश से जगमगाता नीला अँधेरा अंतरिक्ष, और इसमें काली आकृतियाँ स्तब्ध खड़ी थीं। मुझे लगा जैसे कि मेरे सामने आगे कोई चीज़ हिलती दिख रही थी। अजीब बात थी कि उस रात हर बात के बारे में मैं निश्चिंत था। पगडंडी से भटककर मैं गोल चक्कर काटकर बढ़ता रहा (याद है कि मैं मन ही मन हँस रहा था) ताकि उस हिलती-डुलती आकृति से आगे बढ़ सकूँ—अगर सचमुच मैंने कुछ देखा ही था। मैं कुर्त्ज़ को छलने की कोशिश कर रहा था जैसे कि कोई बचपन का खेल हो।

मैं उससे टकराया, और, अगर उसने मेरे आने की आवाज़ न सुनी होती तो मैं उस पर गिर पड़ा होता, पर वह वक़्त रहते उठ खड़ा हुआ। डगमगाता, लंबा, फीका, अस्पष्ट, मेरे सामने वह उठ खड़ा हुआ मानो धरती के साँस छोड़ने पर भाप निकली हो, और मेरे सामने धुँधला और चुप वह थोड़ा हिला। मेरे पीछे पेड़ों के बीच से आग धधक रही थी। जंगल से कई तरह की आवाज़ों की बड़बड़ाहट सुनाई पड़ रही थी। मैं चालाकी से उसके आगे आ पहुँचा था; पर यथार्थ में उसका सामना करते हुए मैं होश में वापस आया। मैंने ख़तरे के असली फैलाव को जाना। अभी तक हम ख़तरे से बाहर न थे। अगर वह शोर मचाए तो? उससे खड़ा तक न हुआ जा रहा था, पर उसकी आवाज़ में अब भी ख़ासा दम था। 'भागो—छिपो,' उसने अपनी गंभीर आवाज़ में कहा। आवाज़ में आतंक था। मैंने पीछे देखा। बिल्कुल पास की धूनी हमसे तीस गज से कम दूरी पर थी। रोशनी के पार एक काली आकृति उठ खड़ी हुई, लंबी काली बाँहें हिलाती लंबी काली टाँगों पर दौड़ी। मेरे ख़याल से उसने सींग लगाए हुए थे—हिरण के सींग। कोई शक नहीं कि वह कोई ओझा या झाड़-फूँक करने वाला था। देखकर भरपूर शैतान लगता था। मैंने फिसफिसाकर पूछा, 'आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं?'

'बिल्कुल,' उस एक शब्द के लिए आवाज़ ऊँची करते हुए उसने जवाब दिया। मुझे लगा आवाज़ कहीं दूर से, फिर भी ऊँची आई, जैसे कोई भोंपू का शोर हो। मैंने मन ही मन कहा, 'अगर यह बंदा शोर मचाए, तो हमारी तो शामत आ गई।' मार लड़ाई करने का कोई मतलब ही नहीं था, वैसे भी मुझे उस साए—उस परेशान घुमंतू बंदे—की पिटाई करने से स्वाभाविक वितृष्णा थी।

'आप खो जाएँगे,' मैंने कहा, 'बिल्कुल खो जाएँगे।' तुम समझो कि ऐसे वक़्त में समझदारी का उफान-सा आता है। मैंने सही बात कही थी, हालाँकि उस पल, जब आख़िर तक टिकने वाली—टिकने वाली—या उससे भी आगे तक हमारी आत्मीयता की नींव ढाली जा रही थी, वह

सचमुच जितना खोया हुआ था, उससे अधिक न लौट पाने वाली स्थिति तक उसका खो सकना नामुमकिन था।

'मैंने बहुत बड़ी योजनाएँ सोची थीं,' वह ढुलमुल अहसास में बड़बड़ाया।

'हाँ,' मैंने कहा, 'पर अगर आप शोर मचाएँगे तो मैं इससे आपका सर फोड़ दूँगा'—पास कोई डंडा या पत्थर न था, 'गला घोंटकर मार डालूँगा,' मैंने बात बदलते हुए कहा।

'मैं बड़ी सफलताओं के कगार पर था,' उसने चाहत भरे स्वर में आग्रह के साथ कहा। उसकी आवाज़ में ऐसी उदासी थी कि मेरा खून जमने लगा।

'अब इस बेवकूफ़ की वजह से—'

'यूरोप में आपकी सफलता पक्की है,' मैंने दृढ़ता से हामी भरते हुए कहा। तुम समझ सकते हो कि मैं उसका गला घोंटने से बचना चाहता था—वैसे भी उसका कोई व्यावहारिक फ़ायदा न होता। मैंने उस मंत्र को काटने की कोशिश की—जंगल का भारी, मूक, वशीकरण मंत्र—जो उसकी भूली हुई आदिम प्रवृत्तियों को जगाकर, संतृप्त और भयंकर चाहतों की स्मृतियों से उसे अपने निर्दयी सीने में खींच रहा था। मुझे पक्का यक़ीन था कि यही एक कारण था जो उसे जंगल के कोने तक, झाड़ियों तक, आग की चमक, नगाड़ों की थाप, अजीबोग़रीब मंत्रों की भिनभिनाहट की ओर खींच ले गया था। यही एक बात थी जिससे उसकी बाग़ी आत्मा मान्य आकांक्षाओं के पार फँस चुकी थी। अरे तुम समझते हो कि नहीं कि उस वक़्त आतंक सिर पर चोट आने का नहीं था—हालाँकि ऐसे ख़तरे के डर का तीखा ज़िंदा अहसास भी मुझे था—बल्कि आतंक इस बात का था कि मुझे ऐसे बंदे का पाला पड़ा था, जिसके साथ ऊँच-नीच की बात कर समझौता नहीं किया जा सकता था। मुझे उन निगरों की तरह उसी का आवाहन करना था—वह ख़ुद जो अपने असाधारण अधःपतन की पराकाष्ठा में ख़ुश था। न तो उसके ऊपर और न ही नीचे कुछ था

और मुझे यह बात मालूम थी। उसने ख़ुद को ज़मीं से उखाड़ लिया था। ऐसे आदमी का सामना! उसने ज़मीं को टुकड़े-टुकड़े कर डाला था। वह अकेला था और उसके सामने मैं इस बात से अनजान था कि मैं ज़मीं पर खड़ा था या कि मैं हवा में तैर रहा था। मैं तुम्हें बतलाता रहा हूँ कि हमने क्या बातें कीं—हमारे कहे मुहावरों को दुहराता रहा हूँ—पर इससे क्या निकलने वाला है? आख़िर वे रोज़ाना के बोलचाल के लफ्ज़ ही थे—आमफ़हम ध्वनियाँ जो जागे हुए दैनंदिन जीवन में बार-बार कही जाती हैं। तो क्या हुआ? मेरे विचार में इनके पीछे सपनों में कहे जाते लफ्ज़ या दुःस्वप्नों में कहे गए मुहावरों के अर्थ छिपे थे। आत्मा! अगर किसी एक आदमी ने आत्मा के साथ संघर्ष किया है तो वह मैं हूँ। और मैं किसी पागल से बहस नहीं कर रहा था। मानो या न मानो, उसका दिमाग़ सोलहो आने दुरुस्त था। यह सही है कि वह बड़ी शिद्दत के साथ ख़ुद ही पर केंद्रित था। मेरे पास बच निकलने की यही एक उम्मीद थी। वैसे दूसरा तरीक़ा था कि मैं उसे क़त्ल कर सकता था, पर यह अच्छा न था, क्योंकि इससे आवाज़ तो होनी ही थी। पर उसकी आत्मा विक्षिप्त थी। जंगल में रहकर उसने ख़ुद के अंदर झाँकना शुरू कर दिया था और या ख़ुदा! वह पागल हो चुका था। यह मेरे कर्मों का फल ही होगा कि यह सारा कुछ ख़ुद देखने की पीड़ा से मुझे गुज़रना पड़ रहा था। ईमानदारी के उसके आख़िरी उद्‌गार से अधिक मानवता में अपने विश्वास पर सवाल खड़ा करने लायक़ कोई और तक़रीर नहीं हो सकती थी। वह ख़ुद से भी जूझ रहा था—मैंने सुना, मैंने देखा। मैंने उस उन्मुक्त, अराजक, निर्भय, पर ख़ुद से ही जूझती आत्मा के अकल्पनीय रहस्य को देखा। मैंने दिमाग़ ठंडा रखा और जब आख़िरकार उसे आरामकुर्सी पर लिटा दिया, मैंने अपना माथा पोंछा। मेरी टाँगें काँप रही थीं, मानो मैं आधा टन वज़न ढोते उस चट्टान से उतरा था, जबकि मैंने उसे बस सहारा भर दिया था। उसकी हड्डियों-सी दिखती बाँह मेरी गर्दन पकड़े हुए थी—और उसका वज़न एक बच्चे से ज़्यादा न था।

अगले दिन मध्याह्न को जब हम चले, अभी तक दरख़्तों के पीछे की जिस भीड़ का तीखा अहसास हर वक़्त मुझमें चल रहा था, वह फिर जंगल से निकली। भीड़ ने सारा मैदान भर दिया। नंगे, साँस लेते, काँपते शरीरों से ढलान ढँक गई। मैंने ज़रा भाप भरी, स्टीमर को आगे की ओर घुमाया और दो हज़ार आँखों ने उस पानी छलकाते, थापते, भयंकर जल दानव को अपनी पूँछ से पानी को पीटते और हवा में काला धुँआ छोड़ते देखा। बिल्कुल सामने की कतार में आगे, नदी के समांतर, सिर से पैर तक गाढ़े लाल रंग में पुते हुए तीन लोग बेचैनी से आगे-पीछे होते रहे। जब हम फिर आमने-सामने हुए, उनका चेहरा नदी का ओर था, वे ज़मीं पर पैर पटक रहे थे, अपने सींग पहने सिर हिला रहे थे, उनके बैंगनी शरीर झूम रहे थे। वे भयंकर जल दानव की ओर एक काले पंखों का गुच्छा और मनकों से सजी हुई पूँछ वाला सूखी लौकी-सा दिखता एक गंदा चमड़ा हिला रहे थे। बीच-बीच में एक साथ अजीब शब्दों की लड़ियाँ बना वे चिल्ला रहे थे, जो किसी भी इंसानी बोली से मेल न खाते थे। अचानक रोकी गई भीड़ की वह बड़बड़ाहट किसी ऐयार के शैतानी मंत्र जैसी प्रतिक्रिया थी।

हम लोग कुर्त्ज़ को पायलट वाले कमरे में ले आए थे। वहाँ हवा अच्छी आ रही थी। आरामकुर्सी पर लेटे हुए, वह खुली शटर से बाहर की ओर देख रहा था। मानव शरीरों के उस समंदर में लहरें उमड़ रही थीं, और सिर पर हेलमेट जैसे जूड़े और भूरे गालों वाली स्त्री धार के बिल्कुल किनारे तक दौड़ आई। उसने अपने हाथ फैलाए, चिल्ला कर कुछ कहा और वह जंगली भीड़, अनरुकी साँस में तेज़ी से गरजती हुई इकट्ठी संयोजित ढंग से चिल्ला उठी।

'ये लोग क्या कह रहे हैं, आप समझते हैं?' मैंने पूछा।

वह धधकती, चाहत भरी आँखों से, उत्कंठा और नफ़रत की अभिव्यक्ति लिए मुझसे परे कहीं देखता रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया,

पर मुझे उस के बेजान होंठों पर एक मुस्कान दिखलाई दी; उस मुस्कान का कोई अर्थ न था। एक पल के बाद वे होठ काँपते हुए फड़कने लगे।

'मुझे ही नहीं समझ आएगा?' उसनें हाँफते हुए धीरे से कहा, मानो कोई अलौकिक शक्ति उसमें से ये शब्द निकलवा रही थी।

मैंने सीटी की रस्सी खींची। मैंने ऐसा इसलिए किया कि मैंने देखा कि डैक पर एजेंट यात्री संगीत सुनने-सुनाने के लिए बंदूक़ें निकाल रहे थे। अचानक उठे भोंपू की आवाज़ से उस भीड़ के समंदर में भारी आतंक की लहर दौड़ गई। डैक पर किसी ने निराशापूर्वक कहा, 'अरे नहीं! उनको डराकर भगाओ मत!'

मैंने बार-बार रस्सी खींची। वे बिखरते हुए दौड़े, उछले, घुटनों पर चलने लगे, झटके से मुड़े, उस आवाज़ के उड़ते आतंक से बचने की कोशिश करते रहे। लाल रंग पुते तीन लोग लंबलेट ज़मीं पर गिर पड़े थे, जैसे कि किसी ने उन्हें गोली चलाकर मार डाला हो। बस उस अद्‌भुत जंगली स्त्री ने पलक तक न झपकी, और उसने त्रासद ढंग से उस गंभीर चमकती नदी के ऊपर अपनी बाँहें फैला दीं।

तभी डैक पर खड़ी बेवक़ूफ़ों की भीड़ ने अपना मनोरंजन शुरू कर दिया और धुएँ के अलावा मुझे कुछ न दिख रहा था।

अंधकार के जिगर से निकलता भूरा प्रवाह तेज़ी से दौड़ा आया। हम धार पर इस ओर जिस गति से आए थे, उससे दुगुनी गति से चल रहे थे। कुर्त्ज़ के प्राण भी तेज़ी से धड़क रहे थे। उसकी जान मुर्झा रही थी, जिगर से निकल मुर्झाती हुई काल के अनंत समंदर में खोती जा रही थी। मैनेजर बहुत शांत दिख रहा था। अब उसे विशेष चिंता न थी। उसने हम दोनों को भरपूर और शांत नज़रों से देखा; 'मामला' अपेक्षानुसार ठीक-ठाक निपट गया था। मैं देख रहा था कि 'अनुचित तरीक़ों' वाले समूह में मेरे अकेले के रह जाने का समय क़रीब आता जा रहा था। एजेंट यात्रियों को मुझसे नाख़ुशी थी। एक तरह से मुझे मर चुके लोगों में गिना जा रहा था।

अजीब ही है कि लालची हैवानों के शिकार इस अँधेरे प्रदेश में मैंने यह अविचारित साझेदारी, बुरे सपनों का यह इंतख़ाब कैसे किया।

कुर्त्ज़ चर्चाएँ करता रहा। आवाज़! अद्‌भुत आवाज़! अंत तक वह गहरी गूँजती रही। उसके दिल के वीरान अँधेरे में से आती वाक्पटुता की लाजवाब तहों में छिपने की उसकी ताक़त से भी ज़्यादा उसकी आवाज़ बची रही। ओह! कैसा संघर्ष किया उसने! वह जूझता रहा! उसके थके, मुर्झाते दिमाग़ में अब सायों में आती तस्वीरें थीं—उत्तम और उद्धत बातों की उसकी अमिट क्षमता को घेर कर चिपकती-सी घूमती यश और संपदा की तस्वीरें थीं। मेरी प्यारी, मेरा अड्डा, मेरा पेशा, मेरी योजनाएँ—उसके कभी-कभार उत्तेजित भावनाओं में निकले उद्‌गार यही थे। आदिम धरती की तहों में जल्दी ही दफ़्न हो जाने वाले उस खोखले बनावटी चरित्र में अक्सर ही असली कुर्त्ज़ की छवि दिख जाती। पर पैशाचिक प्रेम, और उनकी वजह से जिन रहस्यों की जड़ों तक वह गया, उनके प्रति अलौकिक नफ़रत, दोनों ही उस अघायी आत्मा को वश करने के लिए जूझ रहे थे, जो झूठी शोहरत, बनावटी फ़र्क़ और सफलताओं और ताक़त के सभी दिखावों के लिए लालायित, आदिम भावनाओं से भरपूर थी।

कभी-कभी वह तिरस्कार लायक़ बचकानी हरकतें करता। वह माँग करता कि उन भयंकर अनजान इलाक़ों से जहाँ वह बड़ी सफलताएँ हासिल करना चाहता था, लौटने पर रेलवे स्टेशनों पर राजा आकर उससे मिलें। 'उन्हें दिखला दो कि तुम्हारे पास फ़ायदेमंद दक्षता है, तो तुम्हारी योग्यता को स्वीकृति मिलने में कोई कमी न होगी,' वह कहता। 'हाँ, अपने मक़सद को ज़रूर ध्यान में रखो—उद्देश्य सही होने चाहिए—हमेशा।'

स्टीमर के पास से गुज़रते निरपेक्ष पेड़ों के झुंड से भरे एक ही जैसे दिखते विस्तीर्ण प्रांतर, बिल्कुल एक ही जैसे दिखते इकहरे घुमाव, बदलाव, विजय, व्यापार, हत्याओं, सफलताओं के अग्रदूत, किसी और दुनिया के इस कीचड़ सने टुकड़े को धीरज से देखते रहे। मैं स्टीमर

चलाता हुआ सामने की ओर देखता रहता। एक दिन कुर्त्ज़ ने अचानक ही कहा, 'शटर बंद कर दो। मुझसे यह देखा नहीं जाता।'

मैंने ऐसा ही किया। सन्नाटा फैल गया। अदृश्य जंगल की ओर देखकर वह चीख़ा, 'अभी तो तुम्हारे प्राण-पखेरू दबोचना बाक़ी है।'

जैसा मैंने सोचा था, एक द्वीप के मुहाने पर आकर स्टीमर ख़राब हो गया और हमें मरम्मत के लिए रुकना पड़ा। इससे हो रही देर से पहली बार कुर्त्ज़ का मनोबल टूटा। उसने मुझे काग़ज़ात और फोटुओं भरा एक लिफ़ाफ़ा दिया—सारा कुछ जूतों के फीतों से बाँधा हुआ था। 'इनको मेरे लिए सँभाल कर रखना,' उसने कहा, 'यह बदमाश बेवकूफ़ (मतलब मैनेजर) जब मेरी नज़र न पड़े तो मेरे बक्से को खोल कर देख सकता है।'

दोपहर को मैंने उसे देखा। वह आँखें मूँदे डैक पर लेटा था और मैं चुपचाप पीछे हट गया। पर मैंने उसे बड़बड़ाते सुना, 'भली ज़िंदगी जिओ, मर जाओ, मर जाओ....'। मैं सुनता रहा। उसने और कुछ न कहा। क्या वह नींद में किसी भाषण का अभ्यास कर रहा था? या वह किसी अख़बार के लिए तैयार किसी आलेख का कोई वाक्यांश था? वह अख़बारों के लिए लिखता था और फिर से लिखना चाहता था 'ताकि मेरे विचार फैल सकें। यह ज़िम्मेदारी है।'

वह एक ऐसा अँधेरा समाए हुए था, जिसके पार जाना संभव न था। मैंने उसे देखा तो लगा कि मैं ऐसी चट्टान के नीचे लेटे हुए एक आदमी को देख रहा हूँ, जहाँ सूरज की रोशनी कभी नहीं पहुँचती। पर उसे सँभालने के लिए मैं अधिक वक़्त नहीं दे पा रहा था, क्योंकि मुझे इंजिन चालकों को लीक कर रहे सिलिंडरों को खोलने, अलग पुर्ज़ों को जोड़ती छड़ को सीधी करने और ऐसे दूसरे मामलों में मदद करनी पड़ रही थी। मैं ऐसी चीज़ों के नर्क में खोया हुआ था—जंग लगी चीज़ें, धातु का बुरादा, नट, बोल्ट, पाने, हथौड़े, दाँत वाले बरमे, जिनसे मुझे कोई मुहब्बत नहीं और जिनसे मैं नफ़रत करता हूँ। क़िस्मत से हमारे पास

लोहारों वाली एक छोटी भट्ठी थी, जिसे मैं सँभाल रहा था; जब तक कि मैं थकान से गिरने लायक़ हालत में न पहुँचूँ। मैं बेकार कल-पुर्ज़ों के ढेर में थका हुआ मेहनत कर रहा था।

एक शाम जब मैं एक मोमबत्ती लेकर आया, तो मैंने उसे काँपती आवाज़ में कहते सुना, 'मैं मौत के इंतज़ार में यहाँ लेटा हुआ हूँ।' रोशनी उसकी आँखों से फुटभर की कम दूरी पर थी। मैंने किसी तरह बड़बड़ाकर कहा, 'क्या बकवास है!' और उसके पास मंत्रमुग्ध-सा खड़ा रहा।

उसकी शक्ल में जो बदलाव आ रहे थे, मैंने पहले कभी न देखे थे और मुझे उम्मीद है कि फिर कभी देखने न पड़ेंगे। मैं द्रवित नहीं हुआ था। मैं अभिभूत था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई नक़ाब उठ गया था। हाथीदाँत जैसे सफ़ेद उस चेहरे पर मुझे गंभीर गौरव, क्रूर ताक़त, कायर आतंक—कुल मिलाकर एक घनी नाउम्मीदी दिखी। तो क्या उस चरम क्षण में जब पूर्ण ज्ञान मिलता है, वह फिर से सभी चाहतों, लालचों और समझौतों के हर ब्योरे के साथ अपनी ज़िंदगी जी रहा था? किसी साए, किसी झलक की ओर देखते हुए फिसफिसाता हुआ वह चीख़ा—दो बार वह चीख़ा, वह ऐसी चीख़ थी, जो एक साँस भर से ऊँची न थी—

'दोज़ख़! दोज़ख़!'

मैंने बत्ती बुझा दी और केबिन से बाहर निकल आया। सभी यात्री एजेंट भोजनागार में खाना खा रहे थे और मैं मैनेजर के उलटी तरफ़ आकर बैठा। उसने सवालिया नज़र से आँखें उठाकर मुझे देखा और मैं उसे नज़रअंदाज़ करने में सफल हुआ। वह शांत पीछे की ओर झुका। चेहरे पर हैवानियत की छिपी गहराइयों पर परदा डालती विचित्र मुस्कान थी। दिए पर, कपड़ों पर, हमारे हाथों और चेहरों पर छोटी मक्खियों का एक झुंड बराबर बरसता जा रहा था। अचानक मैनेजर के भृत्य ने अपना ढीठ काला सिर दरवाज़े के अंदर किया और गहरी नफ़रत भरी आवाज़ में कहा—'मिस्टा' कुर्त्ज़—मर गया।'

सारे एजेंट देखने के लिए दौड़कर बाहर निकले। मैं बैठा रहा और भोजन करता रहा। मैं जानता हूँ कि इसे बेहद फूहड़पन माना गया। पर मैं ज़्यादा नहीं खा पाया। शुक्र यह कि वहाँ एक दिया था—बत्ती, है न—और बाहर भयंकर, भयंकर अँधेरा था। मैं उस कमाल के शख़्स के पास फिर से नहीं गया, जो धरती पर अपनी आत्मा के दुःसाहसों पर अपनी राय सुना चुका था। वह आवाज़ जा चुकी थी। और वहाँ क्या बचा था? वैसे मुझे यह मालूम है कि अगले दिन एक कीचड़ भरे गड्ढे में एजेंटों ने कुछ दफ़नाया था।

और फिर वे मुझे दफ़नाने ही वाले थे। पर जैसा तुम लोग देख ही रहे हो, मैं कुर्त्ज़ का साथ निभाने तुरंत नहीं चल पड़ा। आख़िर तक दुःस्वप्न देखने को मैं ज़िंदा रहा ताकि फिर एकबार कुर्त्ज़ के प्रति अपनी वफ़ादारी दिखा पाऊँ। क़िस्मत! मेरी नियति! ज़िंदगी भी कैसा परिहास है—तुच्छ मक़सदों के लिए निर्दयी तर्कशीलता का रहस्यमय सिलसिला। इससे अधिक से अधिक यही सीखने को मिलता है कि हमें अपने बारे में थोड़ी जानकारी मिल जाती है—वह भी बड़ी देर से—अनबुझ अफ़सोसों की फ़सल। मैं मौत के साथ जूझ चुका हूँ। इससे बढ़कर नीरस कोई और संघर्ष सोचा नहीं जा सकता। यह संघर्ष एक ऐसे अबूझ सियाह माहौल में होता है जो समझ में नहीं आता। इसके दौरान पैरों तले ज़मीं नहीं रहती, आस-पास कुछ नहीं होता, कोई दर्शक नहीं होता, कहीं कोई आवाज़ नहीं आती। इसमें कोई यश नहीं, किसी जीत की कोई गहरी चाहत नहीं, किसी हार का कोई डर नहीं। इसके दौरान बेमन से उगते संशय का बीमार माहौल होता है, अपने वजूद पर कोई यक़ीन नहीं रहता, और अपने विरोधी पर तो और भी कम होता है। अगर यही आख़िरी ज्ञान का स्वरूप है तो ज़िंदगी हमारी कल्पना से भी बड़ी पहेली है। मैं क़यामत के दर पर खड़ा था और बड़ी ग्लानि के साथ मैंने जाना कि मेरे पास कहने को कुछ भी नहीं था। यही कारण है कि मैं यह दर्ज करता हूँ कि कुर्त्ज़ कमाल का आदमी था। उसके पास कहने को कुछ था। उसने कहा। मैं भी जीवन से

परे छलाँग लगाने ही वाला था, इसलिए मैं उसकी उन नज़रों को बेहतर समझ पाया, जो मोमबत्ती की लौ को नहीं देख पा रहा थीं, पर समूची कायनात को गले लगाने को पूरी तरह खुली थीं। वे अँधेरे में धड़कते सभी दिलों को छेद रही थीं। उसने सार जान लिया था, उसने राय बना ली थी। 'दोज़ख़!' वह कमाल का शख़्स था। आख़िर यह किसी तरह की आस्था की अभिव्यक्ति ही थी। इसमें साफ़गोई थी, इसमें आत्मविश्वास था, अपनी फिसफिसाहट में वह विरोध का काँपता सुर समाए हुए थी। इसमें देखे गए सत्य का भयानक चेहरा था—चाहत और नफ़रत का भयानक एकीकरण था। ऐसा नहीं है कि मैंने अपनी पराकाष्ठा को ही बेहतर याद रखा हो, जिसमें कि शारीरिक कष्ट से भरपूर, सियाह निराकार की झलक थी—और हर चीज़ की, इस कष्ट की भी क्षणभंगुरता के प्रति सावधानी से रची उपेक्षा थी। नहीं, मैं उसकी पराकाष्ठा को जीता रहा हूँ। यही सच है। उसने वह आख़िरी छलाँग लगाई, वह धरती के किनारों को लाँघ गया, जबकि मुझे अपने झिझक भरे पैर वापस मोड़ने की इज़ाजत मिल गई। और शायद इसी में सारा फ़र्क़ है; शायद सारी समझ, सारा सच, सारी ईमानदारी समय के उसी निहायत छोटे-से पल में भर दी गई है, जब हम अदृश्य की सीमा को पार कर लेते हैं। शायद! मैं सोचता हूँ कि मेरा यह संक्षिप्त आख्यान नासमझी में की गई अवहेलना न लगा होगा। उसकी चीख़ बेहतर थी—कहीं ज़्यादा बेहतर थी। उसमें अनगिनत हार, भयंकर आतंक, घिनौने संतोष से बनी नैतिक जीत थी, स्वीकृति थी। पर वह जीत थी। इसीलिए मैं आख़िर तक कुर्त्ज़ के प्रति वफ़ादार रह गया और आगे भी बना रहा जब लंबे समय के बाद उसकी आवाज़ में नहीं, पर स्फटिक के शिखर जैसी पारदर्शी शुद्ध आत्मा से मुझे उसकी अद्भुत बातों की प्रतिध्वनि फिर एक बार सुनाई दी।

नहीं, उन्होंने मुझे दफ़न नहीं किया, हालाँकि मुझे काँपते हुए अचंभे के साथ धुआँसा-सा याद आता है कि ऐसा वक़्त आया था जैसे कि मैं

ऐसी अकल्पनीय दुनिया से गुज़र रहा था, जहाँ कोई आशा नहीं थी और कोई चाहत न बची थी। उस अवसाद भरे शहर में मैं वापस आ गया था, जहाँ ऐसे लोगों को देखकर मुझे कोफ़्त हो रही थी जो एक दूसरे से थोड़े से पैसे हड़पने के लिए, अपना कुख्यात भोजन निगलने, अपनी हानिकर शराब पीने, अपने तुच्छ और मूर्खतापूर्ण सपने देखने के लिए सड़कों पर भागे जा रहे थे। वे मेरे ख़यालों में अनचाहे घुस आते थे। वे घुसपैठिए थे, जीवन के बारे में जिनकी समझ मुझे परेशान करती दिखावा लगती थी, क्योंकि मुझे पक्का यक़ीन था कि जो बातें मैं जानता था वे कभी नहीं जान पाएँगे। महज पूरी सुरक्षा के आश्वासन के साथ अपने काम-धाम में लगे सामान्य लोगों की तरह उनका होना, मुझे एक अनजान ख़तरे के सामने उसे समझने की क्षमता के बिना बेहिसाब मूर्खतापूर्ण सलाहों की बौछार जैसा नापसंद था। उन्हें समझाने की कोई ख़ास इच्छा मुझमें न थी, पर मूर्खतापूर्ण दंभ से भरे उनके चेहरों पर हँसने से मैं ख़ुद को नहीं रोक पाता था। यह कह दूँ कि उस वक़्त मैं अस्वस्थ था। मैं सड़कों पर घूमता रहा—कई मामले निपटाने थे—भले-चंगे शरीफ़ लोगों पर कड़वी हँसी हँसता रहा। मानता हूँ कि मेरा व्यवहार बदतमीज़ी कहलाएगा, पर उन दिनों मेरी तबियत शायद ही ठीक रही हो। मेरी 'तबियत को दुरुस्त करने के लिए' मेरी मौसी की कोशिशें नाकामयाब थीं। दरअसल मेरी तबियत नहीं, मेरी सोच को इलाज की ज़रूरत थी। कुर्त्ज़ ने जो काग़ज़ात दिए थे, उस गट्ठर को मैं साथ रखे हुए था। मुझे पता न था कि मैं उसका क्या करूँ। हाल में ही उसकी माँ गुज़र गई थी। पता चला था कि आख़िरी दिनों में उसकी प्रेमिका ने उसकी माँ की सेवा की थी। एक दिन एक साफ़ दाढ़ी बनाई शक्ल का आदमी मुझसे मिलने आया। उसके हाव-भाव औपचारिक थे और उसने सोने की कमानी वाली ऐनक पहनी हुई थी। पहले घुमा-फिरा कर और बाद में सज्जनता के साथ दबाव डालते हुए उसने कुछ, शौक़ से उसने शब्द चुना, 'काग़ज़ात' के बारे में पूछा। मुझे कोई आश्चर्य न हुआ, क्योंकि यात्रा में दो बार इस बात पर मैनेजर

से लड़ चुका था। मैंने उस गट्ठर में से एक टुकड़ा काग़ज़ देने से भी मना कर दिया था और यही रवैया मैंने उस ऐनक पहने आदमी के साथ रखा। अंत में वह धौंस जमाता धमकियाँ देने लगा और बड़े ग़ुस्से के साथ उसने बहस की कि कंपनी को अपने 'मिल्कीयत' के बारे में हर छोटी सूचना पर पूरा हक़ है। उसने कहा, 'अपनी असाधारण क्षमताओं और दुखदायी परिस्थितियों में रहने की मजबूरी की वजह से मिस्टर कुर्त्ज़ का ज्ञान विस्तृत और विचित्र रहा होगा; इसलिए—'

मैंने उसे आश्वस्त किया कि मिस्टर कुर्त्ज़ का ज्ञान जितना भी व्यापक रहा हो, उसके साथ प्रशासन और व्यापार का कोई संबंध न था। उसने विज्ञान की दुहाई दी।

'इससे अपरिमेय क्षति होगी,' इत्यादि, इत्यादि।

मैंने उसे 'जंगली रस्मों पर रोकथाम' पर लिखी रिपोर्ट दी, जिसका 'पुनश्च' वाला हिस्सा फाड़ा हुआ था। उसने उत्सुकता से वह ले लिया, पर वह उसे उपेक्षा के साथ सूँघता रह गया।

'हम यहाँ ऐसे काग़ज़ात की अपेक्षा से नहीं आए थे,' वह बोला।

'और किसी चीज़ की अपेक्षा मत रखिए। बाक़ी निजी ख़त हैं।'

वह क़ानूनी कारवाई का डर दिखा कर वापस लौट गया और उसके बाद मैं उससे कभी नहीं मिला। पर दो दिनों बाद ख़ुद को कुर्त्ज़ का चचेरा भाई कहता एक और आदमी आया। वह अपने प्रिय स्वजन के आख़िरी क्षणों के बारे में विस्तार से जानने को बेचैन था। हाँ, उसने मुझे बतलाया कि कुर्त्ज़ बहुत उम्दा संगीतकार था। कोट के गंदे से कॉलर पर छरहरे लहराते सफ़ेद बालों वाले उस आदमी ने, जो मेरे ख़याल से ऑर्गन बजाता था, कहा, 'उसमें बड़ी सफलता की संभावना थी।' उसकी बात पर शक करने की कोई वजह न थी। आज तक मेरे लिए यह कह पाना मुश्किल है कि कुर्त्ज़ का पेशा क्या था, कोई था भी या नहीं—उसका कौन सा गुण सबसे बड़ा था। मैंने समझा था कि वह चितेरा था जो

अख़बारों के लिए लिखता था, या कि वह एक पत्रकार था जो चितेरा भी था—पर वह रिश्तेदार भी (जो बातचीत के दौरान नसवार लेता रहा) ठीक-ठीक नहीं बतला पाया कि वह दरअसल क्या था। वह हर क्षेत्र में मेधावी था—इस बात पर मैं उस बुज़ुर्ग से सहमत था। उसने यह सुनकर एक बड़े सूती रूमाल पर छींका और सठियाई बेचैनी के साथ कुछ मामूली पारिवारिक चिट्ठियाँ और स्मारक साथ लेकर वापस लौट गया। आख़िरकार अपने 'प्रिय सहकर्मी' के बारे में जानकारी लेने एक पत्रकार आ पहुँचा। इस अतिथि ने बतलाया कि कुर्त्ज़ का असली पेशा 'आम लोगों से जुड़ी' राजनीति होना चाहिए था। उसकी भौंहें घनी और सीधी थीं, छोटे कटे हुए घने बाल थे, उसकी ऐनक के काँच चौड़े फीतों में बँधे थे। उसने खुल कर बतलाया कि कुर्त्ज़ से एक अक्षर तक लिखा न जाता था—'पर अरे भाई! बातें करने में वह कमाल का होशियार था! पूरी भीड़ पर वह जादू कर डालता था। उसमें आस्था थी—थी न?—उसमें आस्था थी। वह किसी भी चीज़—किसी भी चीज़ में यक़ीन कर सकता था। वह चरमपंथियों के दल का बढ़िया नेता बन सकता था।'

'कौन सा दल?' मैंने पूछा।

'कोई भी दल,' उसने जवाब दिया।

'वह—वह चरमपंथी था।' क्या मैं इस बात से असहमत था? मैंने सहमति प्रकट की। उसने अचानक उत्सुक होते हुए पूछा कि क्या मुझे मालूम था कि 'कौन सी बात थी जो उसे वहाँ खींच ले गई थी?'

'हाँ,' मैंने कहा और यह कहते कि ठीक लगे तो प्रकाशित करे, मैंने उसे वह प्रसिद्ध रिपोर्ट दे दी। उसने सरसरी निगाह से रिपोर्ट देखी, लगातार बड़बड़ाता रहा, फिर राय दी, 'यह ठीक है' और अपनी इस लूट के साथ चला गया।

इस तरह मेरे पास ख़तों का एक पतला पैकेट और उस लड़की की तस्वीर रह गई। मुझे वह बहुत ख़ूबसूरत लगी। मतलब उसकी अदा बड़ी

ख़ूबसूरत थी। मुझे मालूम है कि सूरज की रोशनी भी दगा दे जाती है, फिर भी लगता यही था कि उसकी शक्ल में जो नाज़ुक पहलू दिखते थे, उसकी सचाई को किसी रोशनी के खेल या भंगिमा से नहीं रचा जा सकता था। लगता था कि बेहिचक, बिना मन में कोई शंका रखे, अपने बारे में कुछ सोचे बिना वह बात सुनने को तैयार थी। मैंने तय किया कि मैं ख़ुद जाकर उसकी तस्वीर और चिट्ठियाँ उसे दे आऊँगा। उत्सुकता? हाँ; और साथ में शायद और कुछ भावनाएँ थीं। जो कुछ भी कुर्त्ज़ का था, वह मेरे हाथों हो कर गुज़रा था—उसकी आत्मा, उसका शरीर, उसका अड्डा, उसकी योजनाएँ, उसके हाथीदाँत, उसकी जीवन-वृत्ति। बस उसकी स्मृति और प्रिय बचे रह गए थे। एक तरह से देखें तो मैं इनको अतीत में खो देना चाहता था। जो कुछ भी उसका बच गया था, उसे मैं निजी रूप से उस अतीत को लौटा देना चाहता था, जो हम सबकी समान नियति के आख़िरी पड़ाव में आता है। अपने बचाव में कुछ न कहूँगा। मुझे साफ़ समझ नहीं थी कि दरअसल मैं क्या चाहता था, शायद यह एक अचेत वफ़ादारी थी, या ईंसान के वजूद में मँडराती विडंबनामयी ज़रूरतों में से किसी एक का पूरी होना रहा हो। मुझे नहीं मालूम। मैं कोई वजह नहीं बता सकता, पर मैं गया।

मेरा ख़याल था कि उसकी स्मृति भी किसी भी इंसान की ज़िंदगी में जमा होती जाती मृतकों की स्मृतियों जैसी ही होगी—दिमाग़ पर आख़िरी तेज़ दौड़ में छायाओं की कोई प्रतिकृति। पर किसी कब्रगाह में साफ़-सुथरी गली जैसी शांत और सजी सड़क की लंबी इमारतों के बीच उस ऊँचे और भारी दरवाज़े के सामने मुझे अचानक एक झलक में वह स्ट्रेचर पर लेटा दिख गया; उसका मुँह भुक्खड़ों जैसा खुला था मानो वह सारी दुनिया और उसके इंसानों को निगल जाना चाहता हो। तो वह मेरे पहले जी चुका था; उसने जीवन भरपूर जीया—वह एक साया था जिसे शानदार शक्लें, भय पैदा करती सचाइयाँ संतुष्ट नहीं कर पाती थीं। वह रात की छाया

से भी अधिक अँधेरा, शानदार वाक्पटुता की तहों में लिपटा साया था। वह झलक मानो मेरे साथ कमरे में घुस रही थी—स्ट्रेचर, भुतहे कहार, आज्ञाकारी भक्तों की जंगली भीड़, जंगलों का अवसाद, शंका पैदा करते घुमावों के बीच के क्षेत्र की झलक, धड़कते दिल जैसी नियमित और दबी-दबी नगाड़ों की ताल—विजयी होते अंधकार का जिगर। बदला लेने को आया आक्रामक उफान, वह जंगल की जीत का पल था। मुझे लगा कि किसी और आत्मा की मुक्ति के लिए मुझे अकेले इसे बचाए रखना होगा। धीरज भरे जंगलों में, जब आग की चमक में सींगवाली आकृतियाँ मेरे पीछे हिलडुल रही थीं, वहाँ मैंने उसे जो कुछ कहते सुना था, वे बातें मुझे याद आ गईं। वे टूटे वाक्य अपनी मनहूस और भयावह सरलता के साथ फिर से वापस सुनाई पड़े। उसके दयनीय आग्रह, उसकी दयनीय धमकियाँ, उसकी बेशुमार घिनौनी चाहतें, उसकी हैवानियत, तड़प, उसकी आत्मा में बवंडर सी उठती बेचैनी, सब मुझे याद आ गया। बाद में मुझे लगा कि मैं उसका संयत दुर्बल हाव भाव देख रहा था, जब एक दिन उसने कहा था, 'यह सारा हाथी दाँत अब सचमुच मेरा है। कंपनी ने इसके लिए पैसे नहीं दिए थे। मैंने अपने ऊपर भयंकर ख़तरे झेलकर यह इकट्ठा किया है। पर मुझे फ़िक्र है कि वे दावा करेंगे कि यह सब उनका है। हँऽऽ। बड़ी मुश्किल बात है। तुम्हारा क्या ख़याल है—मैं क्या करूँ—विरोध करूँ? हाँ? मुझे बस न्याय चाहिए....।' उसे बस न्याय चाहिए था—बस न्याय। मैंने दूसरी मंज़िल पर सागौन की लकड़ी के बने दरवाज़े पर घंटी बजाई और इंतज़ार करते हुए मुझे लगा कि काँच के पलड़ों से वह मुझे देख रहा था—खुली और चौड़ी आँखों से अपने घूरने के अंदाज़ में सारी कायनात को गले लगाता, फटकारता, नफ़रत करता हुआ। मुझे लगा कि मैं उसकी फिसफिसाती चीख़ सुन रहा था, 'दोज़ख़! दोज़ख़!'

शाम हो रही थी। कपड़ों से ढँके चमकते स्तंभों जैसी छत से फ़र्श तक तीन लंबी खिड़कियों वाली बड़ी बैठक में मुझे इंतज़ार करना पड़ा। सामान के ऊपरी हिस्से और उनके टेढ़े सुनहरे पाए, अस्पष्ट वक्र

आकृतियाँ बनाते चमक रहे थे। संगमरमर का लंबा अलाव ठंडक और सफ़ेदी लिए हुए था। एक कोने पर एक बड़ा पिआनो था, उसकी सपाट सतहों पर फीके, पॉलिश किए पत्थर के ताबूत जैसी सियाह चमक थी। एक ऊँचा दरवाज़ा खुला—बंद हुआ। मैं उठ खड़ा हुआ।

पूरी तरह काले कपड़े पहने हुए, फीका माथा, वह सामने आई। शाम के धुँधलके में तैरती-सी वह मेरी ओर आई। वह शोक मना रही थी। उसकी मौत को साल भर के ऊपर हो गया था। इस ख़बर को यहाँ पहुँचे भी साल भर के ऊपर हो गया था। लगता था कि वह हमेशा उसे याद करेगी और शोक मनाएगी। उसने मेरे दोनों हाथ थामे और फुसफुसाते हुए बोली—'आप आने वाले हैं, पता चला था।'

मैंने ग़ौर किया कि वह बहुत युवा, यानी किशोरी जैसी नहीं थी। बेवफाई, आस्था और दुख सहने की परिपक्व क्षमता उसमें होगी। कमरे में अँधेरा बढ़ गया था, मानो बदली छाई इस शाम की उदासी भरी रोशनी ने उसके माथे पर जगह बना ली थी। सुंदर बाल, फीकी शक्ल, नाज़ुक भौंहें, जैसे किसी स्याह प्रभा से घिरी थीं, जिसमें से काली आँखें मेरी ओर देख रही थीं। उस नज़र में कोई छल न था, उसमें गहराई थी, आत्मविश्वास और मेरे प्रति विश्वास था। वह अपना शोकमय मस्तक यूँ उठाकर चल रही थी मानो उसे अपने शोक पर गर्व हो, मानो वह कह बैठेगी, 'मैं—मैं ही अकेली उनके लिए समुचित शोक करना जानती हूँ।'

पर जब हम आपस में हाथ मिला रहे थे, उसके चेहरे पर ऐसा गहरा अवसाद आ बैठा कि मुझे समझ आया कि वह काल के खिलौने जैसी चीज़ नहीं है। उसके लिए कुर्त्ज़ की मौत जैसे अभी कल ही हुई थी। और ख़ुदा का कमाल! उस अंदाज़ का प्रभाव ऐसा था कि मुझे लगने लगा जैसे कि उसकी मौत कल ही हुई थी—नहीं, जैसे अभी-अभी मौत हुई हो। मैं उन दोनों को एक ही पल में देखने लगा—उसकी मौत और उसका शोक—मैं उसके शोक को उसकी मौत के ही पल में देखने

लगा। तुम समझ रहे हो? मैंने उनको इकट्ठे देखा—मैंने उन्हें इकट्ठे सुना। उसने लंबी साँस लेते हुए कहा था, 'मैं ठीक हूँ।' जबकि मेरे तने हुए कान साफ़-साफ़ उस स्त्री की लाचार पीड़ा के साथ मिली उसकी निरंतर फटकार वाली फिसफिसाहट-सी सुन रहे थे। मैं सीने में दहशत लिए ख़ुद से पूछता रहा कि मैं वहाँ पर क्या कर रहा था या मानो मैं किसी क्रूर और अजीब रहस्यों की दुनिया में ग़लती से घुस आया था जो किसी इंसान के देखने लायक़ न थी। उसने मुझे कुर्सी पर बैठने को संकेत किया। हम बैठ गए। मैंने धीरे से वह पैकेट छोटी मेज़ पर रखा और उसने उस पर अपना हाथ रखा, '....आप उन्हें अच्छी तरह जानते थे?' उसने थोड़ी देर के शोकमय सन्नाटे के बाद फिसफिसाते हुए पूछा।

'उस तरह की जगह में आत्मीयता जल्दी पनपती है,' मैंने कहा, 'मैं उन्हें इतना ही जान पाया था जितना एक इंसान के लिए दूसरे को जानना संभव होता है।'

'और आप उनके प्रशंसक थे?' उसने पूछा, 'उनको जानने पर उनकी प्रशंसा न कर पाना असंभव था। ऐसा ही था क्या?'

'वे कमाल के शख़्स थे,' मैंने ज़रा बेचैन होते हुए कहा। फिर मेरे होंठों से आगे और शब्दों का इंतज़ार-सी करती उसकी कुछ माँगती हुई नज़रों के सामने मैं कहता चला, 'यह असंभव था कि न....'

'उनसे प्यार न करें,' जल्दी में मुझे आतंक भरे गूँगेपन में डालकर चुप कराते हुए उसने वाक्य पूरा किया। 'सही है! सही है! पर जब हम यह सोचते हैं कि मुझसे बेहतर उन्हें कोई नहीं जान पाया! वे मुझे हर बात खुल कर बतलाते थे। मैं ही उन्हें सबसे बेहतर जानती थी।'

'आप ही उन्हें सबसे बेहतर जानती थीं,' मैंने दुहराया और शायद वह जानती थी। पर कहे जा रहे हर शब्द के साथ कमरे में अँधेरा बढ़ते जा रहा था और केवल उसका चिकना गोरा माथा आस्था और प्रेम की अनबुझ रोशनी से चमक रहा था।

'आप उनके मित्र थे,' वह कहती चली। 'उनके मित्र,' उसने ज़रा ऊँची आवाज़ में दुहराया। 'अगर उन्होंने आपको यह दिया और मुझ तक भेजा है तो आप निश्चित ही उनके मित्र रहे होंगे। मुझे लगता है कि मैं आपको बतला सकती हूँ—और ओह! मुझे कहना ही होगा। आपने उनके आख़िरी शब्दों को सुना है—मैं चाहती हूँ कि आप जानें कि मैं उनके योग्य रही हूँ.... गर्व से नहीं कह रही.... हाँ! मुझे यह जानकर गर्व है कि मैं उन्हें दुनिया में किसी भी और से बेहतर समझ सकती थी—यह उन्होंने ख़ुद मुझसे कहा था। और जब से उनकी माँ गुज़र गईं—मेरे पास कोई नहीं—कोई नहीं रहा।'

मैं सुनता रहा। अँधेरा गहराता चला। मुझे पक्का पता भी न था कि उसने मुझे सही बंडल दिया भी था या नहीं। मुझे शक है कि उसने अपने काग़ज़ों का एक और बंडल मुझे सँभालने देना चाहा होगा, जिसे मैंने उस मैनेजर को दीये की रोशनी में जाँचते देखा था। मुझसे सहानुभूति पाने में आश्वस्त अपनी पीड़ा को सहलाती वह बोल रही थी; वह ऐसे बोल रही थी जैसे प्यासे मर्द पीते हैं। मैंने सुना था कि कुर्त्ज़ के साथ उसकी सगाई का उसके परिवार वालों ने विरोध किया था। उसके पास धन-दौलत ख़ास नहीं थी। और सचमुच मुझे यह नहीं मालूम कि वह ताज़िंदगी दरिद्र ही रहा हो! उसकी बातों से मुझे यह निष्कर्ष निकालने में मदद मिली थी कि औरों की तुलना में अधिक ग़रीबी ही उसे वहाँ धकेल ले गई थी।

'ऐसा कौन होगा जिसने उनको एकबार बोलते सुना हो और उनका मित्र न बना हो?' वह कह रही थी, 'वो लोगों को उनके सबसे अच्छे गुणों के बल पर अपनी ओर आकर्षित करते थे।'

उसने मेरी ओर तीख़ी नज़रों से देखा। 'यह महान लोगों के गुण हैं।' वह कहती रही। उसकी आवाज़ के साथ लगता था कि मेरी सुनी अकेलेपन और दुख की रहस्य भरी सभी दूसरी आवाज़ें साथ-साथ

आ रही थीं—नदी के लहरों का छलकना, हवा में हिलते पेड़ों की सीटियाँ, जंगली भीड़ों की भिनभिनाहट, दूर से चीख़ती ध्वनियों की अस्पष्ट आवाज़, अनंत अंधकार के परे से आती किसी आवाज़ की फिसफिसाहट्। 'पर आपने उनको सुना है! आप जानते हैं!' वह चीख़ी।

'हाँ, मैं जानता हूँ,' दिल में हताशा जैसी भावना के साथ मैंने कहा। पर उसमें मौजूद आस्था, अँधेरे में अलौकिक आभा के साथ चमकते उसे सुरक्षा देते हुए बड़े छलावे, उस विजयी अंधकार के सामने, जिससे मैं उसे नहीं बचा पाता, जिससे मैं ख़ुद को भी नहीं बचा पा रहा था, मेरा माथा झुका हुआ था।

'मेरे लिए—हम सब के लिए—इतनी बड़ी क्षति!' उसने नफ़ासत भरी करुणा के साथ ख़ुद को संयत रखा। फिर फिसफिसाते हुए कहा, 'सारी दुनिया के लिए।'

गोधूलि की आख़िरी किरणों में मैं उसकी आँखों की चमक देख पा रहा था—वे आँसुओं से भरी थीं—आँसू जो टपक नहीं रहे थे।

'मैं ख़ुशक़िस्मत रही हूँ—बहुत ही ख़ुशक़िस्मत—बहुत गौरवान्वित,' वह कहती रही, 'ज़्यादा ही ख़ुशक़िस्मत। कुछ समय के लिए बड़ी ख़ुशी मुझे मिली थी। और अब मैं दुखी हूँ—ज़िंदगी भर के लिए।'

वह उठ खड़ी हुई। उसके सफ़ेद बालों पर बची हुई रोशनी की सुनहरी चमक पड़ रही थी। मैं भी उठा।

'और इस सब में से,' वह शोक भरी आवाज़ में कहती चली, 'उनके सारे वादे, उनकी समूची महानता, उनका दयालु मन, उनका भव्य हृदय, इन सब का कुछ भी नहीं बचा।—बस स्मृति के सिवाय। आप और मैं—'

'हम हमेशा उन्हें याद करेंगे,' मैंने जल्दी से कहा।

'नहीं', वह चीख़ी, यह असंभव है कि यह सब खो जाए—कि ऐसा जीवन दुख के सिवा कुछ न बचा कर बलि हो जाए। आप जानते हैं कि

उनकी कितनी बड़ी योजनाएँ थीं। मुझे भी उनके बारे में पता था—शायद मैं सब समझ न पाती थी—पर औरों को उनके बारे में पता था। कुछ बचा रहना चाहिए। कम से कम उनके शब्द विलीन नहीं हुए हैं।'

'उनका कहा बचा रहेगा।' मैंने कहा।

'और उनकी मिसाल,' उसने ख़ुद से फिसफिसाकर कहा। 'लोग उनका आदर करते थे—हर काम में उनकी अच्छाई चमकती थी। उनकी मिसाल—'

'सही है,' मैंने कहा। 'उनकी मिसाल भी। हाँ, उनकी मिसाल। मैं भूल गया था।'

'पर मैं नहीं भूलती। मैं नहीं सकती—मैं नहीं मान सकती—अभी तो नहीं। मैं नहीं मान सकती कि मैं उनसे कभी मिल न पाऊँगी, कि उनसे कोई फिर कभी मिल न पाएगा, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।'

उसने खिड़की की सँकरी बुझती हुई चमक को ढँकते हुए बँधे फीके हाथों से काले कपड़े पहने अपनी बाँहें फैलाईं, जैसे कि किसी पीछे की ओर हटती आकृति को थाम रही हो। उससे कभी मिल न पाएँगे! तब मैंने उसे स्पष्ट देखा, जब तक मैं ज़िंदा रहूँगा, उस वाकपटु भूत को हमेशा देखता रहूँगा, और उस त्रासद और पहचानी छाया में उस स्त्री को भी, अपनी इस मुद्रा में किसी और जैसी दिखती, जो ऐसी ही त्रासद थी, जिसने अपनी नंगी बाँहें उस नरकीय धार, अंधकार के प्रवाह की चमक पर, फैलाई थीं। उसने अचानक धीमे स्वर में कहा, 'वह जैसे जीए फिर वैसे ही गुज़र गए।'

'उनके आख़िरी पल,' अपने अंदर छलकते हल्के आक्रोश के साथ मैंने कहा, 'उनके जीवन मूल्यों के अनुकूल थे।'

'और तब मैं उनके पास नहीं थी,' उसने फिसफिसाकर कहा। अनंत करुणा की भावना के आगे मेरा ग़ुस्सा दब गया।

'हर संभव कृत्य—' मैं बड़बड़ाया।

'हाँ, पर उन पर मेरी आस्था धरती पर किसी भी इंसान से ज़्यादा थी—उनकी अपनी माँ से भी अधिक उनके ख़ुद से भी ज़्यादा। उन्हें मेरी ज़रूरत थी। मेरी! मैंने उनकी हर साँस, हर क़दम, हर संकेत, हर नज़र को सँभाला होता।'

मुझे लगा कि मेरे सीने पर बर्फ़-सी जमती जा रही थी। 'ऐसा मत कहिए।' मैंने दबी आवाज़ में कहा।

'माफ कीजिएगा। मैं-मैं—अब तक मैंने चुपचाप शोक मनाया है—चुपचाप.... आप उनके साथ—आख़िरी क्षणों तक थे? मुझे उनके अकेलेपन का ख़याल आता है। उनके पास ऐसा कोई न था जो उनको मेरी तरह समझ पाता, शायद उनकी बात सुनने वाला कोई न था '

'आख़िरी पल तक,' मैंने काँपते हुए कहा, मैंने उनके सबसे आख़िरी शब्द सुने हैं....' मैं डरता हुआ रुक गया।

'बतलाइए कि क्या सुना था,' उसने दिल को चीरती आवाज़ में कहा, 'मैं चाहती हूँ—चाहती हूँ कि मेरे पास जीने के लिए कुछ बचा हो।'

मैं इस हालत में था कि उस पर चीख़ पड़ूँ, 'आपको सुनता नहीं है?' हमारे इर्द-गिर्द शाम उन शब्दों को बेरोक फिसफिसाहट में दुहराते जा रही थी। उफनते हुए तूफ़ान की पहली साँय-साँय जैसी भयंकर फैलती वह सनसनाहट थी। 'दोज़ख़! दोज़ख़!'

'उनका आख़िरी शब्द मुझे बतलाइए—ताकि मैं जी सकूँ,' वह बड़बड़ाई, 'आप समझिए कि मैं उनको प्यार करती थी—मैं उनसे प्यार करती थी, मैं उनसे प्यार करती थी।'

मैंने ख़ुद को सँभाला और धीरे से कहा, 'उनका आख़िरी शब्द—आपका नाम था।'

मुझे हल्की साँस की आवाज़ सुनाई पड़ी, फिर मेरा दिल थम गया। एक भयानक उल्लास भरी चीख़, अकल्पनीय यंत्रणा और विजय की

चीख़ से मेरी धड़कन रुक गई। 'मुझे मालूम था, मुझे पक्का विश्वास था।....'

उसे मालूम था, उसे पक्का विश्वास था। मैंने उसकी सिसकियों की आवाज़ सुनी। उसने अपने हाथों में चेहरा छिपा लिया था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे बच निकलने के पहले वह मकान टूट गिरेगा, आस्मान मेरे सिर पर आ गिरेगा। पर ऐसा कुछ न हुआ। ऐसी तुच्छ बातों के लिए आस्मान नहीं गिरता, मैं सोचता हूँ अगर मैंने कुर्त्ज़ को वह न्याय दिलाया होता जो उसे मिलना चाहिए था, तो क्या आस्मान टूट गिरता? उसने यही कहा था न कि उसे न्याय चाहिए? पर मैं नहीं कर पाया। मैं उसे नहीं बतला पाया। वह बतलाना बहुत ही कलुषित होता—बिल्कुल गंदैला....।'

मार्लो रुका और अस्पष्ट और शांत अलग बैठ गया। उसकी मुद्रा समाधिस्थ बुद्ध की तरह थी। कुछ समय तक कोई न हिला। अचानक डिरेक्टर ने कहा, 'पहला भाटा उतर गया है।'

मैंने अपना सिर उठाया। काले बादलों से भरे साहिल से दृश्य पटल ढँका हुआ था और बदली से ढँके आस्माँ के नीचे धरती के आख़िरी छोरों तक ले जाती मुहाने से बहती शांत धार गंभीर बहती जा रही थी—लग रहा था कि हम अगाध अंधकार के जिगर में खिंचे जा रहे थे।

कलाकार की बात

(अपने उपन्यास 'द निगर ऑफ 'द नारसिसस'' की भूमिका में कोनराड नें यह आलेख लिखा है। साहित्य में कला के बारे में यह महत्त्वपूर्ण टिप्पणी है।)

कला होने की आकांक्षी किसी भी कृति को हर पंक्ति में अपने औचित्य को प्रमाणित करना पड़ता है। स्वयं कला को भी सत्य के, एक हो या अनेक, हर पहलू पर प्रकाश डालते हुए दृश्य-जगत के प्रति पूरी तरह न्याय करने का एकनिष्ठ प्रयास कहकर परिभाषित किया जा सकता है। अपने हर रूप-रंग में, प्रकाश में और छाया में, पदार्थ के पहलुओं और जीवन के तथ्यों में से जो भी बुनियादी है और जो भी सार है, अस्तित्व के ऐसे सत्य को—उस एक प्रकाश स्रोत को और प्रभावी गुण को ही—ढूँढ़ने की कोशिश कला है। इस तरह वैज्ञानिक और चिंतक की तरह कलाकार भी सत्य ढूँढ़ता है और अपनी बात रखता है। दुनिया की रंगतों का अवलोकन कर चिंतक विचारों और वैज्ञानिक तथ्यों में डूब जाते हैं और आख़िर में डूब से निकल कर वे हमें अस्तित्व की उन विशेषताओं के बारे में बतलाते हैं जो हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के क़ाबिल बनाते हैं। वे प्रामाणिकता के साथ हमारी सामान्य चेतना, हमारी बुद्धि, चैन या बेचैनी की चाह, अक्सर हमारे पूर्वग्रहों, कभी-कभार हमारे भय और अक्सर हमारे अहं के साथ और निरंतर हमारी सरलता के साथ संवाद करते हैं। उनकी बातों को हम ध्यान से सुनते हैं क्योंकि वे हमारे मन-मस्तिष्क को परिष्कृत और शरीर को

दुरुस्त रखने, हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति, सटीक उपायों, और अपने बड़े उद्देश्यों की स्तुति जैसे गंभीर मुद्दों पर विचार कर रहे होते हैं।

कलाकार की बात कुछ और है।

उन्हीं पहेलियों का सामना करते हुए एक कलाकार अपने मन के तहख़ानों में उतरता है और अगर उसमें इतनी प्रतिभा हो और उसकी क़िस्मत अच्छी हो तो अपनी बात कहने के गुर तनाव और संघर्ष की उस ज़मीं पर उसे मिल ही जाते हैं। अस्तित्व के जंगी माहौल की वजह से इस्पात के कवच में रखे किसी कमज़ोर ढाँचे की तरह जानबूझकर कठोर और प्रतिरोधक दिखावे के पीछे स्वभाव की जिन कम पहचानी गई दक्षताओं को ओझल रखा जाता है, कलाकार हमारी उन प्रवृत्तियों के साथ संवाद करता है। फिर भी, उसका प्रभाव चिरस्थायी होता है। बाद की पीढ़ियाँ अपनी बदलती जाती समझ से पुराने ख़यालों को छोड़ देती हैं, तथ्यों पर सवाल उठाती हैं, सिद्धांतों को उखाड़ फेंकती हैं। लेकिन, कलाकार हमारे जीवन के उस पहलू से संवाद करता है जो बुद्धि पर निर्भर नहीं करता; जिसे हमने सीखा नहीं, बल्कि तोहफ़े की तरह पाया होता है—और इस वजह से वह अधिक स्थायी और टिकाऊ होता है। हमारी उल्लास और अचंभे की क्षमता, जीवन में चारों ओर रहस्य के आभास, करुणा और सौंदर्य और पीड़ा के हमारे अहसासों, तमाम कायनात से साथ एकात्म होने की निहित अनुभूति, अनगिनत दिलों के अकेलेपन को बाँधने वाली सूक्ष्म पर अटूट एकजुटता, सपनों में, सुख-दुख में, आकांक्षाओं, भ्रम, उम्मीद और डर में लोगों को, सारी मानवता को एक साथ, मृतकों को जीवितों के साथ और जीवितों को अजन्मे प्राणों से बाँधने वाली एकजुटता, के साथ वह संवाद करता है।

सोच या कहिए अहसास की कुछ ऐसी श्रृंखला ही कुछ हद तक इसके बाद आने वाली कथा में सरल, बेआवाज़, बौखलाए लोगों की भीड़ में से कुछ व्यक्तियों के अज्ञात जीवन के बेचैन क्षणों के बखानने

की कोशिश के मक़सद को समझा सकती है। अगर ऊपर कही बातों में ज़रा भी सच हो तो ज़ाहिर है कि धरती पर संपन्न या विपन्न कोई भी ऐसा कोना नहीं जिस पर विस्मय या करुणा की निगाह पड़नी, सरसरी सही, लाज़िम न हो। कृति में शामिल सामग्री का औचित्य इसी प्रेरणा में है; पर यह भूमिका हमारी कोशिश की घोषणा मात्र है और इसका अंत यहाँ नहीं हो सकता, क्योंकि घोषणा अभी पूरी नहीं हुई है।

कथा लेखन को अगर कला होना है तो उसे पाठक के स्वभाव को निवेदित होना होगा। सचमुच यह चित्रकला, संगीत और दीगर सभी कलाओं की तरह एक स्वभाव का उन अनगिनत स्वभावों के साथ संवाद है, जिनकी सूक्ष्म और तरल शक्ति प्रासंगिक घटनाओं को उनके असली अर्थ से सजाती है और देश-काल का नैतिक और भावनात्मक परिवेश बनाती है। अनुभव ऐसे संवाद के प्रभावी होने की शर्त है। सचमुच यह किसी और तरीक़े से हो ही नहीं सकता क्योंकि, चाहे व्यक्ति का हो या समुदाय का, स्वभाव समझाने से नहीं बदलता। इसलिए हर क़िस्म की कला अहसासों के ज़रिए संवाद करती है और लिखने के माध्यम से की गई कलात्मक अभिव्यक्ति को भी अहसासों के ज़रिए ही अपनी पहुँच बनानी होगी, अगर उसका मक़सद यह है कि पढ़कर पाठक के मन में भावनात्मक सोते फूट पड़ें। उसे कलाओं के शिखर—स्थापत्य की नम्यता, चित्रकला के रंग, और संगीत की जादुई पकड़ तक पहुँचना होगा। रूप और कथ्य के सटीक और पूर्ण समन्वय के प्रति अटूट वफ़ादारी, वाक्यों के आकार और गोलाई के प्रति बेहिचक समर्पण के ज़रिए ही आम, पुराने और अरसे से इस्तेमाल होते घिसे-पिटे, लफ़्ज़ों के सतहीपन से हटकर एक गुज़रते एक क्षण में नम्यता, रंग और जादुई खनक तक पहुँचा जा सकता है।

सृजनात्मक कार्य को पूरा करने की ईमानदार कोशिश और इस राह पर चलते रहने की पुरज़ोर लगन के साथ थकान या आलोचना की

परवाह किए बिना संशय-मुक्त होकर होकर लगे रहना ही गद्य लिखने वाले का एकमात्र सही औचित्य है। अगर उसके विवेक में खोट नहीं है, तो तुरत फ़ायदा उठाने में अपनी समझदारी लगाने वालों, उपदेश, आश्वासन और चटोरी बातें सुनना चाहने वालों, झटपट सीखने, उत्साह पाने, या डरने या झटके खाने या मज़ा लेने की माँग करने वालों के लिए उसका जवाब कुछ ऐसा होगा : लिखित शब्द की ताक़त से आप लोगों को कुछ सुनाते और अहसास कराते हुए मैं जिस कोशिश को कामयाब करने में लगा हूँ वह यह है कि सबसे पहले तो आप लोग देख सकें। बस यही मेरा मक़सद है और इससे ज़्यादा और कुछ नहीं है। अगर मुझे सफलता मिलती है तो आपको वहाँ सब कुछ अपनी कामना के अनुसार मिल जाएगाः प्रोत्साहन, आश्वस्ति, भय, मज़ा—जो भी आपकी माँग है—और, शायद ऐसा सत्य भी जिसके बारे में आपने सोचा भी न होगा।

बिना किसी पछतावे के तेज़ी से बीतते जा रहे वक़्त में से, ज़िंदगी के मौजूदा दौर में से, हिम्मत का एक पल छीन लेना इस काम की महज शुरुआत है। नाज़ुक क़दमों से आस्था के साथ इस काम में बिना डर या वैकल्पिक भटकाव के ईमानदारी से जीवन के बचा लिए गए टुकड़े को सबके सामने ला खड़ा करना है। इसके स्पंदन, रंग-रूप को दिखलाना; और उसकी गति, रंग-रूप से उसके सत्य के सार को सामने लाना, उसके प्रेरक रहस्यः हर निश्चित पल के सत्त्व में तनाव और भावनात्मक लगाव को उजागर करना—यही यह काम है। अगर कोई इसके क़ाबिल है और क़िस्मत साथ हो, तो ऐसी एकनिष्ठ कोशिश में कोई ऐसी ईमानदारी की निर्मलता पा भी सकता है कि पेश की गई करुणा, संताप, आतंक या जन्म की छवि देखने वालों के दिलों में अपरिहार्य एकजुटता की भावना, जाग उठे; रहस्यात्मक मूल, मेहनत, उल्लास, उम्मीद, अनिश्चित नियति में उपजी एकजुटता, जो इंसानों को एक-दूसरे से और इंसानियत को दृश्यजगत से जोड़ती है।

ज़ाहिर है कि सही या ग़लत, जो भी ऊपर लिखे विचारों में आस्था रखता है, अपनी कला के किसी भी तरह के सामयिक निरुपण में विश्वास नहीं रख सकता। ऐसे हर सामयिक सूत्र में सत्य अधकचरे ढंग से छिपाया गया होता है। अपने निरूपण में जो स्थायी अंश है, उसका साथ निभाना उसकी मूल्यवान संपदा होगी। लेकन ये सभी—यथार्थवाद, रोमांटिकता, प्रकृतिवाद, यहाँ तक कि अनौपचारिक भाववाद (जो ग़रीबों की तरह मिटाए नहीं मिटता) कुछ समय तक साथ निभाने के बाद इन सभी देवताओं को, मंदिर की चौखट पर खड़े होकर भी, उसके अंतःकरण की हकलाहट और काम की कठिनाइयों की मुखर चेतना के पास छोड़ देना पड़ेगा। उस बेचैन सन्नाटे में कला के लिए कला की तीख़ी चीख़ अपनी ज़ाहिर अनैतिकता की उत्तेजक आवाज़ खो बैठती है। वह दूर की बात लगती है। वह चीख़ नहीं रह जाती और अक्सर समझ न आने वाली महज एक फिसफिसाहट बनकर सुनाई पड़ती है, पर कभी-कभार ही और कमज़ोर से प्रोत्साहन के साथ। कभी कभार, सड़क किनारे किसी पेड़ की छाया में आराम से पसरे हम दूर किसी कामगार की हलचल को देखते हैं, और कुछ समय के बाद और धीरे धीरे सोचने लगते हैं कि आख़िर वह बंदा कर क्या रहा है। हम उसके शरीर की हलचल, उसकी बाँहों का उठना, उसका झुकना, खड़ा होना, हिचकना, फिर से शुरू करना देखते हैं। आराम का वक़्त बिताते हुए उसकी कसरत की जानकारी पाना मज़ेदार हो सकता है। जब हमें यह पता चलता है कि वह कोई पत्थर उठा रहा है, कोई खाई खोद रहा है, कोई ठूँठ उखाड़ रहा है, तो हम अधिक रुचि के साथ उसकी कोशिशें देखते हैं; धरती के विस्तार की प्रशांति में उसके श्रम से आ रहे झटकों को हम स्वीकार करने लगते हैं; यहाँ तक कि भाईचारे की भावना से हम उसकी असफलता को नज़रअंदाज़ भी कर सकते हैं। हम उसके मक़सद को समझ गए, और आख़िर उसने कोशिश की, शायद इतनी ताक़त उसमें नहीं थी या कि उसमें इतनी समझ नहीं थी। हम उसे क्षमा करते अपनी राह चल पड़ते हैं—और भूल जाते हैं।

कला की खोज में लगे आदमी की दुनिया ऐसी ही होती है। कला की उम्र लंबी और इंसान की छोटी होती है। सफलता के लिए दूर तक चलना पड़ता है—और क्योंकि लंबे सफ़र के बारे में शक रहता है, इसलिए हम मक़सद के बारे में कुछ बातें करते हैं—जीवन की तरह ही कला का मक़सद भी प्रेरणादायक, कठिन और तथ्यों की धुंध में छिपा होता है। यह जीत के नतीज़े में नहीं मिलता। क़ुदरत के नियम कहलाए जाने वाले हृदयहीन रहस्यों में यह नहीं मिलता। इसकी महानता कमतर नहीं है, बल्कि यह और ज़्यादा कठिन है।

धरती पर काम के लिए जुटे हाथों को साँस भर के लिए रोकना, दूरगामी उद्देश्यों के मोह में बँधे लोगों को पल भर के लिए चारों ओर फैले रूप-रंग, धूप-छाँव की झलक देखने को मजबूर करना, उन्हें एक नज़र भर उठाने को, लंबी साँस खींचने को, एक मुस्कान के लिए रुकने को मजबूर करना—यही कठिन और क्षणिक मक़सद कला का है और इसे कुछ ही लोग पूरा कर सकते हैं। लेकिन, कभी-कभार प्रतिभाशाली और ख़ुशक़िस्मत लोग ऐसे काम को भी पूरा कर लेते हैं—और जब वह पूरा हो जाता है!—क्या बात! जीवन की सारी सचाइयाँ वहाँ होती हैं : पल भर की झलक, लंबी साँस, मुस्कान—और चिरस्थायी शांति तक वापस पहुँचना।